सम्पादकीय

बराबरी का शुल्क और भारत के पास विकल्प

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने दूसरी बार सत्ता संभालते ही जो सबसे अहम मगर उथल-पुथल मचाने वाली घोषणाएं की हैं, उनमें एक है व्यापारिक साझेदारों पर 'बराबरी का शुल्क'। व्हाइट हाउस से 13 फरवरी 2025 को जारी विज्ञप्ति में व्यापक ब्योरा देते हुए बताया गया है कि अमेरिका पांच कसौटियों का इस्तेमाल कर देखेगा कि उसके व्यापार साझेदार उसके साथ बराबरी का बरताव कर रहे हैं या नहीं। इसमें अमेरिकी उत्पादों पर लगने वाले शुल्क के साथ व्यापार की राह में दूसरी बाधाएं, सब्सिडी और/अथवा कोई उपाय और साझेदार देश में विनिमय दरों, करों अथवा नियामकीय जरूरतों से जुड़ी वे नीतियां शामिल हैं, जो अमेरिकी प्रशासन की नजर में भेदभाव करने वाली हैं या अमेरिकी कंपनियों, कर्मचारियों और/अथवा उपभोक्ताओं को बाजार में बिल्कुल नहीं आने देतीं या कम आने देती हैं। अमेरिका अपने हरेक व्यापार साझेदार के साथ लगभग 13,000 वस्तुओं का व्यापार करता है और इनमें से हर किसी को ऊपर बताई गई कसौटियों पर कसना लगभग असंभव लगता है। इसलिए इस बात की अटकलें जमकर लगाई जा रही हैं कि शुल्क का मूल्यांकन किसी खास उत्पाद के लिए होगा या समूचे उद्योग अथवा क्षेत्र का औसत शुल्क देखा जाएगा। सवाल यह भी है कि अमेरिका एकतरफा कार्रवाई करेगा या वह भी परिधान और वस्त्र जैसे उन क्षेत्रों अथवा उद्योगों में शुल्क घटाएगा, जिनमें वह दूसरों से ज्यादा शुल्क लगाता है। चूंकि अभी तक इन सवालों और इनसे जुड़े दूसरे कई सवालों का कोई जवाब नहीं आया है, इसलिए अभी इंतजार करके यह देखना शायद सबसे सही होगा कि अप्रैल और उसके बाद बराबरी का शुल्क किस तरह लगाया जाता है। हां, इस बीच व्यापार के दूसरे विकल्पों पर विचार किया जा सकता है। फिर भारत के पास विकल्प क्या हैं? भारत ने अभी तक एहतियातन पहले ही कदम उठाने का तरीका अपनाया है। यह मेक्सिको या कनाडा के रुख से उलट है। दोनों देशों ने उत्पादों पर 25 फीसदी शुल्क लगाने के बाद वादा किया कि अमेरिका में अवैध घुसपैठ और फेंटानाइल ओपिआइड की तस्करी पर रोक लगाने के लिए वे अपनी-अपनी सीमाओं पर सुरक्षा बढ़ाएंगे। एक तरह से यह सीमा सुरक्षा बढ़ाने की उनकी नीतियों का विस्तार ही था। उनसे उलट भारत ने अमेरिकी आयात पर लगाए जा रहे शुल्क की ट्रंप द्वारा की गई आलोचना का जवाब दिया है।

फरवरी 2025 में पेश बजट में 1,600 सीसी इंजन वाली मोटरसाइकल समेत कुछ उत्पाद श्रेणियों पर शुल्क कम कर दिए गए। इसके कुछ दिन बाद ही वर्बेन व्हिस्की पर आयात शुल्क घटा दिया गया, जो जाहिर तौर पर अमेरिका को खुश करने के लिए किया गया। इसके बाद भी ट्रंप भारत की शुल्क दरों पर टिप्पणियां करते रहे और बराबरी के शुल्क के मामले में भारत के साथ किसी तरह की रियायत बरतने का संकेत भी उन्होंने नहीं दिया। ध्यान रहे कि भारत उन शीर्ष 15 व्यापार साझेदारों में है, जिनके साथ अमेरिका निर्यात से ज्यादा आयात करता है यानी व्यापार घाटे में है।

भारत अभी अमेरिका के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते की तैयारी कर रहा है मगर ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में अमेरिकी व्यापार नीति की चुनौतियों से निपटने के लिए शायद इतना काफी नहीं होगा। मेक्सिको और कनाडा पर शुल्क लगाकर ट्रंप ने साबित कर दिया है कि वह अपने पहले कार्यकाल में हुए अमेरिका-मेक्सिको-कनाडा समझौते को तक पर रखने के लिए तैयार हैं। ऐसे में भारत को अपने निर्यात बाजारों तथा उत्पादों में विविधता लाकर व्यापार के अवसर लपकने होंगे। वह दूसरे देशों द्वारा हाल में उठाए गए व्यापारिक कदमों से सबक ले सकता है। उदाहरण के लिए व्यापार में विविधता लाने की नीति के तहत कुछ देशों ने मुक्त व्यापार समझौतों के लिए अपनी बातचीत तेज कर दी है। मेक्सिको और यूरोपीय संघ ने हाल ही में अपने पिछले व्यापार समझौते को बेहतर बनाया है।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आज कई विशिष्ट लाभदायी योग बन रहे हैं। आज आप पर लक्ष्मीजी की कृपा बनी रहेगी। आज आप पर ईश्वर की कृपा बनी रहेगी। आज आप किसी बुजुर्ग व्यक्ति और दुःखी व्यक्ति, अथवा किसी बच्चे से व्यवहार करना पड़ेगा। यह आप किसी बच्चे के साथ भी और अधिक खुशी की खुशखबरी प्राप्त व्यवसायवाले उन्नति की सम्भावना करेंगे, अधिक परिश्रमशील व्यक्ति भी हैं, जब यह व्यवसायवाले हमें व्यापार और बाजारों में लाभ प्राप्त करेंगे।

मेष
आज आपके धार्मिक एवं मांगलिक कामों में व्यस्त रहने की संभावना ज्यादा रहेगी। आप में आज झूठ की मात्रा अधिक रहेगी, इसलिए आप सावधान ही रहें। संतान एवं व्यापार की परेशानियों के कारण आपका मन अशांत रहेगा।

वृष
आपका शारीरिक एवं मानसिक आरोग्य अच्छा रहेगा। जरूरी कामों पर धन खर्च होगा। बीमार व्यक्तियों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। दफ्तर में सहकर्मियों का अच्छा साथ मिलेगा। मित्रों से मुलाकात होगी।

मिथुन
संतान पक्ष से अच्छे समाचार मिलेंगे। नौकरीपेशा लोगों से आपको लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। वैवाहिक सुख की अनुभूति होगी। आज का दिन आपके लिए अनुकूल है। आप आज हर काम सरलता से पूरे कर पाएंगे।

कर्क
नौकरी में आपके अधिकारी खुश रहेंगे। आपकी पदोन्नति के योग हैं। अधिकारियों के साथ किसी महत्वपूर्ण बात पर चर्चा होगा। परिजनों के साथ खुले मन से बातचीत होगी। घर के डेकोरेशन पर कुछ खर्च हो सकता है। धन लाभ होगा और अधूरे काम पूरे हो सकते हैं।

सिंह
माता से लाभ होने के संकेत आपको मिल रहे हैं। मित्र और संबंधियों से घर का वातावरण अच्छा रहेगा। आज अचानक होने वाली घटनाओं से आप चिंतित रहेंगे। स्वास्थ्य खराब होने और आंखों में दर्द होने की आशंका बनी रहेगी।

कन्या
मित्र एवं प्रियजन आपके प्रवास को आनंद से भर देंगे। नए वस्त्रों की खरीदी के योग हैं। तन-मन की तंदुरस्ती अच्छी रहेगी। अच्छे भोजन एवं वैवाहिक सुख की अनुभूति होगी। आज आप के घर में सुख शांति और आनंद का माहौल रहेगा।

तुला
अविवाहितों को योग्य जीवनसाथी मिलने के योग हैं। धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे। मित्रों से अचानक हुई मुलाकात आनंददायी रहेगी। मित्रों से लाभ होगा। आज आपको अच्छा खाना नसीब होगा। मित्रों से लाभ होगा।

वृश्चिक
हेल्थ का ध्यान रखने और खासकर बाहर के खाने-पीने से परहेज करने की सलाह आपको दी जाती है। आज आपमें क्रोध की मात्रा अधिक रहेगी, इसलिए वाणी में गुस्सा ना रहें। परिजनों से उग्र चर्चा के कारण मनमुटाव न हो।

धनु
पानी वाली जगहों से दूर रहें। आज धन का व्यय अधिक होगा। आज नियम विरुद्ध कामों से दूर रहें। आज आपका दिन आनंद-प्रमोद में गुजरेगा। रोमांस के लिए आज का दिन अच्छा है और किसी खास व्यक्ति का साथ आपको आनंद देगा।

मकर
आप तन-मन से स्वस्थ होकर कई तरह के काम आसानी से पूरे कर पाएंगे। सफलता मिलने से आपके उत्साह में वृद्धि होगी। आज भाग्य आपका साथ देगा। इनकम बढ़ेगी। परिजनों के साथ आनंद एवं उल्लास से समय गुजरेगा।

कुंभ
बाहर जाना हो सकता है। माता के साथ संबंध अच्छे रहेंगे। सरकारी लाभ होगा एवं स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आज आप का दिन मध्यम फलदायी रहेगा। पहले से निर्धारित काम के लिए आपका प्रयास ज्यादा रहेगा।

मीन
स्वजनों एवं परिजनों के साथ विवाद हो सकता है। आज कोई नया काम शुरू ना करें। आप की अपेक्षा खर्च अधिक होगा और ज्यादा परिश्रम के बाद ही सफलता मिलेगी। आज आपका दिन बहुत लाभदायी है। महिलाओं के मायके से समाचार आने के योग हैं।

आज का इतिहास | बढ़ता राजस्थान

5 मार्च की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- नासिर खुसरो ने 1046 में अपने 6 साल लंबे मध्यपूर्व सफ़र का आरंभ किया जिसके उपरांत उन्होंने आज भी फ़ारसी भाषा की श्रेष्ठतम कृतियों में गिनी जाने वाली सफ़रनामा लिखी।
- महाराजा जय सिंह ने 1699 में अंबर का सिंहासन संभाला।
- ऑस्ट्रिया के सैनिकों ने 1793 में फ्रांस को हरा कर उसके साम्राज्य पर फिर से कब्जा किया।
- भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण की 1851 में स्थापना।
- निकोला टेस्ला ने 1904 में बॉल तड़ित की व्याख्या की।
- सोवियत संघ ने 1918 में पेट्रोग्राड को हटाकर मॉस्को को रूस की राजधानी बनाया।
- महात्मा गांधी ने 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन खत्म किया।
- भारत में झारखंड पार्टी की 1949 में स्थापना हुई।
- कनाडा में 1962 में आयकर नियमों में बदलाव किया गया।
- मार्टिन लूथर किंग की 1968 में हत्या।
- 1974 में हुए योम किप्पुर युद्ध में इसरायल स्वेज नहर की पश्चिमी सीमा से पीछे हटा।
- वेनेरा 14 नामक रूसी उपग्रह 1982 में बुध की कक्षा में पहुँचा।
- सन 1990 में सरकार ने 1984 के भोपाल गैस त्रासदी के पांच लाख पीड़ितों के लिए 360 करोड़ रुपए की अंतरिम राहत की घोषणा की।
- उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया के बीच 1997 में 25 साल में पहली बार शांति वार्ता हुई।
- अभिनेता संजय दत्त के पिता और फिल्म अभिनेता सुनील दत्त ने 1999 में कोलंबो से 17 सदस्यीय दल के साथ लिष्टन एशिया की 13 हजार किलोमीटर लम्बी सद्भावना यात्रा आरम्भ की।
- मक्का मदीना में 2001 में हुए ईद के दौरान भगदड़ में लगभग 40 यात्री मरे।
- सन 2002 में राष्ट्रमंडल शिखर सम्मेलन सम्पन्न।
- भारत ने समुद्र से जमीन पर हमला करने वाले 'ब्रह्मोस' मिसाइल का 2008 में सफल परीक्षण किया।
- इफको ('इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर को-ऑपरेटिव लिमिटेड) 2009 में एक करोड़ टन उर्वरक की वार्षिक बिक्री करने वाली विश्व की पहली कम्पनी बनी।

5 मार्च को जन्मे व्यक्ति

- भगत सिंह की क्रांतिकारी गतिविधियों में सहयोग करने वाली स्वतंत्रता सेनानी सुशीला दीदी का 1905 में पंजाब में जन्म।
- 'भारतीय शास्त्रीय संगीत' की प्रसिद्ध गायिका गंगूबाई हंगल का 1913 में जन्म।
- ओडिशा के प्रसिद्ध नेता और पूर्व मुख्यमंत्री बीजू पटनायक का 1916 में जन्म हुआ।
- पसोलीनी, इतालवी फिल्म निर्देशक पियर पयोलो का 1922 में जन्म हुआ।

निरस्त्रीकरण आज विश्व की आवश्यकता है

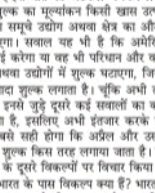

सुनील कुमार महला

फ्रांस, चीन और जर्मनी,इटली, यूनाइटेड किंगडम, स्पेन, दक्षिण कोरिया, इजरायल भी शीर्ष हथियार निर्यातक देशों में शामिल हैं। वास्तव में,वैश्विक हथियार व्यापार एक बहुत बड़ा उद्योग है, जो सदियों-सदियों से अस्तित्व में है। कहना ग़लत नहीं होगा कि हर साल दुनिया में अरबों डॉलर के हथियारों की खरीद-फरोख्त की जाती है। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2021 में दुनिया भर में हथियारों का व्यापार 127 बिलियन डॉलर था।आज स्थिति यह है कि दुनिया के विभिन्न हथियार निर्यातक देश हर साल हथियार बेचकर अरबों-खरबों रुपये कमाते हैं।

हर वष 5 माच का 'अतराष्ट्राय निरस्त्रीकरण और अप्रसार जागरूकता दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि यह दिवस विशेष रूप से युवाओं में निरस्त्रीकरण के मुद्दों के बारे में जागरूकता और समझ को बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है। गौरतलब है कि इस दिवस की शुरुआत शांति और सुरक्षा के लिए निरस्त्रीकरण और अप्रसार के महत्व को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2021 में संयुक्त राष्ट्र महासभा(यूएनजीए) द्वारा इसकी स्थापना की गई थी। यदि हम यहां इसके इतिहास की बात करें तो इस संदर्भ में 7 दिसंबर 2022 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक प्रस्ताव अपनाया और प्रति वर्ष 5 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण और अप्रसार जागरूकता दिवस के रूप में घोषित किया। गौरतलब है कि 5 मार्च 2023 को अंतर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण और अप्रसार जागरूकता दिवस का पहला आयोजन किया गया। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि प्रति वर्ष 24 से 30 अक्टूबर तक 'संयुक्त राष्ट्र निरस्त्रीकरण सप्ताह' मनाया जाता है। कहना चाहूंगा कि इस सप्ताह का आयोजन निरस्त्रीकरण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए किया जाता है।इसी तरह से, परमाणु हथियारों के पूर्ण उन्मूलन के लिए अंतरराष्ट्रीय दिवस 26 सितंबर को मनाया जाता है।सच तो यह है कि आज पूरा विश्व बारूद के ढ़ेर पर खड़ा हुआ है। संपूर्ण विश्व में हथियारों की होड़ लगी हुई है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि आज विश्व में अमेरिका सबसे बड़ा हथियार निर्यातक देश है, जबकि रूस दूसरे स्थान पर है। स्वीडिश थिंक टैंक स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के अनुसार, वर्ष 2019-23 की अवधि के लिए भारत दुनिया का शीर्ष हथियार आयातक था, जिसमें वर्ष 2014-18 की अवधि की तुलना में आयात में 4.7त्न की वृद्धि हुई थी। वहीं, यूक्रेन में युद्ध की पृष्ठभूमि में, रिपोर्ट में यह बात कही गई है कि वर्ष 2014-18 और वर्ष 2019-23 के बीच यूरोपीय देशों द्वारा हथियारों के आयात में 94% की वृद्धि हुई है। आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2019-23 में 10 सबसे बड़े हथियार आयातकों में से नौ, जिनमें भारत, सऊदी अरब और कतर के शीर्ष 3 शामिल हैं, एशिया और ओशिनिया या मध्य पूर्व में थे। वर्ष 2022-23 में 30 से अधिक देशों से प्रमुख हथियारों का हस्तांतरण प्राप्त करने के बाद यूक्रेन वैश्विक स्तर पर चौथा सबसे बड़ा हथियार आयातक बन गया। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि यूरोप के राज्यों ने वर्ष 2014-18 और वर्ष 2019-23 के बीच प्रमुख हथियारों के अपने आयात को लगभग दोगुना (+94 प्रतिशत) कर दिया। वर्ष 2019-23 में एशिया, ओशिनिया और मध्य पूर्व में हथियारों की कहीं बड़ी मात्रा प्रवाहित हुई, जहां 10 सबसे बड़े हथियार आयातकों में से नौ हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका ने वर्ष 2014-18 और वर्ष 2019-23 के बीच अपने हथियारों के निर्यात में 17 प्रतिशत की वृद्धि की, जबकि रूस के हथियारों का निर्यात आधा हो गया। रूस पहली बार तीसरा सबसे बड़ा हथियार निर्यातक था, जो फ्रांस से तीक पीछे था। बहरहाल,कहना चाहूंगा कि आज अमरीका, रूस और चीन जैसी बड़ी ताक़तों की आपसी होड़ बढ़ने के कारण हथियारों के वैश्विक कारोबार में लगातार बढ़ोतरी हुई है।हैरानी की बात तो यह है कि आज पूरे विश्व में हथियारों का कारोबार तेज़ी से फल-फूल रहा है। हर साल हथियारों का कई बिलियन डॉलर का अंतरराष्ट्रीय कारोबार होता है। आंकड़े बताते हैं कि आज भारत दुनिया के हथियार बेचने वाले 25 बड़े देशों में की सूची में शामिल है।भारत 2015 से 2019 की अवधि तक दूसरा सबसे ज्यादा हथियार खरीदने वाला देश रहा। गौरतलब है कि वित्त वर्ष 2023-24 देश में 1.27 लाख करोड़ रुपये के हथियारों का निर्माण हुआ यानी रक्षा उत्पादन किया गया। यह उत्पादन वर्ष 2014-15 की तुलना में 2.7 गुना ज्यादा है। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार केंद्र सरकार 2029 तक रक्षा निर्यात को 50,000 करोड़ रुपये तक बढ़ाने के लक्ष्य पर काम कर रही है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं कि हथियारों की होड़ के कारण आज दुनिया विनाश के मुहाने पर खड़ी हुई है। यदि हम यहां रूस-यूक्रेन युद्ध की ही बात करें तो तीन साल की जंग में यूक्रेन 18 प्रतिशत तक सिकुड़ गया है। दोनों देशों (रूस-यूक्रेन) के बीच विध्वंस, तबाही और बर्बादी में हजारों लाखों लोग मारे जा चुके हैं। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार रूस-यूक्रेन युद्ध से अब तक 1-1.5 खरब डॉलर (लगभग 80-125 लाख करोड़ रुपये) का नुकसान हो चुका है, जो कि बहुत बड़ी क्षति है। युद्ध के कारण कोई भी देश बहुत पीछे चला जाता है और उससे उबरना बहुत ही मुश्किल होता है। युद्ध के कारण आर्थिक व जान-माल को तो नुकसान पहुंचता ही है पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र भी व्यापक असर पड़ता है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि इजरायल में युद्ध ने 67.57 अरब डॉलर का नुकसान पहुंचाया है, जहां स्वास्थ्य और शिक्षा का बजट जंग में खर्च हुआ। वहीं, गाजा और वेस्ट बैंक में 50 अरब डॉलर का निवेश बर्बाद हुआ, बेरोजगारी दर 80त्न तक पहुंच गई और 61त्न लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहे हैं। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि ?निरस्त्रीकरण का मतलब है-% हथियारों को कम करना, सीमित करना या खत्म करना।% वास्तव में, यह आम तौर पर किसी देश के सैन्य या किसी खास तरह के हथियारों को संदर्भित करता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि निरस्त्रीकरण के ज़रिए, हथियारों की होड़ को रोका जा सकता है।

आने वाले कल के लिए जल के लिए भी सोचें

संजीव ठाकुर

यदि मानव सभ्यता के इतिहास को खंगाले तो यह तथ्य सामने आता है कि बड़ी-बड़ी सभ्यता एवं संस्कृतियाँ नदी, घाटियों में विकसित और फलित हुई है। जल अपने स्वरूप में निर्मलित धारण किए हुए पवित्रता का प्रतीक है, लेकिन इसकी प्रत्येक रूप से घटती मात्रा में जल संकट अस्तित्व को खतरा उत्पन्न कर दिया है। जल अब सभ्यतों तथा विभिन्न देशों के मध्य बड़े विवाद का कारण बनता जा रहा है। जल मनुष्य के जीवन का अत्यंत आवश्यक स्वरूप है जल के बिना कल नहीं है और जल ही जीवन कहलाता है। ऐसे में जल का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

जल की एक-एक बूंद का संरक्षण मानवीय जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी है। जल की एक-एक बूंद जीवन के लिए बेशकीमती और बहु उपयोगी है। जल की बर्बादी भविष्य के बहुत बड़े खतरे को इंगित करती है, यदि पृथ्वी पर जल नहीं होगा तो जीवन की संभावनाएं भी विलुप्त हो जाएंगीं। सामान्य तौर पर देखेंगे तो जल की उपलब्धता को लेकर कोई विशेष संकट नजर नहीं आता है। किंतु वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग हैद्यपृथ्वी की सतह का लगभग 70% भाग जल से आच्छादित हैपृथ्वी पर उपलब्ध समस्त जल का 97% समुद्र खारा पानी है, जो उपयोग के योग्य नहीं है शअतः मात्र 3% जल ही पीने के योग्य है, इससे भी कम जल नदी, तालाब, झीलों भूगर्भीय जल के रूप में मनुष्य व अन्य जीवों के पीने के योग्य मीठे पानी के रूप में उपलब्ध है, परिणामतः पीने योग्य जल का संकट और गहराता जा रहा है। जल का विवाद सिर्फ गांव तहसील के जिलों में नहीं बल्कि राज्य और देशों के बीच भी गहराता जा रहा है। इसका बहुत बड़ा उदाहरण कावेरी, मांडवी जैसे अंतरराष्ट्रीय नदियों गंगा, ब्रह्मपुत्र में नील, सतलज जैसी अंतरराष्ट्रीय नदियां हैं। वैश्विक जल संकट से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्र एशिया, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप, अफ्रीकी देशों में एक बड़ी आबादी जल भाव के कारण काल कब रीत हो रही है। जल संकट की यह समस्या और अंतरराष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुकी है एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इसकी मांग उठाई जा रही है। पृथ्वी पर पीने की योग्य जल की उपलब्धता घटती जा रही है वहीं विकास एवं औद्योगिकरण की प्रक्रिया में जल का अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है। मानव के जल दोहन का बेतरतीब उपयोग जल चक्र के संतुलन को नष्ट कर रहा है। प्रकृति में मानव के हस्तक्षेप के कारण ही ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई से ताजे जल के संकट को कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। शहरों में प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता का स्तर निरंतर कम होते जा रहा है। इसका सबसे सर्वोत्तम उदाहरण दक्षिण अफ्रीकी शहर कैपटाउन एवं भारत के बंगलुरु शहरों में असीमित जनसंख्या के दबाव में लहराते जल संकट के कारण इन शहरों में यानी नो वाटर सप्लाई दिवस तक की नौबत आ गई है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रकाशित जल विकास रिपोर्ट 2018 में पीने योग्य जल की घटती उपलब्धता एवं गहराता संकट को लेकर महासुद्ध की संभावनाओं का खुलासा किया है। जल संकट को लेकर अगले महा युद्ध की संभावनाओं को यदि टटोलने तो यह बात सत्य प्रतीत होती है जिसमें एक तरफ जलभाव वाले देश का होंगें तथा दूसरा पक्ष जलाभिक्ष्य वाले देशों की होगी। जल के निरंतर गिरते स्तर को लेकर ऐसी विकराल स्थितियां उत्पन्न हो सकती है जिसके कारण मानवता तार-तार हो जाएगी और जल का उपयोग करने वाले जैविक जीवन का स्थिति समाप्त हो जाएगा। अतः यह उचित होगा कि समय रहते हम इस संकट को भाप लें एवं जल जैसे हम उन संसाधन के संरक्षण को लेकर युद्ध स्तर पर उचित कदम उठाएं। यूनाइटेड नेशंस वाटर अभियान के माध्यम से जल संकट से विश्व को अवगत करवाते हुए जल संकट के संबंध में आमजन को जागरूक करने का प्रयास कर रहा है।

शरिस्यात | बढ़ता राजस्थान

दुर्गेश शर्मा
(टैंकर ठेकेदार)

नमस्कार साथियों हमारी शख्सियत कॉलम के स्टार हैं एक ऐसे युवा जिन्होंने गत वर्ष गर्मियों में लोगों की प्यास बुझाई। हालांकि इन्हें जलदाय विभाग व प्रशासन द्वारा ठेका दिया गया था लेकिन यहां कहना चाहूंगा कि देर रात तक जाग कर जनता को पानी उपलब्ध कराया जो किसी भी सूरत में एक समाजसेवा से कम नहीं। गत कई वर्षों से शहर अलवर की तपती झुलसती गर्मियों में प्यास बुझाने में लगा युवा ठेकेदार दुर्गेश कुमार शर्मा, जलदाय विभाग खंड प्रथम अलवर में आने वाले 1 से 14, व 58 से 65 वार्डों में ठेकेदार दुर्गेश शर्मा द्वारा टैंकरों से समस्या ग्रस्त क्षेत्रों में बड़ी ही आसान व सरल स्वभाव से जनता तक पानी पहुंचाया। सभी वार्ड पार्षदों द्वारा दुर्गेश के कार्य को देखते हुए संतुष्टि रही। कई मौको पर जहां लगता है कि पानी भरने को लेकर आमजन में झगड़े की संभावना हो सकती थी वहां दुर्गेश खुद मौके पर पहुंच कर जन समझाइश कर खुद खड़े होकर जल वितरण करवाते हैं। लोकसभा आमचुनाव में भी दुर्गेश के द्वारा पानी की अच्छी व्यवस्था रखी गई। कभी कोई आमजन व पार्षदों से शिकायत नही मिली, संबंधित कार्य क्षेत्र में भीषण गर्मी में कभी जाम जैसी स्थिति पैदा नही हुई। 2024 में शहर में नौताप व भीषण गर्मी में चलते पानी की अत्यधिक समस्या रही, जिस गर्मी में लोग एसी कूलर की ठंडक में बैठकर अपने शरीर को आराम देते है वहीं दुर्गेश के द्वारा भीषण गर्मी में भी पानी की व्यवस्था बढिया रखी गई। सुबह 4 बजे से रात्रि 2 बजे तक सड़कों व मोहल्लों में टैंकर दौड़ते व जनता को पानी भरवाते दिखाई देते थे। 2024 में गमद धीमक से हुए झगड़े में एक दिन हड़ताल रहीए विभाग के बड़े अधिकारी व पार्षदों व पत्रकार व प्रशासन अलवर के द्वारा जन हित में समझाइश से झगड़े को भूल दुबारा जल आपूर्ति का कार्य स्टार्ट किया, ठेकेदार दुर्गेश द्वारा बताया गया कि 2024 जैसी गर्मी व जल संकट पहले कभी नही देखा इस जल संकट में अधिकारी प्रतीक जुईकर जी जोकि तत्कालीन एसडीएम रहे। कुछ पार्षदों ने हमारे साथ कंधे से कंधा मिलकर काम किया जिनमें सुनील चौधरी, मुकेश सारवान के भाई जितेंद्र सारवान, नारायण साईवाल, धनश्याम सोनी, ज्योति जाटव पति अमरसिंह, अजय मेठी, लव कुमार समाजसेवक,महेश नायक, जीतू सैनी, दुर्गा सिंह, सोनू चौधरी, अशोक पठक व सभी शहर के सभी पत्रकारों ने सहयोग किया। दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम इनके उजवल भविष्य की कामना करती है।

2025_062 | बढ़ता राजस्थान

Sudukо

8	1	3	9	5	4	6		2
7				2	1			5
				7	8			
			7			5	4	6
	3	6	1	8	5	7	2	
			2	4		1		8
	9	5				8	6	7
6		8			3			4
			8			9	5	

Ans_2025_061

5	1	8	6	4	2	7	9	3
3	9	4	5	8	7	2	1	6
2	7	6	1	3	9	4	5	8
7	2	5	9	6	4	3	8	1
9	6	3	8	7	1	5	4	2
4	8	1	3	2	5	9	6	7
8	3	2	4	5	6	1	7	9
1	5	7	2	9	8	6	3	4
6	4	9	7	1	3	8	2	5

कैसे खेलें

वर्ग को 1 से 9 तक अंकों से ऐसे भरें कि आड़ी व खड़ी पंक्ति के साथ ही 3 गुणा 3 के बॉक्स में 1 से 9 तक अंक आएं। कोई अंक दुबारा नहीं आए।

स्वामी/प्रकाशक, मुद्रक व प्रकाशक श्रीपती कामरोल विजयमोहन द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,हथीपाला रोड खरगवाश,गिलाई टोंक (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतिक्षा" संस्कृत-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-तरुना पाठक*। प्रधान संपादक-राम विलास विजयमोहन मो.नं. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन नं.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास गिलाई, टोंक मो.नं.9414823448 अलवर कार्यालय-नेहताब सिंह का नोहरा,अलवर मो.नं. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.नं.7023350734 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

कल्पमेधा

सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि तुम्हें याद नहीं रखना पड़ता कि तुमने किससे, कब, कहां, क्या कहा था।

- राबर्ट बेन्र्स

अभिव्यक्ति पर पहरा

सर्वोच्च न्यायालय की यह टिप्पणी निस्संदेह बहुत गंभीर है कि संविधान को लागू हुए पचहत्तर वर्ष हो गए, अब तो कम से कम पुलिस को अभिव्यक्ति की आजादी का अर्थ समझना चाहिए। हालांकि यह टिप्पणी कोई पहली बार नहीं आई है। इससे पहले भी कई मौकों पर वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर बहसें हो चुकी हैं, अदालतें पुलिस को नसीहत दे चुकी हैं, मगर शायद उस पर संजीदगी से अमल की जरूरत नहीं समझी गई। इसी का नतीजा है कि अब भी जब तब ऐसे मामले अदालतों में पहुंच जाते हैं, जिनसे किसी की भावना के आहत होने का आरोप लगता है, जबकि वास्तव में उनमें ऐसा कुछ नहीं होता। चाहे वह फिल्मों के दृश्यों-संवादों, किसी राजनेता के बयानों या साहित्य के किसी अंश को लेकर भावनाएं आहत करने या भड़काने के आरोप लगते रहे हों या किसी ऐतिहासिक-मिथकीय प्रसंग को लेकर की गई टिप्पणी पर। कई बार तो कुछ बातों को लेकर आंदोलन तक उभारने की कोशिशें देखी गई हैं। ताजा मामला कांग्रेस नेता इमरान प्रतापगढ़ी की एक कविता को लेकर उठा, जब उन्होंने गुजरात के एक विवाह समारोह में उसे सुनाया और फिर सोशल मीडिया पर उसका अंश डाल दिया। उन पर आरोप लगा कि कविता में लोगों में हिंसा भड़काने का प्रयास किया गया है। वहां की पुलिस ने इस पर मुकदमा भी दर्ज कर लिया।

साहित्य और कलाओं में अभिव्यक्त विचार कई बार प्रतीकों और बिंबों में छिपे होते हैं, इसलिए उनके सही अर्थ खोलने में दिक्कत आ सकती है। प्रतापगढ़ी के मामले में गुजरात पुलिस को भी इसी के चलते धोखा हुआ होगा। सर्वोच्च न्यायालय ने इसे स्पष्ट भी किया कि अनुवाद में गलती की वजह से यह भ्रम हुआ होगा। मगर आजकल जिस तरह चुनिंदा तरीके से किसी के बयानों से भावनाओं के आहत होने के आरोप कुछ अधिक लगने लगे हैं और उनमें से कई मामलों में कानूनी कार्रवाई भी कर दी जाती है, उससे संविधान में वर्णित अभिव्यक्ति की आजादी का संकल्प ही धुंधला पड़ता नजर आने लगता है। जबकि कई बार स्थितियां इसके उलट भी देखी जाती हैं, मगर उन पर कोई कार्रवाई नहीं होती। जबसे सोशल मीडिया का चलन बढ़ा है, देशभक्ति, धर्म और आस्था के नाम पर कुछ लोग कुछ भी कहते-बोलते देखे जाने लगे हैं। धर्म संसदों और कई सार्वजनिक सभाओं में संतों और राजनेताओं के आपत्तिजनक बयान देखे-सुने गए, मगर उनमें पुलिस का रवैया पक्षपातपूर्ण ही देखा गया। इसलिए सर्वोच्च न्यायालय की यह टिप्पणी महत्त्वपूर्ण है कि प्राथमिकी दर्ज करने से पहले पुलिस को कुछ तो संवेदनशीलता दिखानी होगी।

हालांकि यह छिपी बात नहीं है कि पुलिस स्वायत्त तरीके से काम नहीं करती। अनेक कार्रवाइयां उसे सत्ता पक्ष के दबाव में करनी पड़ती हैं। इसलिए विपक्षी दलों के मामले में अगर अभिव्यक्ति की आजादी के कानून को हाशिये पर धकेल दिया या नजरअंदाज कर दिया जाता है, तो हैरानी की बात नहीं। यह कम बड़ी विडंबना नहीं कि साहित्य और कलाओं में अभिव्यक्त विचारों की व्याख्या भी अदालतों को करनी पड़ रही है। सत्ताएं सदा से अपनी आलोचना से तल्ख हो जाती रही हैं, पर आखिर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा कौन करेगा। पहला कर्तव्य तो पुलिस का ही बनता है कि वह उसकी सही-सही व्याख्या करे और फिर कानूनी कार्रवाई के बारे में सोचे। पर राजनीतिक उदारता के बगैर यह संभव नहीं जान पड़ता।

तकनीक की मार

आधुनिक तकनीकी और इंटरनेट से लैस स्मार्टफोन तक जैसे-जैसे आम लोगों की पहुंच बन रही है, वैसे-वैसे कई स्तर पर इसके नुकसान भी सामने आ रहे हैं। खासकर स्मार्टफोन में गेम खेलने की लत का सबसे ज्यादा असर युवाओं और बच्चों पर पड़ा है, जिनका व्यक्तित्व इससे बुरी तरह प्रभावित होने लगा है। यह चिंता आम है कि मोबाइल में गेम की लत के चलते बच्चों की पढ़ाई-लिखाई बाधित हो रही है। मगर ज्यादा त्रासद घटनाएं वे हैं, जिनमें हमेशा स्मार्टफोन देखने या गेम खेलने की आदत की वजह से बच्चे अपने परिजनों पर हमला कर देते या फिर अपनी ही जान ले लेते हैं। गौरतलब है कि ओड़ीशा में जगतसिंहपुर जिले के जयबाड़ा सेठी साही गांव में एक छात्र ने आनलाइन गेम खेलने से मना करने पर पत्थर से हमला कर अपने माता-पिता और बहन की हत्या कर दी। खुद को रोके जाने के बाद उसके दिमाग पर हिंसा इस कदर हावी हुई कि उसने तीनों का सिर पत्थर से कुचल दिया।

यह आधुनिक तकनीक का ऐसा चेहरा है, जो बेहद घातक नतीजों के चलते चिंता का कारण बन रहा है। सवाल है कि इंटरनेट की सुविधा से लैस स्मार्टफोन का पर्दा आखिर इतना गहरा मनोवैज्ञानिक असर कैसे डाल रहा है कि कोई व्यक्ति इसके सम्मोहन में आसपास की दुनिया से लेकर खुद की अहमियत भी भूल जाता है। इसमें गुम रहने से या इसकी लत लग जाने के बाद मस्तिष्क की बनावट में कैसे बदलाव होते हैं कि एक किशोर या युवा की नजर में जीवन और उसकी वास्तविकताओं की कोई कीमत नहीं रह जाती? यह स्थिति तकनीक को लेकर हद से ज्यादा मुग्ध होने को कठघरे में खड़ा करती है और इसके सीमित इस्तेमाल की जरूरत रेखांकित करती है। मोबाइल में गुम रहने की लत के चलते बच्चों तक के बीच आत्महत्या या हत्या जैसी घटनाएं सामने आ रही हैं। अगर समय रहते इसे रोकने की ठोस और नीतिगत पहल नहीं की गई, तो आने वाले वक्त में इसके बेहद दुखद नतीजे देखने को मिल सकते हैं। कई देशों में बच्चों और किशोरों की इंटरनेट तक पहुंच को सीमित किया गया है, लेकिन इस मसले पर एक व्यापक नीति की जरूरत है।

युवाओं को दक्ष बनाने की चुनौती

भारत देश और दुनिया की जरूरतों को देखते हुए, अपने युवाओं में दक्षता का विकास कर रहा है। उनका कौशल बढ़ा रहा है। वर्ष 2025-26 के केंद्रीय बजट में देश के युवाओं को दक्ष बनाने और भारत को वैश्विक कौशल केंद्र बनाने की दिशा में सरकार ने बड़े कदम उठाए हैं।

जयंतीलाल भंडारी

इन दिनों कृत्रिम मेधा (एआइ) से संबंधित कई रपटों में कहा जा रहा है कि जहां भारत की नई पीढ़ी के लिए देश ही नहीं, दुनियाभर में एआइ से जुड़ी नौकरियों में अवसर बढ़ रहे हैं, वहीं करोड़ों युवाओं को इससे संबंधित नौकरियों के लिए पेशेवर के रूप में तैयार करने की बड़ी चुनौती भी है। हाल ही में प्रधानमंत्री ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ पेरिस में आयोजित 'एआइ एक्शन शिखर सम्मेलन 2025' की सह अध्यक्षता करते हुए कहा कि हालांकि दुनिया में यह आशंका है कि एआइ की वजह से नौकरियां खत्म होंगी, लेकिन इतिहास गवाह है कि प्रौद्योगिकी के कारण नौकरियां खत्म नहीं होतीं, बल्कि उसकी प्रकृति बदल जाती है और नई तरह की नौकरियां सृजित होती हैं। इसलिए हमें एआइ संचालित भविष्य के लिए अपने लोगों को दक्ष बनाते हुए नए काम के तरीकों के लिए उन्हें तैयार करने के वास्ते निवेश करने की जरूरत है।

इसमें कोई दो मत नहीं कि भारत की नई पीढ़ी एआइ से संबंधित कार्यों में लगातार अपना योगदान बढ़ा रही है। 'ओपन एआइ' के मुख्य कार्यकारी सैम आल्ट मैन का मानना है कि कृत्रिम मेधा के लिए दुनिया में भारत दूसरा सबसे बड़ा बाजार है। वहीं गूगल के मुख्य कार्यकारी सुंदर पिचाई के मुताबिक भारत एआइ के क्षेत्र में दुनिया का नेतृत्व कर सकता है। माइक्रोसाफ्ट को भी लगता है कि गणित में दक्ष भारत की नई पीढ़ी के लिए एआइ क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। इस समय जहां भारत की नई पीढ़ी देश के विकास में बढ़ा योगदान दे रही है, वहीं उसने पूरी दुनिया में छाप छोड़ी है। नई पीढ़ी सेवा निर्यात से विदेशी मुद्रा की बड़ी कमाई करने वाली आर्थिक शक्ति के रूप में भी उभरती दिखाई दे रही है। यह बात भी अहम है कि एआइ सहित यह मानव संसाधन के सरल और किफायती रूप से उपलब्ध होने के कारण भारत में बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां तेजी से अपने केंद्र खोल रही हैं।

विश्व आर्थिक मंच (डब्लूईएफ) सम्मेलन 2025 के तहत प्रकाशित रपट 'भविष्य की नौकरियां' में कहा गया है कि वैश्विक स्तर पर वर्ष 2030 तक 17 करोड़ एआइ संचालित नई नौकरियां पैदा होंगी, जबकि 9.2 करोड़ परंपरागत नौकरियां समाप्त होने का अनुमान है। इससे 7.8 करोड़ अधिक नई नौकरियां पैदा होंगी। दक्षता वाली नई नौकरियों को रफ्तार मिलेगी और इससे दुनिया भर में उद्योगों और व्यवसायों को नया रूप मिलेगा। इस रपट में कहा गया है कि जहां भारत में नियोक्ताओं का मानना है कि सेमीकंडक्टर और कंप्यूटिंग प्रौद्योगिकियों को अपनाने से उनके परिचालन में बदलाव आएगा। विश्व स्तर पर एआइ कौशल की मांग में तेजी आई है। ऐसी मांग के महेनजर भारत और अमेरिका अग्रणी हैं। ऐसे में, सबसे तेजी से जिन नौकरियों की मांग होगी, उनमें एआइ डेटा विशेषज्ञ और मशीन लर्निंग विशेषज्ञ तथा साइबर सुरक्षा प्रबंधन विशेषज्ञ शामिल हैं। ये सभी नौकरियां वैश्विक रुझानों के साथ निकटता से जुड़ी हुई हैं। इन सबके मद्देनजर भारत दुनिया के सबसे बड़े कुशल कामगार वाले देशों में शामिल है। साथ ही, आगामी दशक में दुनिया के

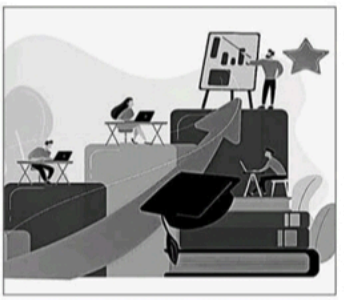

एक चौथाई नए दक्ष कामगारों का केंद्र भी भारत बन सकता है।

आर्थिक सर्वेक्षण 2025 में रेखांकित हुआ है कि दुनिया भर में एआइ का उपयोग तेजी से बढ़ रहा और एआइ के तेजी से उपयोग के लिए भारत तैयार हो रहा है। इस सर्वेक्षण में बताया गया है कि वर्ष 2021 और 2022 के बीच वैश्विक स्तर पर दिए गए एआइ पेटेंट की संख्या में 62.7 फीसद की वृद्धि हुई है। आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया है कि निश्चित रूप से भारत में भी सेवाप्रधान अर्थव्यवस्था के कारण एआइ के प्रभावों को लेकर चिंताएं ज्यादा हैं। इस परिप्रेक्ष्य में कर्मचारियों के बीच, आइआइएम अहमदाबाद के विशेष सर्वेक्षण में पाया गया है कि 68 फीसद कर्मचारियों को उम्मीद है कि अगले पांच वर्षों में एआइ द्वारा उनकी नौकरी आंशिक रूप से या पूरी तरह से स्वचालित हो जाएगी। वहीं लगभग 40 फीसद कर्मचारियों का मानना है कि एआइ उनके परंपरागत कौशल को बेमानी बना देगा। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुमान बताते हैं कि वैश्विक स्तर पर 7.5 करोड़ नौकरियां जोखिम में हैं।

> आर्थिक सर्वेक्षण 2025 में रेखांकित हुआ है कि दुनिया भर में एआइ का उपयोग तेजी से बढ़ता जा रहा है और एआइ के तेजी से उपयोग के लिए भारत तैयार हो रहा है। इस सर्वेक्षण में बताया गया है कि वर्ष 2021 और 2022 के बीच वैश्विक स्तर पर दिए गए एआइ पेटेंट की संख्या में 62.7 फीसद की वृद्धि हुई है। आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया है कि निश्चित रूप से भारत में भी सेवाप्रधान अर्थव्यवस्था के कारण एआइ के प्रभावों को लेकर चिंताएं ज्यादा हैं। इस परिप्रेक्ष्य में कर्मचारियों के बीच, आइआइएम अहमदाबाद के एक विशेष सर्वेक्षण में पाया गया है कि 68 फीसद कर्मचारियों को उम्मीद है कि अगले पांच वर्षों में एआइ द्वारा उनकी नौकरी आंशिक रूप से या पूरी तरह स्वचालित हो जाएगी।

कई अन्य सर्वेक्षण भी दुनिया भर में पारंपरिक नौकरियों के लिए संभावित खतरों का संकेत देते हैं। आर्थिक सर्वेक्षण 2025 की यह टिप्पणी भी अहम है कि मजबूत संस्थागत ढांचे और रणनीतिक योजना के साथ, एआइ एक संकट के रूप में नहीं, बल्कि न्यायसंगत आर्थिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य कर सकता है, जो भारत को तेजी से स्वचालित होती दुनिया में आगे बढ़ने की स्थिति में लाएगा। सर्वेक्षण ने यह भी रेखांकित किया कि प्रौद्योगिकी को हमेशा श्रम को विस्थापित करने की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि इसके बजाय कार्यबल की उत्पादकता बढ़ाने में इसका उपयोग किया जा सकता है।

इसमें कोई दो मत नहीं कि भारत देश और दुनिया की जरूरतों को देखते हुए, अपने युवाओं में दक्षता का विकास कर रहा है। उनका कौशल बढ़ा रहा है। वर्ष 2025-26 के केंद्रीय बजट में देश के युवाओं को दक्ष बनाने और भारत को वैश्विक कौशल केंद्र बनाने की दिशा में सरकार ने बड़े कदम उठाए हैं। तीन नई कौशल विकास योजनाओं का एलान किया गया है। इन योजनाओं के तहत खासतौर पर एआइ, आइटी, साइबर सुरक्षा और अन्य नई तकनीकों में करीब पांच लाख युवाओं को प्रशिक्षित किया जाएगा। यह भी अहम है कि सरकार के इंडिया एआइ मिशन का एक बड़ा उद्देश्य एआइ सहित अन्य दक्षता वाले मानव संसाधन के परिप्रेक्ष्य में देश-विदेश की मांग को पूरा करना है। यह मिशन भारत की युवा आबादी को देखते हुए खासतौर से महत्त्वपूर्ण है।

यूरोप, जापान और अन्य कई विकसित और विकासशील देशों की आबादी तेजी से बूढ़ी हो रही है। ऐसे में भारत के लिए विदेशों में भी अपने दक्ष युवाओं के लिए बड़े अवसर हैं। भारत ने हाल के वर्षों में करीब दो दर्जन देशों के साथ आव्रजन और रोजगार से जुड़े समझौते किए हैं। इन समझौतों के तहत भारत, जापान, इजराइल, आस्ट्रेलिया, सऊदी अरब, फ्रांस, जर्मनी, रूस, मारीशस, ब्रिटेन, रोमानिया और इटली जैसे देशों में अपने दक्ष युवाओं को भेज रहा है।

नए डिजिटल दौर में देश की एआइ दक्ष नई पीढ़ी की देश और दुनिया में लगातार मांग बढ़ रही है। ऐसे में, हमें नई पीढ़ी की दक्षता बढ़ाने के लिए उन्हें और अधिक प्रेरित करना होगा। इसके लिए नई रणनीति के साथ आगे बढ़ना होगा। हमें देश के कोने-कोने में विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े हुए क्षेत्रों में बड़ी संख्या में युवाओं को कुशल बनाने के लिए कई गुना प्रयास करने होंगे। हम उम्मीद करें कि सरकार दुनिया की सर्वाधिक युवा आबादी वाले भारत में नई पीढ़ी को एआइ दक्ष बनाने के लिए कदम तेजी से बढ़ाएगी। यह भी उम्मीद करें कि नई एआइ पीढ़ी देश की आर्थिक तस्वीर संवारने की संभावनाओं को साकार करते हुए भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने में अहम भूमिका निभाएगी।

पतंग की तरह जिंदगी

शिखर चंद जैन

गलत निर्णय का बोझ हमें अक्सर परेशान करता है। जिंदगी में हमें कई निर्णय लेने पड़ते हैं। कई बार ये आगे चलकर गलत भी साबित हो सकते हैं। मगर इसके लिए जिंदगी भर पछताने और दुखी रहने से कोई फायदा नहीं होता। इसके बजाय उन अच्छे निर्णयों के लिए लिए खुद को सराहने की जरूरत है, जिनके कारण हम आज यहां तक पहुंचे। आमतौर पर गलत निर्णयों की संख्या कम और सही निर्णयों की अधिक होती है। रिश्तों से अपेक्षाओं का बोझ बहुत भारी होता है। कई लोग इसी में उलझे रहते हैं कि फलां रिश्तेदार ने हमें शादी में मान-सम्मान नहीं दिया, वहां से न्योता ढंग से नहीं आया, खाने के लिए नहीं पूछा, ठीक से बात नहीं कि आदि। अपेक्षाएं सिर्फ दुख-दर्द ही देती हैं, इसलिए ऐसी बातों पर ज्यादा ध्यान नहीं देना चाहिए।

दुनिया भर के काम का बोझ व्यक्ति को कहीं का नहीं छोड़ता। कुछ लोगों की आदत होती है कि वे सबका काम अपने सिर पर लाद लेते हैं। चाहे परिवार की बात हो या रिश्तेदार की या फिर दफ्तर की। ऐसा लगता है जैसे हर किसी की मदद की जिम्मेदारी उन्हें ही उठानी है। उतना ही काम लेने की जरूरत है, जिससे हमारी जिंदगी दूभर न हो। इन दिनों सामाजिक हैसियत का बोझ सबसे भारी माना जाने लगा है। ज्यादातर लोग आमदनी न होने के बावजूद अपने पड़ोसी, मित्रों या रिश्तेदारों के बीच अपना रोब कायम रखने के लिए आए दिन महंगे घरेलू उपकरण, कपड़े आदि खरीदते हैं या फिर जरूरत न होने के बावजूद महंगा फ्लैट या कार खरीद डालते हैं। इसके बाद लोगों से कर्ज या मासिक किस्तें चुकाने में पूरी जिंदगी बिसूरते हुए गुजारते हैं।

कमाई से असंतोष का बोझ रात को चैन से सोने नहीं देता और दिन में चैन से बैठने नहीं देता। इच्छाएं कभी पूरी नहीं होतीं। दुनिया भर में ऐसे लोग गिनती के मिलेंगे, जो अपनी आय से संतुष्ट रहते हैं। जैसा कि कहा गया है संतोषम् परम् सुखम्। ऐसे ही लोग दुनिया के सबसे सुखी इंसान होते हैं। हम लगातार पैसा कमाने के पीछे भागते रहेंगे, तो जो हमारे पास मौजूद है, उसका उपभोग कभी नहीं कर पाएंगे। कई लोग आज की तारीख में अच्छी कमाई, अच्छे जीवनसाथी, अच्छे आज्ञाकारी बच्चों के होते हुए भी कई बार अचानक अवसाद के सागर में गोते लगाने लगते हैं। दरअसल, वे इस सोच में डूब जाते हैं कि आज तो सब ठीक है, कल को अगर कारोबार ठप पड़ गया, नौकरी छूट गई, जीवनसाथी को कुछ हो गया या बच्चे नालायक निकल गए तो क्या होगा? इसलिए सुखी और आनंदित रहना है तो वर्तमान में जीना चाहिए।

> **दुनिया मेरे आगे**
>
> कमाई से असंतोष का बोझ रात को चैन से सोने नहीं देता और दिन में चैन से बैठने नहीं देता। दुनिया भर में ऐसे लोग गिनती के मिलेंगे, जो अपनी आय से संतुष्ट रहते हैं। ऐसे ही लोग दुनिया के सबसे सुखी इंसान होते हैं। हम लगातार पैसा कमाने के पीछे भागते रहेंगे, तो जो हमारे पास मौजूद है, उसका उपभोग कभी नहीं कर पाएंगे।

इसके अलावा, अगर इस बात की हम परवाह करेंगे कि लोग क्या कहेंगे, तो हमें हमेशा दूसरों की अपेक्षाओं के हिसाब से जीना पड़ेगा। जाहिर है, ऐसे में हम खुद की बेहतरी, खुशी और सुकून के लिए वक्त नहीं निकाल पाएंगे, बल्कि हर वक्त दूसरों को खुश करने में लगे रहेंगे, उनका काम करते रहेंगे। जब हम खुद की जरूरत की बजाय दूसरों की परवाह करते हैं तो अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण निर्णय सही तरीके से नहीं ले पाते। हम धीरे-धीरे अपना मूल स्वभाव और व्यक्तित्व खोने लगते हैं। आत्मविश्वास में लगातार कमी आने लगती है और हर वक्त यह परवाह लगी रहती है क्या लोगों ने हमारे काम, आचरण और व्यवहार को पसंद किया? हम अक्सर बेचैन परेशान और व्यस्त रहने लगते हैं। इसलिए इस बोझ को तुरंत उतार कर फेंकने और मस्ती से अपना जीवन अपनों के लिए, स्वयं अपने लिए और अपनी खुशी के लिए जीना शुरू कर देना चाहिए। ठीक इसी तरह बीमारियां जीवन को बोझिल बना देती हैं। बीमार नहीं होना या होना पूरी तरह हमारे नियंत्रण में नहीं है, लेकिन हम अपनी शारीरिक और मानसिक सेहत पर ध्यान देकर इसे काफी हद तक काम कर सकते हैं।

जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाना हमारे हाथ में है। इसके लिए हमको अपने परिवार, दोस्तों और सामाजिक दायरे में घुल मिलकर रहना चाहिए, उनसे नियमित संवाद करना चाहिए और जमकर गपशप और हंसी-मजाक करना चाहिए। नियमित रूप से नई चीजें सीखते रहा जाए तो याददाश्त अच्छी रहेगी, मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और जीवन में उमंग और उत्साह बने रहेंगे। नियमित टहलना, व्यायाम और योग करना आदत में शामिल होना चाहिए। इन सबके साथ-साथ हमें पोषक तत्त्वों का सेवन और शरीर का नियमित निर्विषीकरण भी करना चाहिए। ये आदतें हमें काफी हद तक चुस्त-दुरुस्त रखेंगी और आप चिंता रहित हल्का-फुल्का जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

कुछ लोग जरा-सी असफलता पर हताश हो जाते हैं। हर बाजी को जीतने का बोझ हमें अक्सर दुखी, हताश और परेशान करता है। सबसे पहले यह स्वीकार करना चाहिए कि हमारा हर प्रयास पूरी तरह सफल होगा, यह असंभव है और ऐसा कभी किसी के साथ नहीं होता है। जीतना ही सब कुछ नहीं है। जीतने का प्रयास ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। जिन सफल व्यक्तियों को हम देखते हैं, वे प्रयास करने से कभी पीछे नहीं हटे। वे तब तक प्रयास करते हैं जब तक जीत न जाएं। हर व्यक्ति के अंदर कोई न कोई योग्यता और प्रतिभा जरूर होती है। इसलिए हमारे पास जो योग्यता है, उसका सही उपयोग करके हमें अपनी नकारात्मक सोच से छुटकारा पाने की शुरुआत करनी चाहिए। प्रेरक लेखक जग जिगलर ने अपनी पुस्तक 'सी यू एट द टाप' में लिखा है कि अपनी असफलताओं के लिए दोस्तों, रिश्तेदारों, परिवार के सदस्यों या किस्मत को कोसने के बजाय आपको अपनी ऊर्जा, लक्ष्य, प्रयासों और गलतियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जिस क्षण आप यह स्वीकार कर लेते हैं कि आपकी स्थिति, सफलता या असफलता सब आपके हाथों में ही है, उसी समय आप सफलता की आधी दूरी तय कर लेते हैं। हमारी सफलताओं के बीज या महानता का सामर्थ्य हमारे ही हाथों में है। बस कमजोरी को ताकत में बदलने की जरूरत है।

बदलती नीति

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनके यूक्रेनी समकक्ष की मुलाकात का कई लोगों को बेसब्री से इंतजार था। विशेषकर पश्चिमी देश इस उच्च स्तरीय बैठक में रुचि ले रहे थे, लेकिन यह मुलाकात न केवल अचानक समाप्त हो गई, बल्कि बेनतीजा भी रही। इस बैठक के बाद विश्व के नेता दो धड़ों में बंटे नजर आ रहे हैं। कूटनीतिक गलियारों में ट्रंप और उपराष्ट्रपति जेडी वेंस की आलोचना भी हो रही है। जहां अमेरिका ने एक मेहमान देश के राष्ट्रपति की न केवल मीडिया के सामने आलोचना की, बल्कि उपराष्ट्रपति वेंस ने उन्हें बीच में टोका भी, जिस पर यूक्रेनी राष्ट्रपति ने कहा कि अपनी आपत्ति जताई। जेलेंस्की ने यूक्रेन में सुरक्षा गारंटी और स्थायी शांति की आवश्यकता पर बल देते हुए पीछे हटने से इनकार कर दिया है। ट्रंप ने अपने चुनाव अभियान में वादा किया था कि वह राष्ट्रपति बनते ही रूस-यूक्रेन युद्ध रुकवा देंगे। वे इसे तीसरे विश्वयुद्ध के खतरे के रूप में भी देखते हैं। ट्रंप का मानना है कि किसी भी समझौते पर पहुंचने के लिए यूक्रेन और रूस दोनों के साथ अमेरिका का होना आवश्यक है। यूक्रेन पर आक्रमण के बाद रूस को अलग-थलग करने की अमेरिका की नीति क्या बदल रही है?

- पुनीत अरोड़ा, मेरठ

बेरंग होता बसंत

बसंत ऋतु को सभी ऋतुओं का राजा कहा जाता है। इस ऋतु को सभी जीवों के लिए अनुकूल और सुखद माना जाता है। इस समय प्रकृति एक नए रंग रूप में उपस्थित होती है। धरती के सभी जीव और पेड़-पौधे इसकी प्रतीक्षा करते हैं। इस समय उन्हें एक नई चेतना और ऊर्जा प्राप्त होती है। बसंत में सुगंधित हवाएं सभी को मदमस्त कर देती हैं। फूलों की भरी डालियां और कोयल की कूक हर व्यक्ति को अपना दीवाना बना देती है। बसंत में न जाड़े की थरथराहट होती है, न गर्मी की उमस। सभी जगह हरे-भरे पेड़ों और फूलों के कारण चारों तरफ हरियाली दिखाई देती है। मगर इस बार न जाने बसंत को किसकी नजर लग गई है। अभी से ही गर्मी का अहसास हो रहा है। सामान्य से तापमान अधिक हो चुका है। नदियों के जल स्तर में कमी आ रही है। वहीं भूमिगत जल स्तर में लगातार कमी आ रही है। बढ़ती गर्मी से अब बसंत भी बेरंग होता जा रहा है।

- हिमांशु शेखर, गया

मेहनत की सीमा

पिछले कुछ महीनों से इस चर्चा को कौन और किसके कहने पर बार-बार तूल दिया जा रहा है कि इस देश को विकसित बनाने के लिए सबको सप्ताह में नब्बे घंटा काम करना ही पड़ेगा। शुरुआत नारायणमूर्ति ने की। फिर एसएन सुब्रह्मण्यन ने। उन्होंने अपनी टिप्पणी में सप्ताह में नब्बे घंटे के सुझाव को सही करार दिया। इस पर पक्ष-विपक्ष में दलीलें अभी चल ही रही थीं कि मैदान में कूद गए नीति आयोग के पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमिताभ कांत। उन्होंने कह दिया कि भारत को चार ट्रिलियन डालर से 30 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए कड़ी मेहनत की जरूरत है। उन्होंने कहा, 'मैं कड़ी मेहनत पर भरोसा करता हूं। चाहे वह सप्ताह में अस्सी घंटे हो या नब्बे घंटे। उन्होंने अमेरिका का उदाहरण दिया। मगर यह नहीं बताया कि अमेरिका में किस राज्य में या किस कंपनी के लोग इस समय सप्ताह में नब्बे घंटे काम कर रहे हैं। सवाल यह है कि इतने घंटे काम करने से श्रमिकों पर क्या असर पड़ेगा!

- जंग बहादुर सिंह, जमशेदपुर

सेहत के सामने

देश में मोटापे की समस्या बढ़ रही है, सेहत घटती जा रही है। भारत की शहरी आबादी का 70 फीसद हिस्सा मोटापा या अधिक वजन की श्रेणी में आ रहा है। शारीरिक गतिविधियों में कमी और अधिक कैलोरी वाले खाने से बच्चों में भी मोटापा तेजी से बढ़ रहा है। इससे बचने के लिए हमें 'जंक फूड' से बचना होगा। पूरी नींद लेना और नियमित व्यायाम जरूरी है। धीरे-धीरे वजन घटाना ठीक रहता है। दवाओं से परहेज जरूरी है। इसके लिए हरी सब्जियों के साथ संतुलित भोजन को दिनचर्या में शामिल किया जा सकता है। प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार मोटापा कम करने के लिए संतुलित आहार लेना उचित है। स्वस्थ जीवनशैली के लिए आयुर्वेद विशेषज्ञ की सलाह से कुछ घरेलू उपचार भी किए जा सकते हैं। मोटापा बढ़ने से कई प्रकार की मुसीबतें पैदा हो जाती है।

- राजेंद्र कुमावत, जयपुर

विचार

नवभारत टाइम्स

नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली। बुधवार, 5 मार्च 2025

अनिवार्य है यह आज़ादी

सुप्रीम कोर्ट ने सेमवार को दो अलग-अलग मामलों में जो कहा, वह अभिव्यक्ति की आजादी से जुड़े संवैधानिक और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिहाज से खासा अहम है। शीर्ष अदालत ने कहा कि आजादी के 75 साल हो गए हैं। कम से कम अब तो पुलिस को स्वतंत्र अभिव्यक्ति का मर्म समझना चाहिए।

कविता पर FIR | इनमें से एक मामला कांग्रेस सांसद इमरान प्रतापगढ़ी से जुड़ा था। उनकी एक कविता पर गुजरात पुलिस ने FIR दर्ज की थी। गुजरात हाईकोर्ट ने भी इस मामले में जांच की जरूरत बताते हुए पुलिस कार्रवाई की पुष्टि की थी। इसे देखते हुए सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी मायने रखती है कि FIR दर्ज करने से पहले संबंधित अधिकारियों को कविता पढ़नी चाहिए थी। कविता नफरत और हिंसा की नहीं, इंसाफ और इश्क की बात करती है।

AI Image

कानून को समझे पुलिस

अश्लीलता के बरक्स अभिव्यक्ति | रणवीर इलाहाबादिया से जुड़े अश्लीलता के आरोपों पर भी सुप्रीम कोर्ट ने बेहद संतुलित लेकिन धारदार टिप्पणी करते हुए स्पष्ट किया कि न तो अश्लीलता के लिए कोई गुंजाइश छोड़ी जानी चाहिए और न ही इसे अभिव्यक्ति की आजादी की राह में आने देना चाहिए। रणवीर इलाहाबादिया को पॉडकास्ट जारी रखने की इजाजत देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि वह नैतिकता और अश्लीलता की सीमा को लांघने की गलती न करें।

सेंसरशिप नहीं, मानदंड | सुप्रीम कोर्ट ने सोशल मीडिया से जुड़े मंचों के दुरुपयोग पर चिंता जताते हुए भी सेंसरशिप और नॉर्म (मानदंड) के बीच के फर्क को रेखांकित किया। उसका कहना था कि सरकार को इस संबंध में गाइडलाइंस लाने चाहिए, लेकिन ऐसा करते हुए यह भी ध्यान में रखना जरूरी है कि वे अभिव्यक्ति की आजादी पर गैरजरूरी पाबंदियों का रूप न ले लें।

सबके लिए संदेश | सुप्रीम कोर्ट के इस सख्त रुख की अहमियत इसलिए भी बढ़ जाती है क्योंकि यह ऐसे समय सामने आया है जब देश में दोनों तरह का विचलन काफी बढ़ा हुआ दिख रहा है। जहां सोशल मीडिया जैसे मंचों के बेजा इस्तेमाल की प्रवृत्ति बढ़ी है, वहीं शासन प्रशासन की ओर से इन्हें रोकने की कोशिशों में भी अक्सर अति-उत्साह की झलक मिलती है। इससे नागरिकों के अभिव्यक्ति के अधिकार का उल्लंघन होता है। शीर्ष अदालत ने याद दिलाया है कि इस अधिकार का ख्याल रखा जाना चाहिए।

इन दिनों

ग़लत टर्न

मृत्युंजय राय

अमेरिका के तीन सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार है- कनाडा, मेक्सिको और चीन। 4 मार्च की आधी रात से अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने कनाडा और मेक्सिको पर पर 25% का आयात शुल्क लगा दिया। उन्होंने चीन पर भी 10% का अतिरिक्त आयात शुल्क लगाया। यह पिछले महीने के 10% आयात शुल्क के अतिरिक्त है। जवाब में कनाडा ने 107 बिलियन डॉलर के अमेरिकी सामानों पर 25% और चीन ने अमेरिका के कृषि उत्पादों पर 10-15% का टैरिफ लगाया है। यानी जिस ट्रेड वॉर की आशंका थी, वह अब तेज हो गई है, जिसकी कीमत अमेरिका सहित ग्लोबल इकॉनमी को चुकानी पड़ सकती है।

पहले इसे समझते हैं कि अमेरिका पर इसका क्या असर हो सकता है। ट्रंप को लगता है कि टैरिफ दरों में जो अंतर है, वह अमेरिका के साथ अन्याय है। लेकिन आयात शुल्क की सच्चाई यह है कि इसका बोझ आम अमेरिकियों और अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। अमेरिका में जो कारोबारी चीन, कनाडा और मेक्सिको से सामान खरीदेंगे, वह ट्रंप सरकार को इस पर आयात शुल्क चुकाएंगे। इसकी वसूली के लिए वह देश में इन चीजों को ऊंची कीमत पर बेचेंगे। बड़ी बात यह है कि इससे ट्रंप सरकार को बहुत आमदनी भी नहीं होगी। एक अनुमान के मुताबिक, तीनों देशों पर लगाए गए आयात शुल्क से ट्रंप सरकार को 100 बिलियन डॉलर की आमदनी होगी, जो अमेरिका को टैक्स से होने वाली कुल आमदनी का सिर्फ 2% है। वहीं, अमेरिकी लोगों के लिए इन चीजों की कीमत बहुत बढ़ जाएगी। मसलन, अमेरिका में कार के दाम में औसत 2,500 डॉलर यानी 2 लाख रुपये से अधिक की बढ़ोतरी होगी। ज्यादा वक्त नहीं गुजरा जब अमेरिका में महंगाई दर चार दशकों के रेकॉर्ड लेवल पर पहुंच गई थी। उस पर काबू पाने के लिए वहां के केंद्रीय बैंक ने ब्याज दरों में काफी बढ़ोतरी की थी। इस बीच, अमेरिका की अर्थव्यवस्था के सुस्त पड़ने की आशंका बढ़ गई है। महंगाई बढ़ी तो लोग खर्च घटा देंगे। ट्रंप की नीतियों से जो अनिश्चितता बनी है, उसमें कंपनियां भी निवेश घटा सकती हैं। ऐसे में दुनिया की सबसे बड़ी इकॉनमी अमेरिका में सुस्ती आएगी, जिसका असर समूची दुनिया पर पड़ सकता है।

एकदा

डिब्बी पर हस्ताक्षर

सन 1930 की बात है। अमेरिकी पत्रकार वेब मिलर ने धरसाना के नमक सत्याग्रह की रिपोर्टिंग की थी। उसमें 1300 से अधिक सत्याग्रही घायल हो गए थे और कई लोगों की मौत हुई थी। उनकी असरदार रिपोर्टिंग के कारण ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विश्व जनमत तैयार होने में मदद मिली। उन्हें पढ़कर पूरी दुनिया के राजनेताओं और बुद्धिजीवियों ने महसूस किया कि जो अंग्रेजी साम्राज्य अपने को सभ्य बताता है, वह वास्तव में कितना क्रूर और असभ्य है। उन्होंने विश्व के कई महत्वपूर्ण युद्धों की कठिन परिस्थितियों में रिपोर्टिंग की। उन्हें कई पुरस्कारों से भी नवाजा गया। सन 1931 में महात्मा गांधी गोलमेज परिषद में भाग लेने के लिए विलायत गए थे। वेब मिलर तब गांधीजी से मिलने पहुंचे। काफी देर बातचीत होने के बाद उन्होंने अपनी सिगरेट की डिब्बी आगे बढ़ाकर गांधीजी से कहा, 'आप इस डिब्बी पर अपने हस्ताक्षर कर दीजिए।' उस डिब्बी पर अनेक प्रख्यात व्यक्तियों के हस्ताक्षर थे। गांधीजी ने डिब्बी हाथ में ली, खोलकर देखी और हंसते हुए बोले, 'यह सिगरेट की डिबिया है। धूम्रपान के संबंध में आप मेरे विचार जानते हैं। मैं हमेशा धूम्रपान के खिलाफ रहा हूं। अगर आप वचन दें कि इस डिब्बी में कभी सिगरेट नहीं रखेंगे, तो मैं इस पर हस्ताक्षर कर दूंगा।' वेब मिलर ने वचन दिया और गांधीजी ने हस्ताक्षर कर दिए। तब से मिलर उस डिब्बी में विजिटिंग कार्ड रखने लगे।

Subrata Dhar

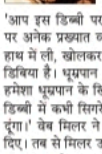

संकलन : दीनदयाल मुरारका

धनंजय के इस्तीफे के साथ महायुति का पहला विकेट गिरा, कई और हो सकते हैं निशाने पर

महाराष्ट्र में क्या नई लड़ाई छिड़ने वाली है

गंगाधर ढोबले

महाराष्ट्र के मंत्री धनंजय मुंडे का इस्तीफा राजनेताओं और अपराधियों की मिलीभगत का जीवंत व ताजा उदाहरण है। यह सांठगांठ इस हद तक है कि धोखाधड़ी, कमिशनखोरी, रंगदारी वसूली, मारपीट और हत्याओं तक बात पहुंच जाती है। आरोपों से लगता है कि धनंजय शायद इसी जाल में फंसे हैं। बीड़ जिले के मस्साजोग गांव के सरपंच संतोष देशमुख की हत्या इसी कड़ी का हिस्सा है। इस हत्याकांड के मुख्य आरोपी वाल्मिक कराड और उनके गिरोह के साथियों की गिरफ्तारी हो चुकी है। उनसे अपनी करीबी कबूल कर धनंजय भी गिरफ्त में आ गए।

आरोपी संग पार्टनरशिप | वेंकटेश्वर चीनी मिल में कराड और धनंजय पार्टनर हैं। कराड के नाम पर करोड़ों की संपत्ति और उसका धनंजय से कनेक्शन है। इसके अलावा, धनंजय पर लगे आरोपों की लिस्ट बहुत लंबी है,

- कृषि विभाग में करीब 300 करोड़ रुपये के घोटाले का आरोप। फसल बीमा में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी हुई। हार्वेस्टर घोटाले में भी नाम आया। तब वह पिछली सरकार में कृषि मंत्री थे।
- परली और आंबेजोगाई में PWD से काम किए बिना ही करोड़ों रुपये के बिल लेने के आरोप।
- प्रमोद महाजन के भाई प्रवीण की पत्नी सारंगी की झूठे आरोपों में जमीन हड़पना।
- पवन ऊर्जा कंपनी से दो करोड़ रुपये की उगाही के लिए दबाव। आरोप है कि लेनदेन को लेकर धनंजय के बंगले में बैठक हुई।

रिश्तों का झगड़ा | धनंजय मुंडे, करुणा शर्मा नाम की महिला के साथ रिलेशन में रहे हैं। उनके दो बच्चे भी हैं। परिवार अदालत ने करुणा और बच्चों के लिए प्रति माह दो लाख रुपये का अंतरिम गुजारा भत्ता मंजूर किया है। धनंजय ने करुणा से संबंधों को स्वीकार किया है, मगर आदेश को चुनौती दी है। केस चल रहा है।

राजनीतिक असर | इन मामलों का राज्य की राजनीति पर असर आना ही है, खासकर बीड जिले और मराठवाड़ा में राजनीतिक समीकरणों पर इसका असर पड़ेगा। बीड इलाका गोपीनाथ मुंडे के कारण BJP का गढ़ रहा है। धनंजय उनके भतीजे हैं। गोपीनाथ ही 90 के आसपास भतीजे को BJP में ले आए थे। धनंजय ने विद्यार्थी परिषद से लेकर BJP युवा मोर्चा तक में जिम्मेदारियां संभाली हैं।

धनंजय मुंडे

सियासी जंग

- धनंजय मुंडे मामले से अजित पवार पर दबाव
- दूसरे गुट के नेता को मंत्री बना सकती है BJP
- पूर्व सीएम एकनाथ शिंदे का ग्रुप भी सतर्क हुआ

बहन से विवाद | गोपीनाथ मुंडे के निधन के बाद उनके उत्तराधिकार को लेकर उनकी बेटी पंकजा और उनके चचेरे भाई यानी धनंजय के बीच संघर्ष शुरू हो गया। धनंजय NCP में चले गए और विधानसभा चुनाव में पंकजा को मात दे दी। NCP के टूटने के बाद वह अजित पवार के साथ हो लिए। लोकसभा चुनाव में भी धनंजय ने पंकजा का साथ शायद ही दिया हो। यह चुनाव भी वह हार गईं। अब पंकजा की वापसी हो चुकी है। वह विधान परिषद में जाकर मंत्री बन गई हैं। धनंजय के इस्तीफे से उनके लिए अब बीड में मैदान साफ है। BJP के लिए भी यह फायदे का सौदा रहेगा।

कौन बनेगा नया मंत्री | धनंजय के इस्तीफे के बाद उनके पद पर कई लोगों की नजरें हैं। यह मंत्री पद अजित पवार के कोटे का है। तीन प्रमुख नाम उभरे हैं - छगन भुजबल, प्रकाश सालुंके और जयंत पाटील। छगन भुजबल उन्हें मंत्री पद से दूर रखने के कारण बहुत नाराज हैं। हालांकि भुजबल और सालुंके, दोनों को दूर रखकर शरद पवार गुट के जयंत पाटील को अपने खेमे में लाया जा सकता है। BJP प्रदेश अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले और जयंत पाटील की हाल में बैठकें हुई हैं। जयंत के आने से अजित दादा मुश्किल में पड़ सकते हैं।

एक और निशाना | अजित के एक और मंत्री निशाने पर हैं। यह हैं कृषि मंत्री माणिकराव कोकाटे। मुख्यमंत्री के रियायती कोटे से उन्होंने 90 के दशक में सस्ते में मकान पा लिया था। यह मकान गरीब तबके के लिए थे। उन्होंने अपनी आय कम दिखाई थी। अदालत में भ्रष्टाचार का मामला साबित हो गया है। कोर्ट ने उन्हें दो साल की सजा सुनाने के साथ 50 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया है। कोकाटे ने अपील करने की बात कही है, लेकिन उनका मंत्री पद तो ऑब्सिजन पर ही रहेगा। इससे अजित दादा की NCP में हलचल है। कोई भी निशाने पर आ सकता है।

शिंदे गुट में हलचल | पूर्व मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना और उनके साथी पहले से ही सतर्क हैं। उनकी बहुत सी योजनाओं को बदला जा रहा है। कुछ लोगों पर आपराधिक मामले हैं, इसलिए वे भी चौकन्ने हैं। कुल मिलाकर अजित और शिंदे, दोनों गुट असहज महसूस कर रहे हैं।

BJP फायदे में | राजनीति कैसे करवट बदलेगी, यह कोई नहीं कह सकता, लेकिन आपराधिक मामलों का अस्त्र BJP के हाथ में जरूर है। सच है कि जब तक दोषी साबित नहीं हो जाते तब तक किसी को अपराधी करार देना गलत है। फिर भी, एक सवाल तो उठता ही है कि हमारे बहुत से राजनेताओं पर इतने संगीन आपराधिक मामले बनते ही क्यों और कैसे हैं?

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

कब सेट होंगे जेट

पिछले हफ्ते एयर चीफ मार्शल ने फाइटर जेट की कमी को लेकर जो बात कही, उससे सीमा सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं का बढ़ना लाजिमी है। भारत 1965 के बाद वायु सेना में फाइटर जेट्स की सबसे बड़ी कमी के दौर से गुजर रहा है। ऐसे हालात में किस तरह से हो जेट, सेट, गो-आइए समझते हैं।

युद्ध का असर

रूस ने सुखोई-30 अपग्रेड करने से हाथ खड़े किए। कहा, यूक्रेन युद्ध है वजह।

युद्धक विमान

भारत- 600+
रूस- 3,864+
पाक- 410+
US- 5,500+
चीन- 1900+

चीफ की चिंता

- प्रति वर्ष 35-40 विमानों की जरूरत। हर साल चाहिए बस 2 स्वघाड़न।
- LCA मार्क-1A की आपूर्ति में हो रही देरी।

ACM एपी सिंह

टारगेट

- एयर फोर्स को 42 फाइटर स्वघाड़न चाहिए।
- 42 स्वघाड़न टू फ्रंट वॉर से तय हुई थी।
- टू फ्रंट वॉर- पाकिस्तान और चीन से एक साथ जंग।

अधूरी उड़ान

- एयरफोर्स के पास है सिर्फ 31 फाइटर स्वघाड़न।
- 1 स्वघाड़न में 18 फाइटर प्लेन होते हैं।
- पुराने रिटायर, नए आए नहीं

1996 में थे कुल **41** स्वघाड़न

2025 में घटकर हुए **31** स्वघाड़न

इनका नहीं काम

- **मिग-21** बाइसन को इसी साल है हटना।
- **नए एयरक्राफ्ट** में देरी, आगे बढ़ सकता है प्लान।
- **2025 से** जगुआर का फेज आउट, 2032 तक सभी हटेंगे।
- **2032 तक** मिराज और मिग-29 का भी फेजआउट।

अपना काम

भारत बना रहा पांचवी पीढ़ी का जेट- AMCA

₹15,000 करोड़ की परियोजना। पहली उड़ान 2030 तक।

खुला ऑफर

- US ने दिया F-35 स्टेल्थ फाइटर जेट का ऑफर।
- रूस का सुखोई-57 विमान।

स्पीड ब्रेकर

तेजस आएगा मिग-21 की जगह।

HAL तेजस देने में पीछे रह गया।

GE से तेजस के लिए इंजन मिलने में हो रही देरी।

अभी एयरफोर्स के पास तेजस मार्क 1 है।

HAL के पास 180 मार्क 1A तेजस पेंडिंग।

दो मोर्चे

चीन

- **रक्षा बजट** - 232 बिलियन डॉलर।
- हर साल बना रहा 240 फाइटर एयरक्राफ्ट।
- इनमें 100 से अधिक J-16 डिडेन ड्रैगन फाइटर जेट्स।
- दिसंबर में दिखाया 6th Zen स्टील्थ जेट फाइटर
- अंतरिक्ष के नजदीक तक है इनकी मार करने की रेंज।

पाकिस्तान

- **रक्षा बजट**- 7.6 बिलियन डॉलर।
- चीन पाकिस्तान को देगा 40 J-35A जेट।
- अमेरिकी F-35 जैसा है J-35A फाइटर स्टेल्थ जेट।

भारत का बजट

- **2025-26 में** रक्षा बजट- कुल 6.81 लाख करोड़।
- फाइटर जेट और इंजनों पर खर्च होंगे 48,614 करोड़।
- पिछले साल रक्षा बजट था 6.21 लाख करोड़।

कंटेंट : राहुल पाण्डेय, पूनम पाण्डे
ग्राफिक्स : अमित धींगड़ा

कूनो पार्क में आज़ाद हुई भारत की उम्मीद

व्योमेश चन्द्र जुगरान

भारत में जन्मे चीता शावकों को कूनो नैशनल पार्क के बाड़े से निकालकर खुले जंगल में छोड़ा गया। उम्मीद है कि अब ये शावक खुले जंगल में घूम सकेंगे और शिकार करना सीखेंगे।

खुले में चीते | ये शावक आशा नाम की मादा चीता के हैं, जिनका जन्म 3 जनवरी 2023 को हुआ था। आशा उन 8 चीतों में थी, जिन्हें 17 सितंबर 2022 को नामीबिया से भारत लाया गया था। शावकों के साथ उनकी मां और एक अन्य मादा चीता को भी जंगल में छोड़ दिया गया। इससे पहले 4 दिसंबर 2023 को दो नर चीते, अग्नि और वायु को भी जंगल में छोड़ा गया था। अब कूनो में चार वयस्क चीते और तीन शावक खुले जंगल में घूम रहे हैं।

लक्ष्य दूर | अभी कूनो नैशनल पार्क में 12 वयस्क चीते और 14 शावक हैं, जिनमें से कुछ अब भी बाड़े में हैं। हालांकि, नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से लाए गए 20 चीतों में से 8 की मौत हो चुकी है। वहीं, अब तक 21 शावकों ने जन्म लिया है और इनमें से 7 बच नहीं सके। भारत में प्रॉजेक्ट कूनो को सवा दो साल से ज्यादा हुए हैं।

ज्यादा सतर्कता | मार्च 2023 में भी चीतों को बाड़े से जंगल में छोड़ा गया था, लेकिन एक चीते की मौत, संक्रमण और सीमाई इलाकों में घुसने जैसी समस्याएं आ गईं। इसकी वजह से चीतों को वापस बाड़े में डालना पड़ा था। इस बार प्रशासन ज्यादा सतर्क है और पड़ोसी राज्यों, राजस्थान व उत्तर प्रदेश के साथ भी तालमेल बनाया गया है।

उम्मीद की वजह | दुनिया के ज्यादातर अभयारण्यों में चीतों के जीवन का अनुभव अच्छा नहीं रहा, लेकिन भारत में इतने कम समय में उनकी तेजी से बढ़ती संख्या उम्मीद जगा रही है। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चीतों को देश में वापस लाने की पहल की, तब अनुभव, अनुसंधान और ढांचागत सुविधाओं की भारी कमी थी। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि भारत 1952 में आधिकारिक रूप से चीतों को खो दिया था।

कॉमन रूम

नियमों की अड़चन | 1952 के बाद चीतों को दोबारा भारत लाने के लिए ठोस प्रयास नहीं हुआ। 2009 में पहली बार भारतीय वन्यजीव ट्रस्ट ने एक प्रस्ताव तैयार किया, लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्वायत्तानंतरण की सख्त शर्तों और कानूनी अड़चनों के कारण सरकारें निर्णय लेने से हिचकती रहीं। 'इंटरनैशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (IUCN)' ने पहले ही चीतों को संकटग्रस्त प्रजाति में डाल रखा था। लेकिन पीएम मोदी इस मामले में अलग साबित हुए। 17 सितंबर 2022 को पहले नामीबिया से 8, फिर 18 फरवरी 2023 को दक्षिण अफ्रीका से 12 चीते लाए गए। दक्षिण अफ्रीका से कुल 18 चीतों का करार हुआ है। 6 चीते अभी आने बाकी हैं।

प्राकृतिक संतुलन | वन्यजीव विशेषज्ञ मानते हैं कि चीतों की मौजूदगी देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ-साथ वन्यजीव संतुलन और घासभूमि (ग्रासलैंड) पारिस्थितिकी तंत्र के लिए भी बेहद जरूरी है। चीतल और सांभर जैसे जानवर घास व झाड़ियों को तेजी से खत्म करते हैं। इनकी संख्या बढ़ने से प्राकृतिक संतुलन गड़बड़ हो जाएगा। चीते इनका शिकार करते हैं और इस तरह संतुलन बना रहता है। खैर, कूनो की सफलता का असली पैमाना चीतों की वंश वृद्धि होगी।

THE SPEAKING TREE

और पढ़ने के लिए देखें

www.speakingtree.nbt.in

पूजना ही काफ़ी नहीं, नारी शक्ति को समझें भी

सुभाषिणी सिन्हा

अपने आसपास, परिजनों से अपने बुजुर्गों और गुरुजनों से सुना, उसी के आधार पर कुछ जिज्ञासाएं उठीं। हम हमेशा नारी शक्ति की बात करते हैं। नारी की ही पूजा नवरात्रि में होती है। कलश स्थापना से लेकर कंजक तक नारी के हर रूप की उपासना होती है। लेकिन, मंदिरों में पूजा या आरती होती है, तो वहां किसी महिला को पूजा करते या करवाते नहीं देखा जाता, ऐसा क्यों ?

हर भगवान के नाम के पहले उनकी पत्नी का नाम होता है, जैसे उमापति-महादेव, लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम, राधे-श्याम। चित्रों में भी समर्पण भाव नारी का ही दिखता है। चरण दबाती हुई लक्ष्मी जी। सीता जी तो हमेशा श्रीराम के पीछे चलती हुई ही दिखाई गई हैं और माता सती ने अपने मन का किया, तो उन्हें अग्नि में भस्म होना पड़ा। शिव के तांडव रूप के फलस्वरूप माता सती के विभिन्न अंग अलग-अलग जगहों पर गिरे। आज उन जगहों पर शक्तिपीठ हैं। यानी तब भी नारी परतंत्र थी।

कथावाचक इस प्रसंग के बारे में कहते हैं कि देवी सती ने शिवजी की बात नहीं मानी, तो देखो क्या हुआ। सीता जी ने हिरण को पकड़ कर लाने की बात कही। उस प्रसंग में यह जरूर कहते हैं कि नारी को जिद नहीं करनी चाहिए, वरना परिणाम अच्छा नहीं होता। माता सीता ने साधु वेशधारी रावण को भिक्षा देने की नियत से लक्ष्मण रेखा को पार किया और उनका हरण हो गया। इस प्रसंग की व्याख्या में कहा जाता है कि सीता जी ने लक्ष्मण की बात मानी होती, तो ऐसा न होता। कोई भी सीता माता के पक्ष में बात नहीं करता कि उस परिस्थिति उन्हें जो सही लगा था, उन्होंने वही किया। यहां तक सुना जाता है कि सीता जी अगर श्रीराम के साथ वनवास जाने की जिद नहीं करतीं, तो लंका युद्ध होता ही नहीं। उन्होंने सारी सुविधाओं और सुखों का त्याग करके श्रीराम का साथ निभाना धर्म समझा। बदले में मिली उपेक्षा। हृदय विचलित हो जाता है यह सोचकर कि श्रीराम ने रात के अंधेरे में गर्भवती सीता माता को राज्य से दूर चले जाने का आदेश दिया, वह भी किसी से मंत्रणा किए बगैर।

ऐसा ही एक चरित्र महाभारत में द्रौपदी का है। दीन, असहाय नारी जिसके शूरवीर पांच पति, पर कहीं कोई संरक्षण नहीं। पांचाली के सभी पति अपने-अपने क्षेत्र में शूरवीर होंगे, लेकिन न तो अपने पुत्रों की रक्षा कर पाए और न ही अपनी पत्नी की लाज की।

आज की नारी बहुत हद तक अपना संरक्षण खुद कर पाती है। युद्ध और द्वंदों के बीच वह अपना मार्ग बनाती है। यह सोचकर बहुत खुशी होती है।

नवभारत टाइम्स, ५, २०८८८८८ नवभारत बुल्डिंग: विभिन्न जानुसी के लिए संपूर्ण पत्र: प्रधान कुलकार: कुल: प्रोमोशन: नवभारतीयाँ मैग्ज़ीन, कॉर्पोरेट पत्र आपकी विज्ञापन के लिए हमारे नाम हल: / नवभारत टाइम्स नया मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ में प्रकाशित तथा **राकेश कोहली द्वारा, नवभारत टाइम्स, कॉर्पोरेशन प्रेस मार्केटिंग** और पत्र नं. ३०, सेक्टर ७०-७१, इंडस्ट्रीयल एरिया, हरियाणा पंजाब राजधानी, चंडीगढ़ से मुद्रित। फोन: ०१७२-५०००००० फैक्स: ०१७२-५०००००१ मोबाइल अनावेश / प्रायन्त्री सेवेरेज: पूर्व: पूर्वी ८०८८८८ (विशेष रेल मूल्य : 1 रु. और अधिक) विमान में मूल्य मूल्य : सेल्फ के प्रतिशत : विज्ञापन : ०१७२-, ०१७२-, ०१७२-, ०१७२-, ०१७२-, (दिल्ली मार्केट) : अन्तिम पेज (इस पेज में प्रकाशित समाचार सामग्री के चयन एवं संपादन मेरु में.एस.बी. एक्ट के अन्तर्गत स्वतंत्र)

अमर उजाला
प्रवाह
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948
नई दिल्ली ■ बुधवार, 5 मार्च 2025

धर्म और विज्ञान विपरीत नहीं हैं, लेकिन विज्ञान अभी इतना नया है कि उसे यह समझने में वक्त लगेगा। -डैन ब्राउन

तीन संस्थाओं की संयुक्त रिपोर्ट के अनुसार, देश में कर्ज लेने वाली महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है, जो अर्थव्यवस्था के बदलते स्वरूप को इंगित करने के साथ यह संकेत भी देती है कि अगर महिलाओं को अवसर व संसाधन मिलें, तो वे आर्थिक प्रगति में बेहतर योगदान दे सकती हैं।

अर्थव्यवस्था में महिलाएं

नीति आयोग के महिला उद्यमिता मंच, ट्रांस यूनियन सिबिल और माइक्रोसेव कंसल्टिंग की ताजा रिपोर्ट देश में महिलाओं की वित्तीय प्रगति और ब्रेकिंग जागरूकता में उल्लेखनीय वृद्धि को उजागर करती है, जो सशक्त होती महिलाओं का प्रतीक तो है ही, इससे आर्थिक वृद्धि में उनके बढ़ते योगदान की झलक भी मिलती है। रिपोर्ट का यह कहना दिलचस्प है कि पिछले पांच वर्ष में कर्ज लेने वाली महिलाओं की संख्या तीन गुना हुई है, लेकिन इससे भी ज्यादा प्रेरित करने वाला तथ्य यह है कि इनमें से 60 फीसदी महिलाएं अर्ध-शहरी या ग्रामीण क्षेत्रों से हैं। उल्लेखनीय है कि महिलाएं देश की आधी आबादी का निर्माण करती हैं, इसके बावजूद सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में उनकी भागीदारी महज 18 फीसदी है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के अनुसार, अगर देश की श्रमशक्ति में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के बराबर हो जाए, तो जीडीपी में 27 फीसदी तक की वृद्धि हो सकती है। पिछले कुछ वर्षों में जनधन योजना, मुद्रा योजना और स्टैंड-अप इंडिया जैसी पहलों ने महिलाओं को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ने और उन्हें स्व-रोजगार के अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा, डिजिटल भुगतान की पहुंच बढ़ने से भी छोटे शहरों की महिलाओं के लिए कर्ज लेना और उसे प्रबंधित करना आसान हो गया है। इसकी पुष्टि नीति आयोग की रिपोर्ट से भी होती है, जिसके अनुसार देश में व्यावसायिक उद्‌देश्य की खातिर लिए जा रहे कर्ज में महिलाओं की हिस्सेदारी 14 फीसदी बढ़ी है। बात सिर्फ कर्ज लेने की नहीं, रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि वे नियमित रूप से अपने क्रेडिट स्कोर पर भी नजर रख रही हैं। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज की कुछ ही महीने पहले की रिपोर्ट बताती है कि देश के शेयर बाजार में निवेश करने वाला हर चौथा निवेशक महिला ही है। यह स्थिति न केवल महिलाओं के बढ़ते आत्मविश्वास को, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था के बदलते स्वरूप को भी परिलक्षित करती है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता परिवारों की आर्थिक स्थिरता के लिहाज से ही नहीं, समाज के समग्र विकास के लिए भी जरूरी है। बैंकों से कर्ज ले रही महिलाओं की तादाद में उल्लेखनीय बढ़ोतरी के बावजूद वित्तीय नियमों व बैंकिंग के तौर-तरीकों की बेहतर जानकारी न होने से खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी संख्या में महिलाओं को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में, उनमें वित्तीय साक्षरता को और प्रोत्साहन दिए जाने की जरूरत है। बहरहाल, नीति आयोग व अन्य संस्थाओं की यह संयुक्त रिपोर्ट यह सकारात्मक संकेत जरूर देती है कि अगर महिलाओं को उचित अवसर व संसाधन मिलें, तो वे न केवल अपनी, बल्कि पूरे देश की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

समाज अपने अनुभवों में जीता है

महाकुंभ बताता है कि आप कितने ही 'तर्कवादी' व 'वैज्ञानिक' हो जाइए, लेकिन जो समाज अपने अनुभवों में जीता है, उसके लिए उसके 'अनुभव' और 'भावनाएं' ही 'तर्क' और 'विज्ञान' होते हैं। लेकिन महाकुंभ के कथित 'तर्कवादी' हिंदी की भक्तिकालीन सांस्कृतिक कविता को जरा भी नहीं समझे।

सुधीश पचौरी
आलोचक

आज के मीडियामय समय में माना जाता है कि 'जहां भीड़ तहां एक्शन' और 'जहां एक्शन वहां मीडिया'...। इस तर्क से हर मीडिया 'मेला प्रेमी' होता है, 'उत्सव' या 'कार्निवाल पसंद' होता है और ऐसा हर मेला या कार्निवाल अपने साथ अपनी 'जीवनशैली' भी लेकर आता है। इस तरह वह जनता के 'सामूहिक मनोविज्ञान' की अभिव्यक्ति होता है। वह उसकी ताकत का प्रदर्शन भी होता है, जो आज के 'मल्टीमीडिया' में '24 गुना ?' के हिसाब से उतना ही 'विराट' व 'विहंगम प्रदर्शन' या 'शो' बन जाता है। मीडिया में दिखती 144 बरस बाद आए 'महाकुंभ' की भीड़ 'दौहरा' अनुभव कराती है। वह एक ही साथ 'डराती' है और 'रिझाती' है। हम उसको लहराता देख डरते हैं कि कहीं कुछ अनहोनी न हो जाए, लेकिन खुश भी होते हैं, क्योंकि ऐसी भीड़ हमें 'अभय' और 'एकजुटता' का अनुभव कराती है।

पैंतालीस दिन लंबे महाकुंभ में हर रोज एक से डेढ़-दो करोड़ की संख्या में आती, संगम में सहज अनुशासित भाव से 'आस्था की डुबकी' लगाती और उतनी ही शांति से वापस जाती भीड़ ने अपने सद्‌व्यवहार से दुनिया के मीडिया को आकर्षित और अभिभूत किया है। 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' ने भी कई नए और 'अटूट' रिकॉर्ड दर्ज किए हैं। महाकुंभ का ऐसा कुशल व सफल प्रबंधन बहुत से 'मैनेजमेंट संस्थानों' के लिए स्वतंत्र अध्ययन का विषय हो सकता है। मौलों लंबे जाम में कंधे पर अपने सामान का बोझ उठाकर, दस-बीस किलोमीटर पैदल चलते अनंत जनों का संगम में 'आस्था की डुबकी' लगाना, पुण्य कमाना और हजार तरह की परेशानियों को सह कर भी शिकायत न करना और एक नए पवित्रभाव भाव से वापस चले जाना -'ऐसी उदारता, सहजता, सहनशीलता, विनम्रता और शालीनता गहरा आदर भाव पैदा करती है।

फिर भी कुछ 'विवादी तत्व' महाकुंभ को भी विवाद में ले आते हैं। लगता है कि ऐसे लोग 'महाकुंभ' के पौराणिक व परंपरागत अर्थ और महात्म्य को नहीं जानते या जानकर भी नहीं मानते। ऐसे लोग महाकुंभ जैसे सांस्कृतिक-धार्मिक आयोजन को भी सत्तात्मक राजनीति से जोड़कर देखते हैं और इन आती भीड़ों को 'हिंदुत्ववादी भाव' की भीड़ मानते हैं और कई इसे यूपी में कुछ समय बाद होने वाले चुनावों से जोड़कर देखते हैं। इनके बरक्स अधिसंख्य जन, जो महाकुंभ को अपनी 'सनातन संस्कृति' का हिस्सा मानते हैं, वे इसे देश की 'स्वभावगत एकता की भावना' का प्रतीक मानते हैं। इतने बड़े समाज को शांति से एक-दूसरे के साथ आता-जाता देख, एक-दूसरे की मदद करता देख और कष्ट पाकर भी शिकायत न करता देख, लगता है कि जब लोग अपने धार्मिक अनुभव में जीते हैं, तब वे बेहद 'सहनशील' और 'अनुशासित' होते हैं। यौवीआईपीज, विविध अखाड़ों के साधुओं और संतों के 'विशेष स्नानों' की चर्चा छोड़ दें और सिर्फ आम हिंदू समाज की चर्चा करें, तो कहना होगा कि महाकुंभ में रोज आती, डुबकी लगाती और जाती इस 'विराट भीड़' का दैनिक आचरण आपसी मित्रता व सहयोग का अतुलनीय उदाहरण है!

सोचा गया था कि 144 बरस बाद आए इस महाकुंभ के पैंतालीस दिन में लगभग पैंतालीस करोड़ लोग आएंगे, लेकिन आए छियासठ करोड़ से भी अधिक...इतनी लंबी अवधि के दौरान अचानक हुई एक-दो दुर्घटनाओं ने आयोजकों को अवश्य दुखी किया और मीडिया में क्षणिक राजनीति भी हुई, लेकिन ऐसी घटनाओं से हतोत्साहित न होकर श्रद्धालु और बड़ी संख्याओं में आते रहे तथा 'आस्था की डुबकी' लगाकर लौटते रहे। विपक्ष के कई नेताओं ने ऐसे 'श्रद्धालुओं' को यह कहकर हतोत्साहित भी करने की कोशिश की कि गंगा और संगम का पानी 'प्रदूषित' और 'हानिकारक' है, लेकिन आम श्रद्धालुओं ने उनकी एक न सुनी। ऐसे 'आधे अधूरे तर्कवादी' व 'कथित सेक्यूलरवादी' लगता है, आम 'हिंदुओं' की 'सांस्कृतिक बनावट और बुनावट' को नहीं जानते। अगर जानते होते, तो संत रविदास जी की उस प्रसिद्ध उक्ति के असली मर्म को भी समझ लेते और 'गंगा का पानी नहाने योग्य नहीं' प्रचारित कर, लोगों को 'महाकुंभ' में आने से रोकने की कोशिश न करते। संत रविदास जी की उक्ति है कि 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' यानी 'अगर आपका मन मानता है, तो उस कठौती का पानी भी गंगाजल है, जिसमें चमड़ा भिगोया जाता है...यह भी उतना ही पवित्र है, जितना कि गंगाजल...। इसका मतलब यह है कि 'पवित्रता' या 'अपवित्रता' सब 'मन के माने भाव' हैं। ये किसी लेबोरेटरी में नहीं बनते-बिकते।

'पवित्रता' या 'अपवित्रता' आध्यात्मिक विचार हैं। अगर महाकुंभ के कथित 'तर्कवादी' हिंदी की भक्तिकालीन सांस्कृतिक कविता को जरा भी समझते, तो उनको 'आम हिंदू' की 'मनोवृत्ति' समझ में आ जाती। अगर वे सूरदास के पद की ये चार-पांच पंक्तियां पढ़ लेते, तो गंगा के 'पवित्र भाव' के बारे में अच्छी तरह समझ जाते। ये कहती हैं-*एक लोहा पूजा में राखत, एक घर बधिक परो/यह दुविधा पारस नहीं, जानत कंचन करत खरो/ एक नदिया एक नारि कहावत दोनों ही मैल भरो/दोउ मिलि सब एक बरन भए सुरसरि नाम परो/एक जीव एक ब्रह्म कहावत सूर स्याम झगरो।*

महाकुंभ बताता है कि आप कितने ही 'तर्कवादी' व 'वैज्ञानिक' हो जाइए, लेकिन जो समाज अपने अनुभवों में जीता है, उसके लिए उनके 'अनुभव' और 'भावनाएं' ही 'तर्क' और 'विज्ञान' होते हैं। यही उनका 'सांस्कृतिक व्यवहार' होता है और यही उनका 'सांस्कृतिक तर्क' होता है। जो हिंदुओं की इस 'भक्ति भावना' की 'सनातनता' को नहीं जानते, जो 'जीव और ब्रह्म' के संबंध को नहीं जानते, जो 'द्वैताद्वैत' के जटिल संबंध को नहीं जानते, उनके लिए 'गंगा' और 'संगम' भी एक 'खाटर बॉडी' मात्र है, जिनको उन्हीं की 'आधुनिक औद्योगिक शहरी संस्कृति' ने 'दूषित' किया है और अब कह रहे हैं कि इस नदी का पानी गंदा है, इसमें नहाना मना है...। इसीलिए बहुत से 'हिंदू' आरोप लगाते हैं कि ऐसे लोग हिंदू संस्कृति के दुश्मन हैं। क्या पता कि ऐसे ही 'निंदकों' के 'प्रतिकार' में इस महाकुंभ में इतने रिकॉर्ड तोड़ श्रद्धालु आए, ताकि दुनिया जान ले कि 'समस्त हिंदू समाज एक है'। यही नहीं, महाकुंभ ने एक 'नया हिंदू विमर्श' भी पैदा किया है कि हे पश्चिमी आधुनिकता! जिसे तूने दूषित किया, वह अब भी हमारे लिए 'पवित्र' है, क्योंकि यही अपनी 'सुरसरि' है, जो बहते-बहते हर एक को पवित्र करती रहती है और विज्ञान भी तो यही कहता है कि बहता हुआ जल अपने आप को पवित्र करता रहता है।

edit@amarujala.com

जीवन धारा

बियाना वीरट

जो चीजें आपके लिए मायने नहीं रखतीं, उनसे छुटकारा पाएं। यह इतना जरूरी इसलिए है कि चीजें कुछ परिभाषित करती हैं, खासकर जब हम उन्हें इस मंशा से खरीदते हैं कि वे हमें कुछ अलग महसूस करवाएंगी।

पर्याप्त होने के लिए संपूर्ण होना जरूरी नहीं

यह गिनती करें कि अपनी मनचाही चीज पाने के बाद आपको कितनी बार वाकई खुशी महसूस होती रही है। अपनी पसंद का रिश्ता बनाने के बाद क्या हुआ? क्या हुआ, जब आपको वह नौकरी मिली, जिसकी आपने चाह की थी? जब आपने ज्यादा पैसा कमाया, तो क्या हुआ? इस बात की संभावना है कि हालात अलग रहे होंगे, लेकिन आनुपातिक रूप से वे अच्छे और बुरे रहे होंगे। अब उन सभी अपरिपूर्ण लोगों की सूची बनाएं, जिन्हें आप जानते हैं और जिनके पास प्रेम था, जिनके पास रोमांटिक साथी, अच्छे दोस्त और नौकरियां थीं, जिनकी आप केवल कल्पना कर सकते थे। उन लोगों की सूची बनाएं, जो पारंपरिक रूप से आकर्षक, आध्यात्मिक रूप से डांवाडोल और अपरिपूर्ण हैं, फिर उन चीजों की फेहरिस्त तैयार करें, जो वैसा होने के बावजूद उनके पास थीं। अब इसे अपना निजी साक्ष्य बनाएं कि आपको पर्याप्त होने के लिए संपूर्ण होना जरूरी नहीं है।

खुद से पूछें कि अगर सोशल मीडिया न होता और किसी को पता न चलता, तो आप क्या करते? आप इस शनिवार क्या करते, आज की रात क्या कर रहे होते? आपके कैरियर लक्ष्य क्या होते? आप वास्तव में कितनी तस्वीरें लेते? इसलिए खुशनुमा पलों को याद रखने के लिए तस्वीरें लें, न कि यह साबित करने के लिए कि आप अच्छे लग रहे थे। जब आप अच्छा महसूस कर रहे हों या फिर अपने साथ सुकून से हों या फिर किसी तरह की कोई नई चीज आपके सामने आ रही हो, तो बस आपके सामने जो कुछ है, उसकी तस्वीरें लें, चाहे वे सोशल मीडिया के लायक हों या नहीं। कुछ समय बाद जब आप उन तस्वीरों को देखेंगे, तो आपको वही सब महसूस होगा, जो उस वक्त हुआ था। आप देखेंगे कि अपने लिए मायने रखने वाले पल को कैद करने और बाकी लोगों के लिए पलों को समेटने के लिए भावनात्मक अंतर होता है। इसलिए जो चीजें आपके लिए मायने नहीं रखतीं, उनसे छुटकारा पाएं। यह इतना जरूरी इसलिए है कि चीजें कुछ परिभाषित करती हैं, खासकर जब हम उन्हें इस मंशा से खरीदते हैं कि वे हमें कुछ अलग महसूस करवाएंगी। हमारी चीजें हमारे अनुभवों को तैयार करती हैं। चीजों को लेकर खुद का आकलन करना भी बहुत जरूरी है। यहां बात यह नहीं है कि कम से कम चीजें रखें, बल्कि यह है कि सिर्फ उन चीजों को रखें, जिनका आपके लिए कोई वास्तविक प्रयोजन है या फिर जिनकी कोई वास्तविक सार्थकता है। इसलिए तय तो आपको ही करना होगा कि किस चीज के लिए आप पर्याप्त हैं या नहीं और यही कारण है कि आप ही यह फैसला करते हैं कि जिन लोगों के पास कुछ है, जिसके वे लायक हैं, वे यही लोग हैं, जो उन चीजों को लेकर एहसानमंद महसूस करते हैं। न ज्यादा और न ही कम। ('101 एसेंस टैट मिल चेंज द वे यू थिंक' के अनुदित अंश)

कोशिश करते रहें

सूत्र

किस के पास क्या है, इससे चिंतित होने के बजाय आपको यह मानना चाहिए कि सब कुछ अच्छे के लिए है। अगर इस नजरिये को अपना लिया, तो आप निश्चिंत हो जाएंगे। लेकिन याद रखें कि जीवन 'निश्चिंत' होना ही नहीं है, बल्कि कोशिश करने से जुड़ा हुआ है, क्योंकि जिन लोगों के पास खुद की पसंद की जिंदगी है, वे भी कोशिश करते रहते हैं।

दूसरा पहलू

एक शोध के अनुसार, टूथपेस्ट मुंह में बैक्टीरिया के जटिल इकोसिस्टम-ओरल माइक्रोबायोम-पर असर डालता है।

तो क्या टूथपेस्ट से दांत साफ करना बंद कर दें

दांतों को ब्रश करने का उद्‌देश्य सांसों को तरो-ताजा करना और उन्हें कैविटी से बचाना होता है, लेकिन क्या आपको पता है कि टूथपेस्ट मुंह में बैक्टीरिया के जटिल इकोसिस्टम-ओरल माइक्रोबायोम-पर क्या असर डालता है? हालिया शोध में पता चला है कि ओरल माइक्रोबायोम हमारी पूरी सेहत के लिए कितना महत्वपूर्ण है। एक संतुलित माइक्रोबायोम नुकसानदायक बैक्टीरिया को नियंत्रित करने के साथ ही पाचन में मदद करता है और मसूड़ों की सुरक्षा भी करता है। क्या टूथपेस्ट इस संतुलन को सहायता देता है, या इसको बाधित कर सकता है? क्या भविष्य का टूथपेस्ट इस तरह से तैयार किया जा सकता है, जो ओरल माइक्रोबायोम के साथ मिलकर काम करे, न कि हानि पहुंचाए।

नियामह कॉफी

एक संतुलित माइक्रोबायोम नुकसानदायक बैक्टीरिया को नियंत्रित करने के साथ ही पाचन में मदद करता है और मसूड़ों की सुरक्षा भी करता है।

शरीर में मुंह सबसे घनी आबादी वाले सूक्ष्मजीवों के आवासों में से एक है यानी बैक्टीरिया की 700 प्रजातियों से ज्यादा का घर। ये बैक्टीरिया न केवल दांतों और मसूड़ों की सतह पर बायोफिल्म में रहते हैं, जो एक पिच्छिला, संरंध्र समुदाय है, जो फायदेमंद और हानिकारक दोनों हो सकता है, बल्कि हमारी लार में भी पनपते हैं। टूथपेस्ट का मुख्य काम बैक्टीरिया को सीधे मारना नहीं है, बल्कि यह बायोफिल्म को अस्त-व्यस्त कर देता है, जो हानिकारक बैक्टीरिया को पनपने का अवसर देती है। ब्रश करने से यांत्रिक रूप से दांतों और मसूड़ों से यह बायोफिल्म हट जाती है, जबकि टूथपेस्ट में मौजूद अपघर्षक इसे और भी ज्यादा तोड़ने में सहायक होते हैं। कई टूथपेस्ट में फ्लोराइड मिला होता है, जो दंतक्षय और कैविटी को बचाने में मदद करता है। रोचक बात यह है कि फ्लोराइड खुद बैक्टीरिया को नहीं मारता, लेकिन यह स्ट्रेप्टोकोकस म्यूटेंस जैसे एसिड-उत्पादक बैक्टीरिया के लिए कठिनाई पैदा करता है, जो दांतों की सड़न और क्षति का मुख्य कारक है।

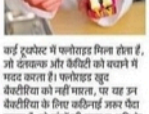

कई टूथपेस्ट में फ्लोराइड मिला होता है, जो दंतक्षय और कैविटी को बचाने में मदद करता है। फ्लोराइड खुद बैक्टीरिया को नहीं मारता, पर यह उन बैक्टीरिया के लिए कठिनाई जरूर पैदा करता है, जो दांतों की सड़न व क्षति के कारक हैं।

अब सवाल यह है कि हानिकारक बैक्टीरिया को नुकसान पहुंचाने वाले ये टूथपेस्ट क्या लाभप्रद बैक्टीरिया को भी नुकसान पहुंचाते हैं। फिलहाल, बैक्टीरिया को नुकसान पहुंचाने वाले ट्राइक्लोसन युक्त टूथपेस्ट को सुरक्षा चिंताओं की वजह से कई देशों में प्रतिबंधित कर दिया गया है। वैज्ञानिक भविष्य के ऐसे टूथपेस्ट की खोज कर रहे हैं, जो हानिकारक बैक्टीरिया को हटाए और लाभदायक बैक्टीरिया का संरक्षण करे, जब तक ऐसा कोई टूथपेस्ट नहीं आता है, तब तक विशेषज्ञ फ्लोराइड युक्त टूथपेस्ट का दिन में दो बार इस्तेमाल करने की सलाह देते हैं, ताकि दांत सुरक्षित बने रहें।

-साथ में आनंदी त्यागु और इसाबेल ओरनाशियो (द कन्वर्सेशन से)

आंकड़े

सौर ऊर्जा क्षमता

भारत ने बीते दस वर्षों में सौर ऊर्जा क्षमता के मामले में 100 गीगावाट के ऐतिहासिक मील के पत्थर को हासिल कर लिया है।

2014	2.82
2019	28.00
2022	54.00
2024	81.81
2025	100.33

आंकड़े सौर ऊर्जा के 31 जनवरी, 2025 तक के, गीगावाट में | स्रोत : MNRE

नर और नारायण को बदरी वन में तपस्या करते हुए देखकर इंद्र ने अप्सरा, काम, वसंत आदि को उनकी तपस्या भंग करने के लिए भेजा, लेकिन कोई सफल नहीं हो सका।

इंद्र को हुआ पछतावा

अंतर्यात्रा
संकलित

भगवान विष्णु ने धर्म की पत्नी मूर्ति से नर और नारायण नाम के दो ऋषियों के रूप में अवतार लिया। वे बदरी वन में रहकर निरंतर तपस्या करने लगे। उनकी उग्र तपस्या देखकर इंद्र के मन में शंका हुई कि ये कहीं मेरे स्वर्ग का राज्य लेने के लिए तो तपस्या नहीं कर रहे। इंद्र ने नर और नारायण की तपस्या भंग करने के लिए अप्सरा, काम, वसंत, शीतल मंद सुगंध वायु आदि को भेजा।

उन सब के कुछ जतन करने के बावजूद जब नर और नारायण की तपस्या भंग नहीं हुई, तो सभी भयभीत होकर कांपने लगे। उनकी यह दशा देखकर नर-नारायण ने कहा कि तुम लोग जरा भी डरो नहीं। यहीं पर रहकर हमारा आतिथ्य स्वीकार करो। उनकी अभय देने वाली वाणी सुनकर इंद्र के भेजे हुए सभी देव, अप्सरा आदि लज्जित हो गए। इसके बाद सभी ने उनसे क्षमा-प्रार्थना की। भगवान ने अपनी लीला दिखाई और सभी देवताओं को माता लक्ष्मी के समान वहां पर अनेक सुंदर स्त्रियां नर और नारायण की सेवा करती हुई दिखीं। नर-नारायण ने देवताओं से कहा, 'तुम लोगों को इनमें से जो भी स्त्री अच्छी लगे, उसे अपने साथ स्वर्ग ले जा सकते हो।' ऋषियों की आज्ञा के बाद उन्होंने उनमें से उर्वशी को लेकर स्वर्ग के लिए प्रस्थान किया। देवताओं ने सभा में पहुंचकर भगवान नारायण की महिमा सुनाई। सच्चाई जानकर इंद्र चकित और भयभीत हो गए। उन्हें अपनी दुर्भावना और कृत्य पर पछतावा हुआ।

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 01 अक्तूबर, 1949

दक्षिण कोरिया का रूस पर हमला करने का आरोप

दक्षिण कोरिया की सरकार ने रूस पर आरोप लगाया है कि वह उत्तरी कोरिया से दक्षिणी क्षेत्रों पर हमले करवा रहा है। आगे इन हमलों के और तेज होने की आशंका है। मित्र देशों की कमेटी न्यूयॉर्क में कोरिया समस्या पर विचार करेगी।

क्या गर्मी तोड़ेगी अब तक के सारे रिकॉर्ड

फरवरी 2025 भारत में पिछले 125 वर्षों में सबसे गर्म था। अप्रैल से जून तक हीटवेव का लंबा दौर चलने की आशंकाएं जताई जा रही हैं।

सीमा जावेद | पर्यावरण

नोडल मौसम एजेंसी, भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अनुसार, वर्ष 2025 में अप्रैल से मई तक आसमान से आग बरसने की आशंका है। एजेंसी के अनुसार, फरवरी 2025 भारत में पिछले 125 वर्षों में सबसे गर्म था। मौसम वैज्ञानिक पहले से ही कह रहे हैं कि इस साल भारत को एक बार फिर तीव्र और लंबे समय तक चलने वाली हीटवेव के 'चरम गर्मी, उमस और लू के मौसम का सामना करना पड़ेगा, जिससे इसके सबसे गर्म साल बनने की प्रबल आशंका है।

पिछले कुछ वर्षों में औसत तापमान में जो क्रमिक वृद्धि हुई है, उसमें जलवायु परिवर्तन की भूमिका से इन्कार नहीं कर सकते। ग्लोबल वार्मिंग ने भारत में सर्दियों की बारिश को भी प्रभावित किया है। गर्मियों का मौसम बड़ा हो गया है और सर्दियों का मौसम छोटा। वर्षों के अनियमित पैटर्न ने पूरे देश में तापमान प्रोफाइल को प्रभावित किया है। जलवायु परिवर्तन दुनिया भर में मौसम और जल विज्ञान, दोनों की चरम सीमाओं को बढ़ा रहा है, जिसके चलते लगातार चरम मौसमी घटनाएं हो रही हैं। वर्तमान में, सभी महाद्वीपों में सामान्य से अधिक तापमान देखा जा रहा है, जो अपेक्षाकृत एक समान ग्लोबल वार्मिंग पैटर्न का संकेत देता है। जब तक हम ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में तेजी से कटौती नहीं करते, मौसम के रिकॉर्ड लगातार टूटते रहेंगे। आईएमडी के आंकड़ों से पता चला है कि फरवरी 2025 में सामान्य की तुलना में आधे से भी कम वर्षा हुई। गौरतलब है कि भारत में साल की शुरुआत में ही हीटवेव का दौर शुरू हो गया है। खास तौर पर पश्चिमी तट, तटीय महाराष्ट्र और गोवा के कुछ हिस्सों में लू के हालात बने।

तटीय शहर मुंबई में 25 और 26 फरवरी को हीटवेव की चेतावनी जारी की गई। 26 फरवरी को मुंबई में अधिकतम तापमान 38.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य औसत से 5.9 डिग्री अधिक था। इन क्षेत्रों में पारा 37 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चला गया है। इस बीच, कर्नाटक और गुजरात के तटीय भागों में भी गर्म और उमस भरा मौसम रहा। यहां तापमान लू की दहलीज को छूने से सम कुछ ही दूर रहा और 35 डिग्री सेल्सियस से 37 डिग्री सेल्सियस के बीच दर्ज किया गया।

क्लाइमेट शिफ्ट इंडेक्स (सीएसआई) के अनुसार, गोवा के पणजी में 25-27 फरवरी के तापमान में कम से कम पांच गुना अधिक वृद्धि हुई है। इसी तरह, इसी अवधि में मुंबई के तापमान में कम से कम तीन गुना अधिक वृद्धि हुई। सीएसआई एक ऐसी प्रणाली है, जो दुनिया भर में स्थानीय दैनिक तापमान पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को मापती है।

जलवायु परिवर्तन के चलते गर्मी, सर्दी और बरसात-सभी मौसम के पैटर्न में भारत में दीर्घकालिक बदलाव आ रहे हैं। जलवायु से जुड़ी आपदाएं साल दर साल विकराल रूप लेती जा रही हैं। जर्मन वॉच द्वारा जारी क्लाइमेट रिस्क इंडेक्स 2025 के अनुसार, 1993 से 2022 के बीच भारत ने 400 से अधिक चरम मौसमी घटनाओं का सामना किया, जिसके चलते 80,000 लोगों की मौत हुई और 180 अरब डॉलर का आर्थिक नुकसान हुआ। यह दुनिया भर में ऐसी घटनाओं से होने वाली मौतों का 10 फीसदी और कुल आर्थिक क्षति का 4.3 फीसदी हिस्सा है।

हीटवेव की वजह से भारत में अन्य प्राकृतिक आपदाओं की तुलना में अधिक लोगों की मौत हुई है। एक रिपोर्ट के अनुसार, साल 2019 और 2020 के बीच हीटवेव के कारण मृत्यु दर में 62.2 फीसदी की वृद्धि हुई है। आईएमडी द्वारा दिए गए आंकड़ों के अनुसार, देश में 2024 की गर्मियों के दौरान 536 हीटवेव दिवस देखे गए। ये 2010 के बाद से सबसे अधिक हैं। और अब देखना है कि इस साल ऐसे कितने चरम गर्मी और उमस से भरे दिनों का सामना देश के लोगों को करना पड़ेगा। रिपोर्ट के अनुसार, 2025 में गर्मी का कहर राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु के कुछ हिस्सों सहित देश के अधिकांश हिस्सों पर टूटना शुरू होता दिख रहा है।

हीटवेव की स्थिति आम तौर पर मार्च और जून के बीच पैदा होती है और कुछ दुर्लभ मामलों में जुलाई तक भी जारी रहती है। भारत में तटीय क्षेत्रों के लिए हीटवेव तब घोषित की जाती है, जब अधिकतम तापमान सामान्य से 4.5 डिग्री सेल्सियस या उससे ज्यादा हो, बशर्ते वास्तविक अधिकतम तापमान 37 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक हो। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, मौजूदा गर्म मौसम बारिश की अत्यधिक कमी वाले सर्दियों के मौसम का परिणाम है, जो जलवायु परिवर्तन की देन है।

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 18 अंक 15

अमेरिकी क्रिप्टो भंडार की गुत्थी

अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने जब से घोषणा की है कि अमेरिका क्रिप्टोकरेंसी का अहम भंडार तैयार करेगा तभी से क्रिप्टो बाजार दौड़ने लगा है। इससे व्यापक आर्थिक हलकों में उलझन और चिंता पसर गई है। ट्रंप का कहना है कि इस भंडार में पांच अलग-अलग क्रिप्टोकरेंसी बिटकॉइन, इथिरियम, रिपल, सॉल और एडा रहेंगी। भारत और अमेरिका के पास पेट्रोलियम के ऐसे ही रणनीतिक भंडार हैं, जो इसलिए तैयार किए जाते हैं ताकि बाजार में मांग और आपूर्ति का असंतुलन बनने पर हालात संभाले जा सकें। ऐसी स्थिति की कल्पना करना भी मुश्किल है, जहां बाजार को सहारा देने के लिए क्रिप्टोकरेंसी भंडार का इस्तेमाल करना पड़े। दुनिया की आरक्षित मुद्रा जारी करने वाला अमेरिका अगर ऐसा भंडार बना रहा है तो इसका साफ मतलब है कि वह डॉलर में भरोसे की कमी को मान रहा है।

कुछ सरकारों को क्रिप्टोकरेंसी से कोई दिक्कत नहीं है और कुछ के पास बड़ी मात्रा में क्रिप्टोकरेंसी हैं। उदाहरण के लिए अमेरिका के ही पास करीब 17 अरब डॉलर के बराबर ऐसी क्रिप्टोकरेंसी है, जो उसने अपराधियों से जब्त की है। चीन के पास करीब 19 अरब डॉलर मूल्य की क्रिप्टोकरेंसी है। ऐसे में भंडार तैयार करने की घोषणा से दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों और सरकारी वेल्थ फंडों को इसमें दिलचस्पी हो सकती है। उस लिहाज से देखें तो इन डिजिटल मुद्राओं को खुद ही स्वीकार्यता मिल रही है, जिससे ये लंबे समय तक दौड़ सकती हैं। चूंकि सोना हटाने पर अमेरिका के पास ज्यादा विदेशी मुद्रा भंडार नहीं है, इसलिए उसके पास क्रिप्टोकरेंसी का बड़ा जखीरा है, जिसे इस भंडार में रखा जा सकता है। परंतु भंडार तैयार होने के साथ ही कुछ असहज करने वाले सवाल पैदा हो जाएंगे।

अमेरिका में कमोडिटी का 'रणनीतिक भंडार' कांग्रेस के एक अधिनियम के जरिये बनाया जाता है और उस पर कार्यपालिका का नियंत्रण रहता है, जबकि मुद्रा पर फेडरल रिजर्व जैसे स्वतंत्र संस्थानों का नियंत्रण होता है। अगर विधायी प्रक्रिया अपनाई गई तो राष्ट्रपति बाजार संचालन का आदेश दे सकेंगे। अमेरिका सरकार चाहेगी तो क्रिप्टोकरेंसी बाजार पर आसानी से दबदबा कायम कर सकती है। बिटकॉइन, इथिरियम और अन्य सभी क्रिप्टोकरेंसी के अल्गोरिद्म अलग-अलग हैं मगर उन सभी को कंप्यूटर पर गणित के जरिये तैयार किया जाता है। चूंकि ये सीमित मात्रा में ही तैयार हो पाती हैं, इसलिए पता रहता है कि कितनी करेंसी आएगी। मांग में तेज इजाफा हुआ तो कीमतें चढ़ सकती हैं। बड़ी मात्रा में इन्हें बेचा गया तो कीमत धड़ाम हो जाएंगी क्योंकि बाजार में मांग से ज्यादा क्रिप्टोकरेंसी उपलब्ध होगी। ट्रंप संपत्तियों की सूची (या अपने कर विवरण) जारी करने की मांग को लगातार खारिज करते रहे हैं मगर सब जानते हैं कि क्रिप्टोकरेंसी में उनका निवेश है। उनके करीबी सलाहकार ईलॉन मस्क का भी क्रिप्टोकरेंसी में निवेश है। अमेरिकी सरकार के संसाधनों के जरिये क्रिप्टोकरेंसी बाजार को प्रभावित करने की क्षमता हितों का भारी टकराव पैदा कर सकती है। सीधे शब्दों में कहें तो ट्रंप और उनके सहयोगी इसके जरिये और भी अमीर बन सकते हैं।

बिटकॉइन तो पूरी तरह विकेंद्रीकृत है और उसकी ब्लॉकचेन का कोई मालिक नहीं है मगर रिपल, सॉल और एडा की ब्लॉकचेन को निजी संस्थाएं चलाती हैं। इन निजी कंपनियों का अमेरिकी सरकार से कोई रिश्ता हुआ तो मामला और भी पेचीदा हो सकता है। इन खतरों के अलावा बुनियादी सवाल यही है: ऐसे रणनीतिक भंडार बनाने का आर्थिक औचित्य अब तक सामने नहीं आया है। अमेरिका के लिए खास तौर पर यह सच है क्योंकि वह दुनिया की आरक्षित मुद्रा जारी करता है और किसी भी विदेशी कर्ज को डॉलर छापकर निपटा सकता है। क्रिप्टो भंडार रखने की एक ही वजह हो सकती है - भविष्य में डॉलर का दबदबा कमजोर होने की आशंका। यही वजह है कि क्रिप्टोकरेंसी भंडार बनने भर से डॉलर में भरोसा कमजोर हो सकता है।

जिम्मेदारी भरे नियमन हैं सुधारों की कुंजी

अब विनियमन पर जोर दिया जा रहा है, इसलिए सरकारी नियम-कायदे तैयार करते समय नौ बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए। बता रहे हैं एम एस साहू और सुमित अग्रवाल

आर्थिक समीक्षा में इस बार स्पष्ट संदेश दिया गया है: 'रास्ता छोड़ो।' इसमें वृद्धि की रफ्तार तेज करने के लिए आर्थिक आजादी की वकालत की गई है। इसके लिए समीक्षा में प्रस्ताव है, 'इस बात की व्यवस्थित समीक्षा की जाए कि नियम-कायदे कितने किफायती हैं और उसके बाद व्यवस्थित तरीके से विनियमन किया जाए।' समीक्षा में देखना होगा कि नियमों के अनुपालन से कितना वित्तीय बोझ पड़ रहा है, दूसरी किन गतिविधियों पर असर पड़ रहा है, राज्य की कितनी क्षमता उनमें लग रही है और उनके अवांछित परिणाम क्या हैं। यह बात करीब एक दशक से कही जा रही है मगर पिछले कुछ साल में इस पर ज्यादा ध्यान गया है क्योंकि दिखने लगा है कि जरूरत से ज्यादा नियमन आर्थिक वृद्धि के लिए कितना खराब है। इस समय विनियमन की मांग उतनी ही तेज है, जितनी 1990 के दशक में नियंत्रण खत्म करने की मांग थी, जिसने उस दशक में भारत के आर्थिक सुधारों को आकार दिया था।

वित्त मंत्री ने 2023-24 के अपने बजट भाषण में वित्तीय क्षेत्र नियामकों से मौजूदा नियमों की व्यापक समीक्षा का अनुरोध किया था ताकि उन्हें, 'सहज, सरल बनाया जा सके और अनुपालन की लागत कम की जा सके।' उनका सुझाव था कि वित्तीय क्षेत्र के उपयुक्त नियमन के लिए नियम बनाते समय और सहायक निर्देश जारी करते समय जनता से मशविरा किया जाए। इसी को आगे बढ़ाते हुए 2025-26 के बजट में नियामकीय सुधारों के लिए उच्चस्तरीय समिति बनाने का प्रस्ताव रखा गया है, जो वित्तीय क्षेत्र के अतिरिक्त बाकी सभी क्षेत्रों के नियम-कायदों की समीक्षा करेगी। साथ ही बजट में मौजूदा वित्तीय नियमों और सहायक निर्देशों के प्रभाव की पड़ताल के वास्ते एक प्रक्रिया भी लाई गई है। प्रतिस्पर्द्धा (संशोधन) अधिनियम 2023 ने इसी एजेंडा पर बढ़ते हुए तय अंतराल पर प्रतिस्पर्द्धा नियामक द्वारा नियमों की समीक्षा अनिवार्य कर दी है। इसमें कहा गया है कि नियम बनाते समय नियामक के लिए जन परामर्श का अनिवार्य है और परामर्श का तरीका भी बताया गया है।

इतना तो साफ है कि विनियमन का मतलब शासन कम करना नहीं बल्कि शासन बेहतर करना है। इसका अर्थ नियमन खत्म करना नहीं बल्कि बेजा नियम-कायदे हटाना और व्यर्थ नियम नहीं बनने देना है ताकि जिम्मेदारी भरे नियमन का दौर शुरू हो। नीतिगत पहलों से स्पष्ट है कि जिम्मेदारी भरे नियमन के दो प्रमुख तत्व हैं: (अ) नियमों के दायरे में प्राथमिक कानून और उनके साथ या उनके तहत बने निर्देश हैं जैसे नियम, नियमन, सहायक निर्देश, सर्कुलर और वे सभी बाध्यकारी कानून, जो केंद्र सरकार, राज्य सरकारों और नियामकों ने बनाए हैं। (ब) ऐसे नियम-कायदे बनाते और उनकी समीक्षा करते समय सार्वजनिक मशविरा और आर्थिक विश्लेषण जरूर किया जाए।

भारत में वित्तीय नियामक पारदर्शी और मशविरे के साथ नियम निर्माण प्रक्रिया अपनाने में दूसरों से आगे हैं। सरकार ने सभी कानूनों के मसौदे और सहायक कानूनों के लिए सार्वजनिक मशविरे को 2014 में जरूरी बनाया था। सर्वोच्च न्यायालय ने 2016 में संसद से सिफारिश की थी कि कानून और नियम-कायदे बनाते समय उससे प्रभावित होने वालों के साथ परामर्श जरूर किया जाए। लेकिन भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने सार्वजनिक सलाह-मशविरे का काम 2002 में ही शुरू कर दिया था। कानूनी बाध्यता नहीं होने पर भी भारतीय ऋणशोधन अक्षमता एवं दिवालिया बोर्ड, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण और पेंशन कोष नियामकीय और विकास प्राधिकरण ने सक्रियता दिखाते हुए ऐसी व्यवस्थाएं तैयार की हैं, जिनके अनुसार ही उनके नियम-कायदे तैयार किए जाते हैं। सेबी इसमें नया नाम है, जिसने 13 फरवरी को सेबी (नियम निर्माण, संशोधन और समीक्षा प्रक्रिया) निवमन, 2025 अधिसूचित किया।

सेबी देश का पहला बड़ा नियामकीय प्रयोग था और कई नियामकीय समस्याओं से सबसे पहले उसका ही पाला पड़ा था। इन समस्याओं का हल अक्सर अन्य नियामकों के लिए नजीर बना है। बाजार नियमन के मामले में लंबे अरसे से सेबी की बहुत पुख्ता साख है। किंतु उसके हालिया नियम-कायदे इस साख की कसौटी पर खरे नहीं उतरे हैं और विनियमन की जरूरत के मुताबिक भी नहीं हैं। पहले से मौजूद नियम या आगे आने वाले नियम बनाने की प्रक्रिया के जो कायदे हैं, उनमें आदर्श रूप से नौ तत्व होने चाहिए। पहला, विधायिका ने कानून बनाने के अपने अधिकार नियामकों को इसलिए सौंपे हैं ताकि अपने अधिकार क्षेत्र के लिए कानूनी नियम वे खुद बना सकें। इसलिए नियम बनाने के कायदे केवल औपचारिक कानूनों पर ही लागू नहीं होने चाहिए बल्कि सर्कुलर जैसे उन सभी बाध्यकारी उपायों पर भी लागू होने चाहिए, जो बाजार भागीदारों पर कानून के तहत कुछ शर्तें लगाते हैं।

दूसरा, विधायिका ने अनिर्वाचित संस्थाओं द्वारा बनाए गए कानूनों को लोकतांत्रिक वैधता प्रदान करने के लिए कई तरह के उपाय किए हैं। उनमें एक प्रमुख उपाय यह है कि नियामक का संचालन बोर्ड ही नियम-कायदे बनाए। यह जिम्मेदारी किसी अन्य विभाग या अधिकारी को नहीं सौंपी जा सकती। नियम का मसौदा जारी करने से लेकर अंतिम नियम को मंजूरी देने और उनकी समीक्षा करने तक सब कुछ संचालन बोर्ड द्वारा ही होना चाहिए।

तीसरा, सार्वजनिक मशविरा किया जाए तो अवांछित नियम बनने से पहले ही खत्म हो जाते हैं। नियमों के मसौदे पर केवल हितधारकों से नहीं बल्कि आम जनता से राय मशविरा अनिवार्य किया जाना चाहिए। संचालन बोर्ड नियमों के मसौदे को मंजूरी दे, सार्वजनिक टिप्पणियों पर विचार करे और ऐसी टिप्पणियों पर अपनी प्रतिक्रिया दे। इस सबके बाद ही अंतिम नियम-कायदों को मंजूरी मिलनी चाहिए।

चौथा, आधुनिक नियामक जनता तक पहुंचने के लिए ऑफलाइन, ऑनलाइन जैसे कई तरीकों के इस्तेमाल करते हैं और प्रत्यक्ष भी मिलते हैं। वे उनसे कई तरह से रूबरू होते हैं मसलन सलाहकार समितियां, कार्य समूह, राउंड टेबल, सेमिनार, कार्यशालाएं और चर्चा पत्र। संचालन नियमों में जनता से संपर्क की न्यूनतम आवश्यकता और तरीके बताए जा सकते हैं।

पांचवां, मशविरा कारगर तभी होता है, जब जनता के सामने प्रस्तावित कानून का आर्थिक विश्लेषण रखा जाए ताकि वे उसका समूचा असर समझ सकें और सुधार अथवा विकल्प सुझा सकें। इससे लोग नियम-कायदों को ज्यादा स्वीकार करेंगे और उन्हें वापस लेने की संभावना नहीं रहेगी।

छठा, इस मामले में रियायत देने का अधिकार नहीं मिलना चाहिए मसलन यह नहीं कहा जाए कि यहां सार्वजनिक मशविरा सही नहीं है और छोड़ देना चाहिए। मगर कहीं जल्दी हो या फौरन हस्तक्षेप करना हो तो उसे जरूर देखना चाहिए। ऐसे में निश्चित अवधि के लिए नियम-कायदे लाए जा सकते हैं, जिनके बाद स्थायी नियम बनाना अनिवार्य हो।

सातवां, दो साल में एक बार समीक्षा कर पुराने और बेकार कायदे खत्म कर दिए जाएं और सारे नियम-कायदे कारोबार और बाजार की बदलती जरूरतों के हिसाब से दुरुस्त किए जाएं।

आठवां, सार्वजनिक मशविरे में आम तौर पर जनता को प्रतिक्रिया के लिए बहुत कम समय मिलता है। कुछ ऐसा तरीका होना चाहिए, जिसमें जनता किसी भी समय अपनी प्रतिक्रिया या सुझाव दे सके। ऐसे सुझावों की दो साल में एक बार समीक्षा हो और काम के उपाय नियम-कायदों में शामिल किए जाएं।

नवां, नियामकीय निश्चितता बढ़ाने के लिए नियमों को मांगने पर स्पष्टीकरण भी प्रदान किए जाने चाहिए। ये स्पष्टीकरण लागू करने योग्य और कानूनी तौर पर बाध्यकारी होने चाहिए ताकि बाजार भागीदार उनके जरिये आगे का अनुमान लगा सकें।

इन सिद्धांतों को संहिताबद्ध करने से कानून निर्माताओं की उतनी ही जवाबदेही हो जाएगी, जितनी वे विनियमित संस्थाओं की तय करते हैं। इस तरह टिकाऊ आर्थिक वृद्धि के लिए जरूरी माहौल बनेगा। इससे नियमों की न तो अति होगी और न ही कमी, साथ ही जिम्मेदारी भरा नियमन भी पक्का हो जाएगा।

शहरों के लिए बजट की पाई-पाई का हो इस्तेमाल

इस साल बजट में हुए आवंटन पर चर्चा के दौर लगभग थम गए हैं। ऐसे में यह पड़ताल होनी चाहिए कि सरकार के तीनों स्तर और दूसरी संबंधित एजेंसियां कौन से उपाय करें, जिनसे भारत के शहरों के लिए आवंटित एक-एक पैसे का ज्यादा से ज्यादा फायदा मिल सके।

पिछले कुछ साल की तरह इस बार भी शहरी मंत्रालय के लिए आवंटन कुल बजट का लगभग 2 फीसदी रहा है। लेकिन शहरी उप-क्षेत्रों और कार्यक्रमों में इसका वितरण बदल गया है। शहरी आवास की हिस्सेदारी घटी है और नई योजनाओं की शुरुआत धीमी गति से हो रही है। उनके बजाय पिछली योजनाओं के तहत मकानों का निर्माण पूरा करने पर जोर दिया जा रहा है। परिवहन विशेषकर मेट्रो रेल और बुनियादी सेवा क्षेत्रों के लिए आवंटन बढ़ा है क्योंकि ये योजनाएं पहले जैसी गति से चल रही हैं। स्मार्ट सिटी अभियान ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है मगर अर्बन चैलेंज फंड जोड़ दिया गया है, जिसका मकसद शहरों को नया रूप देना है।

शहरी आवास से शुरू करें तो जिन तीन योजनाओं के लिए सब्सिडी दी गई है, वे हैं 2015 से चल रही प्रधानमंत्री आवास योजना - शहरी (पीएमएवाई-यू) चरण 1, पीएमएवाई-यू चरण 2 और पिछले साल घोषित औद्योगिक आवासीय योजनाएं। शहरी आवास का तीन-चौथाई से अधिक बजट पीएमएवाई-यू के पहले चरण के तहत आवास निर्माण पर सब्सिडी देने के लिए है। इस चरण में 32 लाख आवास अभी बनने हैं, इसलिए नई आवासीय योजनाएं शुरू करने से पहले उनके निर्माण को प्राथमिकता देना समझदारी की बात है।

इस बजट में बिल्कुल ऐसा ही किया गया है। जो मकान बनने हैं, वे ज्यादातर आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) के परिवारों के लिए हैं, जिनकी सालाना आमदनी 3 लाख रुपये या उससे कम है। इन मकानों पर सब्सिडी दी जाती है, जिससे परिवार का निर्माण पर आने वाला खर्च कम हो जाता है। इस सब्सिडी में 2015 से कोई बदलाव नहीं किया गया है मगर मकान बनाने का खर्च बढ़ गया है और लाभार्थियों को इसमें ज्यादा रकम लगानी पड़ रही है। इसलिए इन गरीब परिवारों को पहले की तुलना में अधिक धन की दरकार हो जाती है। उनके लिए किफायती आवास ऋण की उपलब्धता बढ़ाना इसके समाधान का एक तरीका है। पीएमएवाई-यू के पहले चरण पर हुए शोध में भी बताया गया है कि इस तरह का कर्ज नहीं मिलना ईडब्ल्यूएस परिवारों के लिए बड़ी चुनौती है। इसलिए पीएमएवाई-यू चरण 1 के लाभार्थियों को पहले के मुकाबले अधिक आसानी से किफायती आवास ऋण उपलब्ध कराना जरूरी है।

देवार्पिता रॉय

प्रधानमंत्री आवास योजना - शहरी के दूसरे चरण के लिए आवंटन केवल आवास ऋण के ब्याज पर सब्सिडी देने के मकसद से किया गया है। इससे परिवारों की मासिक किस्त कम हो जाती है। इसमें 70 फीसदी आवंटन ईडब्ल्यूएस और निम्न आय वर्ग (सालाना आमदनी 3 लाख रुपये से 6 लाख रुपये के बीच) के लिए है। बाकी रकम मध्यम आय वर्ग (सालाना आमदनी 6 लाख रुपये से 9 लाख रुपये तक) के लिए है।

सीएसईपी में किए गए शोध बताते हैं कि पीएमएवाई-यू के पहले चरण में ऐसी ही आवास ऋण सब्सिडी योजना के तहत केवल 21 फीसदी लाभार्थी ईडब्ल्यूएस वर्ग से थे। इसलिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि इस योजना के दूसरे चरण में लाभ पाने वाले ईडब्ल्यूएस परिवारों का अनुपात पहले चरण से ज्यादा हो। यह भी जरूरी है कि दूसरे चरण में ऐसे परिवारों को ज्यादा आसानी के साथ वित्तीय संस्थाओं से आवास ऋण मिले।

औद्योगिक आवास के लिए आवंटन के तहत ऐसे मकान बनाने (उद्योगों के साथ मिलकर) के लिए सब्सिडी दी जाएगी, जो औद्योगिक कामगारों को किराये पर मिल सकें। इससे औद्योगिक वृद्धि तथा रोजगार को बढ़ावा भी मिलेगा और किराये के लिए अधिक मकान भी तैयार हो सकते हैं। इसी परियोजना में औद्योगिक कामगारों के साथ आम लोगों के लिए भी किराये के आवास बनाए जाएं तो उन लोगों को भी रिहायश मिल जाएगी, जो कारखानों के आसपास दूसरे काम-धंधे कर कामगारों को सेवा मुहैया कराते हैं। इस तरह औद्योगिक केंद्र जब शहरों में तब्दील होंगे तब अवैध और अनियोजित बस्तियां नहीं पनप पाएंगी।

शहरों की एक बड़ी आबादी के लिए मेट्रो रेल बहुत जरूरी है और साल-दर-साल इसके लिए बजट आवंटन बढ़ता जा रहा है। कुछ विशेषज्ञ इस बात पर चर्चा जरूर करते हैं कि क्या छोटे महानगरों में मेट्रो रेल वाकई बस की तुलना में ज्यादा कारगर है मगर इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि जैसे-जैसे शहरों का आकार और उनके भीतर भीड़ बढ़ेगी वैसे-वैसे ही मेट्रो ज्यादा जरूरी होती जाएगी। दिल्ली, मुंबई और बेंगलूरु जैसे शहरों के ज्यादातर निवासी आज मेट्रो के बगैर जीवन और आजीविका की कल्पना ही नहीं कर सकते। ऐसे में मेट्रो लाइन के आसपास सुनियोजित तरीके से सघन विकास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। दिल्ली मास्टर प्लान 2041 में आवागमन केंद्रित विकास पर खूब जोर दिया गया है मगर योजना अभी तैयार ही की जा रही है। इस तरह की योजनाओं को अविलंब अमल में लाना चाहिए। उसके बाद ही मेट्रो ट्रेन न केवल परिवहन बेहतर करेंगी बल्कि शहरवासियों का जीवन भी बेहतर हो जाएगा।

अमृत तथा स्वच्छ भारत मिशन योजनाओं में जल, सफाई और ठोस कचरा प्रबंधन जैसी बुनियादी शहरी सेवाओं के लिए पूंजी निवेश का प्रावधान है। साथ ही नए अर्बन चैलेंज फंड में भी जल तथा सफाई परियोजनाओं पर खर्च का प्रावधान किया गया है। सरकारी आवंटन का अधिकतम लाभ उठाने के लिए शहरी स्थानीय निकायों को निजी क्षेत्र से भी निवेश हासिल कर इसमें लगाना चाहिए। किंतु ऐसा तभी हो सकेगा, जब निकायों की साख बेहतर होगी। अच्छा तो तब होगा जब कर तथा गैर-कर स्रोतों से होने वाली अपनी आय से ही वे रोजमर्रा के खर्च निकाल लें। इन खर्चों में वेतन, पेंशन और वाटर पंपिंग स्टेशन तथा सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट चलाना तथा संभालना शामिल हैं। ये सभी खर्च 'राजस्व व्यय' की श्रेणी में आते हैं।

इक्रियर की एक रिपोर्ट के मुताबिक 2017-18 में भारत के 4000 से अधिक शहरी स्थानीय निकायों ने अपने कुल राजस्व से 5,000 करोड़ रुपये ज्यादा राजस्व व्यय कर डाला था। लेकिन इस अंतर को पाटना शहरी स्थानीय निकायों के वश में नहीं है। उदाहरण के लिए 74वें संविधान संशोधन को तीन दशक से ज्यादा बीत चुके हैं मगर ज्यादातर राज्यों में इन निकायों को अपने राजस्व के प्रमुख स्रोत यानी संपत्ति कर में किसी भी तरह के इजाफे के लिए राज्य सरकार से मंजूरी लेनी पड़ती है। इसलिए राज्य सरकार के राजनीतिक और प्रशासनिक लक्ष्यों का तालमेल स्थानीय निकायों के लक्ष्यों के साथ होना जरूरी है। ऐसा तालमेल इस साल के केंद्रीय बजट आवंटन का अधिक से अधिक फायदा उठाने के लिए ही जरूरी नहीं है बल्कि शहरों के जरिये वृद्धि की महत्त्वाकांक्षा पूरी करने के लिए भी जरूरी है।

(लेखिका सीएसईपी में विजिटिंग फेलो हैं। लेख में उनके निजी विचार हैं)

आपका पक्ष

भूकंप की विनाशलीला से आहत मानव जीवन

धरती पर प्रकृति का सबसे विनाशकारी स्वरूप भूकंप को कहा जाता है और अब तक इससे बचाव का कोई उपाय नहीं निकाला जा सका है। इसे रोकने के कोई प्रभावी उपाय अब तक नहीं खोजे जा सके हैं। यह मुख्य वजह है कि इसकी विनाशलीला सहना मानव की मजबूरी है। इससे जान-माल की भारी हानि होती है। भूकंप से होने वाले विनाश को कम करने के लिए भूकंपरोधी प्रणाली और पूर्व चेतावनी तकनीक का विकास आवश्यक है। इससे समय पूर्व जानकारी मिल सकेगी और जान माल की हानि को रोका जा सकेगा। इंडोनेशिया के सुलावेसी द्वीप के पास आया 6.1 तीव्रता वाला भूकंप फिर चिंता का विषय है क्योंकि इंडोनेशिया प्रशांत महासागर के 'रिंग ऑफ फायर' पर स्थित है, जहां टेक्टोनिक प्लेटों की सक्रियता के कारण अक्सर भूकंप आते रहते हैं। पिछले वर्षों में सुलावेसी में कई विनाशकारी भूकंप आए हैं। जनवरी 2021 में 6.2 तीव्रता का भूकंप, जिसमें 100 से अधिक लोग, 2018 में 7.5 तीव्रता का भूकंप, जिससे 2,200 से अधिक लोगों की जान गई थी। 2004 में आचे प्रांत में 9.1की तीव्रता के भूकंप से आई सुनामी ने 170000 से ज्यादा लोगों को मौत की नींद सुला दिया था। भूकंप अचानक आने वाली आपदा है जिससे भूकंप-रोधी भवन निर्माण, आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण और समय पर चेतावनी प्रणाली जैसे प्रभावी उपायों को अपनाकर विनाश को कम किया जा सकता है। इसके अलावा सतर्कता, सुरक्षित स्थानों पर शरण और आपातकालीन किट महत्त्वपूर्ण है।

अमृतलाल मारू 'रवि', इंदौर

हाल के दिनों में दुनिया भर में भूकंप ने तबाही मचाई है। फरवरी में भारत और कई देशों में इससे जान-माल को क्षति पहुंची है

ट्रंप और जेलेंस्की विवाद: वैश्विक शांति की चुनौती

वाइट हाउस में अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के बीच हुई तीखी तकरार ने न केवल कूटनीतिक संबंधों को प्रभावित किया है, बल्कि वैश्विक शांति और स्थिरता के लिए भी चिंता पैदा कर दी है। यह घटना दर्शाती है कि कूटनीति में संयम और सम्मान का अभाव भविष्य में गंभीर परिणाम ला सकता है। ट्रंप और जेलेंस्की के बीच हुए इस विवाद ने रूस-यूक्रेन युद्ध को रोकने की कोशिशों को भी झटका दिया है। ट्रंप का एकतरफा रुख और यूक्रेन पर दबाव डालना युद्ध के समाधान के बजाय नए संघर्षों को जन्म दे सकता है।

ट्रंप का मानना है कि यूक्रेन को बिना शर्तें रखे उनकी बात माननी चाहिए, जबकि जेलेंस्की यूक्रेन की सुरक्षा और संप्रभुता की गारंटी चाहते हैं। यह टकराव दर्शाता है कि ट्रंप की नीतियां यूक्रेन के हितों को नजरअंदाज कर रही हैं। यूक्रेन को अमरीका से मिलने वाली सैन्य सहायता इस युद्ध में उसकी मुख्य ताकत रही है। यदि ट्रंप इस सहायता को रोकते हैं, तो यूक्रेन के लिए युद्ध जारी रखना मुश्किल हो जाएगा। हालांकि, यूरोपीय देशों ने यूक्रेन के साथ खड़े होने का संकल्प दोहराया है, लेकिन उनके पास अमेरिका जैसी सैन्य क्षमता नहीं है। इस स्थिति में, वैश्विक समुदाय को मिलकर युद्ध रोकने की दिशा में कदम उठाने चाहिए।

राजूराम प्रजापत, नागौर, राजस्थान

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिज़नेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू मंगलवार को राष्ट्रपति भवन में भारतीय राजस्व सेवा के 78वें बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों से मिलीं।

राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • बुधवार • 5 मार्च • 2025
www.rashtriyasahara.com

अनमोल वचन

जहां चक्रवर्ती सम्राट की तलवार कुंठित हो जाती है, वहां महापुरुष का एक मधुर वचन ही काम कर देता है।
-हरिऔध

जिक्र न था फसाने में

गुजरात पुलिस की खिंचाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि संविधान के अस्तित्व के 75 साल बाद भाषण और अभिव्यक्ति की आजादी को कम से कम अब पुलिस को समझना चाहिए। कांग्रेस सांसद इमरान प्रतापगढ़ी ने इस साल की शुरुआत में जामनगर में शादी समारोह में भाग लेने के बाद इंस्टाग्राम पर वीडियो पोस्ट किया। इसमें बैकग्राउंड में कविता है-ए, खून के प्यासे बात सुनो। कविता के इन शब्दों को आपत्तिजनक माना गया। पीठ ने इमरान द्वारा दायर अपील पर फैसला सुरक्षित रख लिया जिसमें गुजरात उच्च न्यायालय के उस आदेश को चुनौती दी गई है, जिसने उनके खिलाफ प्राथमिकी रद्द करने से इंकार कर दिया था। शीर्ष अदालत ने कहा

कि पुलिस को संवेदनशीलता दिखानी चाहिए। गुजरात की तरफ से पेश सॉलीसिटर जनरल तुषार मेहता के यह कहने पर कि लोगों ने इसका अर्थ अलग-अलग तरीकों से समझा होगा। इसे सड़कछाप टाइप की कविता ठहराने पर अदालत ने कहा कि अब किसी को रचनात्मकता का सम्मान नहीं है। कांग्रेस अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष इमरान प्रतापगढ़ी पर धारा 196 (धर्म, जाति, निवास,भाषा आदि के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देना और सद्भावना के लिए हानिकारक काम करना) 197 (राष्ट्रीय एकता के लिए हानिकारक दावे, 299 (जानबूझकर दुर्भावनापूर्ण कार्य, किसी धर्म या धार्मिक विश्वासों का अपमान), 302 (धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के इरादे से कुछ बोलना), 57 (आम जनता या दस से ज्यादा लोगों को अपराध के लिए उकसाना) के तहत मामला दर्ज किया गया जिससे पहली नजर में स्पष्ट है कि विपक्षी दल के नेता के खिलाफ निजी वैमनस्यता और पूर्वाग्रहीत कारणों से जबरन मामले को गंभीर बनाने की कोशिशें की गई हैं। धर्म के आधार पर देशवासियों के दरम्यान गहरी खाई पैदा करने वाली विचारधारा ने समाज में संकीर्णता को प्रोत्साहित करने का काम किया है, जो बाल की खाल निकाल कर असहिष्णुता और नकारात्मकता फैलाने का काम करने में मशगूल है। उक्त मिसरा के शायर फैज का शेर यहां सटीक बैठता है-सारे फसाने में जिसका जिक्र न था/वो बात उनको बहुत नागवार गुजरी। रही बात पुलिस की तो उसकी खाकी को खौफ का पर्याय बनाने में राजनेताओं का बड़ा हाथ है। ऐसे में उनसे संवेदनशीलता और समझदारी की उम्मीद बमुश्किल ही की जा सकती है।

मिले सुरक्षा की गारंटी

व्हाइट हाउस के ओवल ऑफिस से बेआबरू होकर निकलने के बाद यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की के लिए सबसे बड़ी राहत की बात यह रही कि यूरोपीय देश उनके समर्थन में खड़े नजर आए। लेकिन यथार्थ यह है कि यूरोप का कोई भी देश इस स्थिति में नहीं है कि जेलेंस्की के साथ खड़े होकर वे ट्रंप को चुनौती दे सकें। या ट्रंप की सीधे-सीधे आलोचना कर सकें। यूरोपीय देशों को मालूम है कि उनकी आधी ताकत अमेरिका है। यूरोप का दबावकारी वैश्विक वर्चस्व तभी स्थापित होता है जब अमेरिका उसके साथ खड़ा हो। इसलिए ब्रिटेन हो या फ्रांस उन्होंने जेलेंस्की के साथ खड़े होते हुए भी प्रयास यह किया है कि ट्रंप प्रशासन को किसी ऐसे समझौते पर मनाया जा सके जो जेलेंस्की को तो राहत देता ही हो स्वयं यूरोप को भी उसके भविष्य के

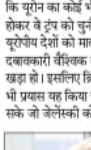

प्रति आश्वस्त करता हो। ट्रंप ने इधर जो रुख अपनाया है उससे नहीं लगता कि वह यूरोप की खातिर अपने किसी भी घोषित कदम से पीछे हटेंगे। चाहे वह पेरिस जलवायु समझौता हो या अन्य कोई ऐसी अंतरराष्ट्रीय साझा नीति जिसमें अब तक अमेरिका प्रमुखता से सहभागी रहा हो। इस अर्थ में ट्रंप की अमेरिका फर्स्ट की नीति अगर यूरोप की कीमत पर भी होती है तो इसका खामियाजा यूरोपीय देशों को ही ज्यादा भुगतना पड़ेगा। यूरोपीय देश इस बात को अच्छी तरह समझते हैं इसलिए उन्होंने समझौते का ऐसा मसौदा तैयार किया है जिस पर अमेरिका को सहमत कराया जा सके। समझौते को लेकर जो अनुमान लगाया जा रहा है उसमें यह तो दिखता है कि जेलेंस्की भी समझौते के लिए तैयार हैं, क्योंकि वह जानते हैं कि यूक्रेन अमेरिका का विरोध नहीं झेल सकता। विशेषकर ऐसा विरोध जिसमें अमेरिका का रुझान उनके शत्रु पुतिन के पक्ष में दिखता हो। दूसरे जेलेंस्की यह भी जानते हैं कि अमेरिका के बिना यूरोप भी अपने दम पर उनके साथ ज्यादा दिनों तक खड़ा नहीं रह सकता। जाहिर है कि जेलेंस्की भी अब किसी ऐसे सम्मानजनक रास्ते की तलाश में है जिसमें युद्ध भी रुक जाए और उसका सम्मान भी बचा रह सके। इसलिए वह चाहते हैं कि उन्हें सुरक्षा की गारंटी भी मिले और यह गारंटी अमेरिका की ओर से आए। अगर ट्रंप की इस गारंटी के बाद युद्ध रुक जाता है तो दुनिया के लिए राहतकारी ही साबित होगा। यह भारत की इच्छा के अनुकूल भी होगा जो शांति के बार-बार अपनी पक्षधरता प्रकट कर चुका है।

बहस/अमित बैजनाथ गर्ग

चुनाव में गूंजा दांतों का मुद्दा

हाल में अमेरिकी चुनाव में लोगों की ओर से दांतों की समस्या का मुद्दा जोरदार तरीके से उठाया गया जिसके बाद राजनेताओं ने इस मुद्दे पर प्रभावी कार्ययोजना तैयार करने का वादा किया। पिछले साल ब्रिटेन के चुनावों में भी दंत चिकित्सा का मुद्दा राजनीतिक तौर पर उठाया गया था, जिसमें नेताओं की ओर से वैलेट पेपर पर इस समस्या का प्रभावी समाधान करने का वादा ब्रिटेन के मतदाताओं से किया गया था। राजनीतिक रूप से ऐसा पहली बार था, जब दांतों की बीमारी राजनीतिक अभियानों का हिस्सा बन रही थी।

डब्ल्यूएचओ ग्लोबल ओरल हेल्थ स्टेटस रिपोर्ट का अनुमान है कि दुनिया भर में करीब 3.5 बिलियन लोग मौखिक बीमारियों से पीड़ित हैं। बढ़ते शहरीकरण और जीवन स्थितियों में बदलाव के साथ मुख्य मौखिक रोग बढ़ते जा रहे हैं। दंत रोग समाज के गरीब और सामाजिक रूप से वंचित लोगों को असमान रूप से प्रभावित करते हैं। डब्ल्यूएचओ ने 2021 में मौखिक स्वास्थ्य पर एक प्रस्ताव को मंजूरी दी थी। प्रस्ताव में कहा गया था कि मौखिक स्वास्थ्य को एनसीडी एजेंडे में मजबूती से शामिल किया जाना चाहिए और देखभाल हस्तक्षेपों को राष्ट्रीय सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज लाभ पैकेजों में शामिल किया जाना चाहिए। दंत रोगों से बचाव के लिए डेंटल एक्सपर्ट का कहना है कि शर्करा मुक्त भोजन तथा अधिक फल और सब्जियों वाले संतुलित आहार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए तथा मुख्य पेय के रूप में पानी को प्राथमिकता देनी होगी। सुधारी चबाने सहित सभी प्रकार के तंबाकू का उपयोग बंद करना होगा। दैनिक जीवन में कुछ सावधानियां बरतते हुए दांतों तथा मुंह के रोगों से काफी हद तक बचाव किया जा सकता है। डेंटल एक्सपर्ट कहते हैं कि खट्टा खाने के 30 मिनट बाद तक ब्रश न करें। इससे दांतों को नुकसान पहुंच सकता है, क्योंकि खट्टे फल-जूस के बाद दांतों का इनेमल सॉफ्ट हो जाता है। कच्चे और रेशेदार फल सेब, नाशपाती, गाजर आदि ज्यादा से ज्यादा खाएं। सोडा, स्पोर्ट्स ड्रिंक और जंक फूड से जितना हो सके बचें। इस तरह कुछ बातों को ध्यान में रख कर दांतों और मुंह के रोगों से बचा जा सकता है।

बदलाव का तर्क और बजट

सामयिक

प्रेम प्रकाश

इस वर्ष देश में अब सिर्फ बिहार विधानसभा का चुनाव होना है पर इस चुनाव को दिल्ली, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और राजस्थान विधानसभा चुनाव की सीध में देखें तो राज्यों के बदले अर्थ चरित्र को समझ सकेंगे। दिलचस्प है कि राजनीतिक तौर पर भी यह सीध 'लाडली योजना' से 'लाड़ला मुख्यमंत्री' तक पहुंच चुकी है। दरअसल, यह बड़ा बदलाव है। जाति और अस्मिता की राजनीति का उत्तर सर्ग विकासवादी तर्कों पर कसा जा रहा है। बड़ी बात यह है कि यह समझ समाज और सरकारों के स्तर पर एक साथ दिखाई पड़ रही है।

बात एक बार फिर से बिहार की करें तो यह उन राज्यों में शामिल है, जिसके विकास की संभावनाओं पर लंबे समय तक नकारात्मक तरीके से विचार किया गया। इस पूरे संदर्भ का आगाज 1980 के दशक में तब हुआ, जब जनसांख्यिकी और आर्थिक नीतियों के विश्लेषक आशीष बोस ने तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी को एक रिपोर्ट सौंपी। इस रिपोर्ट में चार बड़े राज्यों बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश को 'बीमारू' राज्य बताया। इन राज्यों को आर्थिक विकास, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और अन्य सूचकांकों के मामले में पिछड़ने के कारण यह नाम दिया गया। इसके बाद से न सिर्फ यह शब्द लगातार प्रचलन में बना रहा, बल्कि इस आधार पर इन राज्यों के विकास को अलग से चिह्नित और वर्गीकृत भी किया जाता रहा। पर बीते दशकों में यह स्थिति लगातार बदली है।

इस दौरान विकास को लेकर न सिर्फ राज्यों का नया चरित्र उभरा है, बल्कि यह भी देखने में आया है कि राज्य सरकारें अपने राजनीतिक स्थायित्व के लिए विकासवादी लीक पर आगे बढ़ने को बिवश हैं। राज्यों का यह विकासवादी चरित्र उस दौर में उभरा है, जब बीमारू ठहराए गए राज्य विकास के विभिन्न मोर्चों पर अपने मॉडल के साथ चर्चा में हैं। हाल में बिहार विधानसभा में नीतीश सरकार ने 2025-26 का बजट पेश किया। गौरतलब है कि इसमें महिलाओं पर विशेष तौर पर ध्यान दिया गया है। नीतीश सरकार ने महिलाओं के लिए सात बड़ी घोषणाएं की हैं, जिनमें कन्या विवाह मंडप निर्माण, महिला हाट जिम ऑन व्हील, पिंक टॉयलेट, कामकाजी महिलाओं के लिए हॉस्टल, पिंक बस और महिलाओं को ट्रेनिंग देना शामिल हैं। इस तरह की पहल का महत्त्व तब ज्यादा समझ में आता है, जब हम 'जेंडर' या 'पिंक बजट' की बात करते हैं। बिहार सरकार के तकरीबन तीन लाख 17 हजार करोड़ के बजट को पिंक बजट के प्रेमकर्के के साथ देखा-समझा जाए तो यह राज्य में महिलाओं की जिंदगी में बड़े बदलाव को रेखांकित करता है। यह बजट महिला स्वावलंबन की भी चिंता करता है। मसलन, इसमें उनके लिए कई तरह के प्रशिक्षण

कार्यक्रम और आर्थिक मदद का प्रबंध किया गया है। अगर यह बात कही जा रही है कि बिहार राज्य पथ परिवहन निगम के चालक, परिचालक और डिपो मेंटेनेंस स्टाफ के पदों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था लागू की जाएगी, तो यह महिला सशक्तिकरण के लिहाज से बड़ा फैसला है।

जो लोग बिहार के जिलों, यहां के विषम भूगोल और परिवहन सेवाओं को लेकर जमीनी समझ रखते हैं, वे समझ पाएंगे कि इससे महज प्रदेश की महिलाओं को रोजगार ही नहीं मिलेगा, बल्कि लैंगिक समानता का एक नया दौर भी शुरू होगा। पंचायत में महिलाओं को पचास फीसद आरक्षण सबसे पहले देने वाले राज्य में यह पहल उस सिलसिले की नई कड़ी है, जिसमें बालिका शिक्षा और जीविका योजना जैसी पहल पहले से बदलाव के नये सुलेख साबित हो रही हैं। इस सुलेख की सबसे अच्छी बानगी है कि यह राज्य आज देश में पुलिस सेवा में शीर्ष महिला सहभाग वाला सूबा है। बात विकास और चुनाव को लेकर एक साथ करें तो इस लिहाज से भी कई बातें देखने और समझने की हैं। इस नई चर्चा और समझ के केंद्र में हैं नीतीश कुमार की प्रगति यात्रा। खास तौर पर पारंपरिक ढर्रेदार चुनावी विमर्श में यह यात्रा बड़ा मोड़ और मास्टरस्ट्रोक है। बिहार के अनुभवी मुख्यमंत्री को इस बात की दाद तो मिलनी ही चाहिए कि ये सब वे बिना किसी सियासी हड़कंप और शोर-शराबे के कर रहे हैं। यह जरूर है कि अब जब उनकी प्रगति यात्रा पूरी हो चुकी है तो उनके इस कदम को लेकर राजनीतिक गुणा-गणित का दौर तेज हो रहा है। राजनीतिक पंडित भी अब कहने लगे हैं कि बिहार में राजनीति को विकास के जिलाबार खांके के साथ नीतीश ने नई जमीन तैयार कर दी है।

दिलचस्प है कि देश के राजनीतिक दिग्गजों की जमात में नीतीश ऐसे वाहिद राजनेता हैं, जो रोड़शो वाली राजनीति के दौर में भी सीधे जनता के बीच पहुंचने की राह पर हैं। 2005 से अब तक उन्होंने 15 यात्राएं की हैं। 2005 की न्याय यात्रा से लेकर मौजूदा प्रगति यात्रा तक उन्होंने बिहार की राजनीति और उसके प्रगतिशील लक्ष्यों को नये पर्याय दिए हैं, नये मानक दिए हैं। विकास को लेकर प्रतिबद्धता और दूरदर्शिता का ही हासिल है कि बीमारू कहा जाने वाला बिहार आज रोड कनेक्टिविटी से लेकर महिला सशक्तिकरण का सर्वथा नया आख्यान रच रहा है। जाहिर तौर पर बदलाव की इस इबारत को पढ़ने के लिए पूर्वाग्रह को छोड़ एक धुली और तटस्थ दृष्टि की दरकार है। इस दरकार के साथ ही समझा जा सकता है कि जिस राज्य में बिजली उत्पादन 2005 में 700 मेगावाट होता था, वह 2025 तक आते-आते 8,000 मेगावाट से ज्यादा हो गया है। स्कूलों में नामांकन की जो दर दो दशक पहले 45 फीसद थी, वह आज 90 फीसद से ऊपर है।

ग्रामीण क्षेत्रों में मनरेगा जॉब कार्डधारकों की संख्या 2005 में 10 लाख थी, जो 2023 में 1.25 करोड़ से ज्यादा हो गई। इसी तरह महिलाओं के जीविका समूहों की संख्या बीते 20 वर्षों में दस हजार से 12 लाख से भी ज्यादा हो गई है। दरअसल, बिहार आज देश में राज्यों के बदले अर्थ चरित्र का अग्रणी राष्ट्र है, जो सामाजिक सहभाग के साथ विकास की राह पर बढ़ रहा है। बेहतर होगा कि ऐसे बदलाव की चर्चा में तात्कालिक राजनीतिक समझ को किनारे छोड़ दिया जाए। ऐसा होने पर ही हम देख पाएंगे कि आशीष बोस के उलट आज ज्यादा प्रगतिशील आर्थिक व्याख्याकारों की जरूरत हो, जो विकास के नये मानदंडों के साथ उसके मीलस्तंभों की चर्चा को आगे बढ़ाएं।

(लेख में विचार निजी हैं)

> दिलचस्प है कि देश के राजनीतिक दिग्गजों की जमात में नीतीश ऐसे वाहिद राजनेता हैं, जो रोड़शो वाली राजनीति के दौर में भी सीधे जनता के बीच पहुंचने की राह पर हैं। 2005 से अब तक उन्होंने 15 यात्राएं की हैं। 2005 की न्याय यात्रा से लेकर मौजूदा प्रगति यात्रा तक उन्होंने बिहार की राजनीति और उसके प्रगतिशील लक्ष्यों को नये पर्याय दिए हैं, नये मानक दिए हैं

लग सकती है सस्ते स्टील के आयात पर एंटी-डंपिंग ड्यूटी

- सस्ते स्टील के आयात पर एंटी-डंपिंग ड्यूटी लगाने संबंधी स्टील उद्योग के अनुरोध पर सरकार विचार कर रही है, क्योंकि सस्ते चीनी आयात भारतीय बाजार में बाढ़ की तरह आ रहे हैं
- भारतीय स्टील एसोसिएशन (आईएसए) के मुताबिक, देश में लौह अयस्क के प्रचुर भंडार हैं, लेकिन संस्थाओं द्वारा कम कीमत पर स्टील बेचा जाना बड़ी समस्या है
- भारत वर्तमान में स्टील का शुद्ध आयातक है, और वित्त वर्ष 2024-25 के अप्रैल-जनवरी के दौरान 8.29 मिलियन टन स्टील का आयात किया गया

स्रोत : वैश्विक इनपुट्स

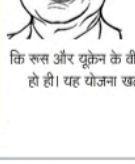

यूरोप पूरी तरह से दिशा-भ्रमित और बहुत ज्यादा बंटा हुआ है और अपना साझा मंसूबा पूरा करना चाहता है। जहां 'अपने मंसूबे को पूरा करने के लिए एकजुटता' की बात कह रहा है तो ब्रिटिश-फ्रांस की योजना है कि रूस और यूक्रेन के बीच एक माह के लिए युद्धविराम तो हो ही। यह योजना खटाई में पड़ गई है क्योंकि मेलोनी ने पहले ही इसे झटका दे दिया है।

ब्रह्म चेलानी, सामरिक चिंतक
@Chellaney

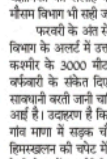

मुद्दा

सुरेश भाई

जलवायु कार्ययोजना की अनदेखी

जलवायु परिवर्तन पर देश-विदेश में सम्मेलन और संवाद हो रहे हैं। इसके बावजूद ऐसी कोई 'जलवायु कार्ययोजना' नहीं है, जहां लोगों को जलवायु संकट से बचाया जा सके। देश के पूर्व, पश्चिम और मध्य हिमालय में जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न हो रही समस्याओं के विषय पर वैज्ञानिकों की सलाह को गंभीरता से समझना जरूरी है। मौसम विभाग भी सही जानकारी दे रहा है।

फरवरी के अंत से मार्च के प्रथम सप्ताह तक मौसम विभाग के अलर्ट में उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर के 3000 मीटर की ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भारी बर्फबारी के संकेत दिए गए थे। लेकिन इसके बाद जो सावधानी बरती जानी चाहिए थी उसमें गैर-जिम्मेदारी सामने आई है। उदाहरण है कि उत्तराखंड में सीमा क्षेत्र के पहले गांव माणा में सड़क चौड़ीकरण में लगे 55 मजदूरों का हिमस्खलन की चपेट में आना। वे बर्फ के नीचे दब गए। हेली सेवाओं, आईटीबीपी और सेना के 200 जवानों द्वारा 44 लोगों को बड़ी मुश्किल से रेस्क्यू किया जा सका। यदि मौसम विभाग द्वारा बताई गई सावधानियों के प्रति गंभीरता दिखाते तो इतने लोगों को बचाने में जो ऊर्जा खर्च हुई है और आठ लोगों की जिंदगी समाप्त हो गई, उन्हें भी बचाया जा सकता था। बद्रीनाथ के पास स्थित माणा वर्क्षपास के निर्माण में लगे मजदूरों को इस दौरान छुट्टी दे देनी चाहिए थी क्योंकि इस दौरान 10 हजार फीट की ऊंचाई पर मजदूरों के रहने लायक स्थितियां नहीं हैं, और उनसे काम भी नहीं करवाया जा सकता।

समझना जरूरी है कि 2021-24 के बीच यहां आसपास हिमस्खलन की घटनाएं हो चुकी हैं। केदारनाथ में 2013 की आपदा के बाद से चोराबाड़ी ग्लेशियर से हिमस्खलन की घटनाएं थम नहीं रही हैं। माणा में जहां मजदूरों को रात में रहने की व्यवस्था थी वहां पर पहले भी हिमस्खलन हुआ है। ध्यान देना जरूरी है कि वर्ष और वर्फबारी का समय बिल्कुल बदल चुका है जिससे ग्लेशियरों की सतह कमजोर पड़ रही है। शीतकाल के समय तापमान बढ़ रहा है। दिसम्बर-जनवरी में दोपहर के समय केदारनाथ जैसे ऊंचाई वाले क्षेत्र में तापमान 12-16 डिग्री तक दर्ज किया गया है। पिछले वर्षों में भी जनवरी में दोपहर का तापमान 20 डिग्री तक पहुंचा है। यही स्थिति केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ के ग्लेशियरों की है जिसके कारण वैमौसमी वर्फ पिघलने की गति बढ़ती जा रही है।

वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी के वैज्ञानिक डॉ. मनीष मेहता के अनुसार पहले दिसम्बर-जनवरी में गिरने वाली वर्फ शुष्क होती थी जिससे हिमस्खलन कम होता था और यह वर्फ ग्लेशियर पिघलाने की गति को भी कम करता था। लेकिन कुछ वर्षों से मौसम में बदलाव होने से नवम्बर-जनवरी तक वर्फबारी बहुत कम हो गई है। फरवरी-मार्च में पड़ने वाली वर्फ बढ़ते तापमान के कारण जम नहीं पाती है। माणा में हिमस्खलन का कारण भी यही बताया जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों से बद्रीनाथ के ग्लेशियरों से लगातार एवलांच की घटनाएं हो रही हैं। भू-वैज्ञानिक एसपी सती ने 2021 में चिपको नेत्री गौरा देवी के गांव रैणी के निकट हिमस्खलन की घटना के बाद इस घाटी के संवेदनशील वर्फ वाले इलाके चिन्हित किए थे जहां हिमस्खलन की आशंका है। माणा के पास मजदूरों का कैंप भी इसी तरह के क्षेत्र में स्थित था। लेकिन इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। पुराने समय में यहां मानवीय आवाजाही कम थी। कहा जाता है कि बद्रीनाथ धाम में वर्फ की चोटियों में कंपन न हो, इसलिए मंदिर में शंख नहीं बजता था। लेकिन अब इसी क्षेत्र में मानवीय गतिविधियां इतनी बढ़ गई हैं कि बद्रीनाथ मास्टर प्लान के तहत सड़क निर्माण में तेज ध्वनि करने वाली जेसीबी मशीनों का प्रयोग हो रहा है। अंधाधुंध हेली सेवाएं जारी हैं। जलवायु नियंत्रित करने वाले वनों का तेजी से क्षरण हो रहा है, जिसका ग्लेशियरों पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है। बद्रीनाथ में नीलकंठ, नरनारायण, कंचन गंगा, स्तोपंथ, माणा और कुबेर पर्वत स्थित है। अन्य चोटियां भी हैं, जो वर्फ से ढकी रहती हैं।

यहां जो निर्माण हो रहा है उसका प्रभाव बढ़ते तापमान से साफ नजर आ रहा है। कहते हैं कि सदियों पूर्व बद्रीनाथ मंदिर का जब निर्माण हुआ तो स्थानीय और लोक विज्ञान के पहलू को ध्यान में रखते हुए मंदिर बनाया गया था। इसी दौरान गंगोत्री के पास हर्षिल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को शीतकाल यात्रा का संदेश देने के लिए पहुंचना था जिसे मौसम के कारण 6 मार्च के लिए बदला गया। हिमाचल में भी भारी भूस्खलन के चलते 480 सड़क बंद रहीं। जगह-जगह पर आठ लोगों की मौत हुई। जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर यातायात बाधित होने के कारण हजारों लोग फंसे रहे। जलवायु परिवर्तन की ऐसी घटनाएं भविष्य में और बढ़ सकती हैं। इसलिए साल भर में जलवायु का कैलेंडर बनना चाहिए। पेड़-पौधे, जीव-जंतु, जल संरक्षण की दिशा में प्रयास करने होंगे। शीतकालीन सैलानी, पर्वतारोही मौसम की अनदेखी न करें। मनुष्य को अपने लालच की योजनाओं पर नियंत्रण करके प्रकृति को बचाने की दिशा में एकजुट प्रयासों को महत्त्व देना होगा।

ईश्वरीय देन

श्रीराम शर्मा आचार्य

भगवान ने मनुष्य के साथ कोई पक्षपात नहीं किया है, बल्कि उसे अमानत के रूप में कुछ विभूतियां दी हैं, जिनको सोचना, विचारणा, बोलना, भावनाएं, सिद्धियां-विभूतियां कहते हैं। ये सब अमानतें हैं। ये अमानतें मनुष्यों को इसलिए नहीं दी गई हैं कि उनके द्वारा वह सुख-सुविधाएं कमाए और स्वयं के लिए अपनी ऐय्याशी या विलासिता के साधन इकट्ठे करे और अपना अहंकार पूरा करे। ये सारी की सारी चीजें सिर्फ इसलिए उसको दी गई हैं कि इन चीजों के माध्यम से वो, जो भगवान का इतना बड़ा विश्व पड़ा हुआ है, उसकी दिक्कतें और कठिनाइयों का समाधान करे और उसे अधिक सुंदर और सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्रयत्न करे। बैंक के खजांची के पास धन रखा रहता है और इसलिए रखा रहता है कि सरकारी प्रयोजनों के लिए इस पैसे को खर्च करे। उसको उतना ही इस्तेमाल करने का हक है, जितना कि उसको वेतन मिलता है। खजाने में अगर लाखों रुपये रखे हों, तो खजांची उन्हें कैसे खर्च कर सकता है? पुलिस और फौज का कमांडर है, उसको अपना वेतन लेकर जितनी सुविधाएं मिली हैं, उन्हीं से काम चलाना चाहिए और बाकी जो उसके पास बहुत सारी सामर्थ्य और शक्ति बंदूक चलाने के लिए मिली है, उसको सिर्फ उसी काम में खर्च करना चाहिए, जिस काम के लिए सरकार ने उन्हें सौंपा है। हमारी सरकार भगवान है और मनुष्य के पास जो कुछ भी विभूतियां, अक्ल और विशेषताएं हैं, वे अपनी व्यक्तिगत ऐय्याशी और व्यक्तिगत सुविधा और व्यक्तिगत शौक-मौज के लिए नहीं हैं, और व्यक्तिगत अहंकार की तृप्ति के लिए नहीं हैं। इसलिए जो कुछ भी उसको विशेषता दी गई है, उसको उतना बड़ा जिम्मेदार आदमी समझा जाए और जिम्मेदारी उस रूप में निभाए कि सारे के सारे विश्व को सुंदर बनाने में, सुव्यवस्थित बनाने में, समुन्नत बनाने में उसका महान योगदान संभव हो। भगवान का बस एक ही उद्देश्य है-निःस्वार्थ प्रेम। इसके आधार पर भगवान ने मनुष्य को इतना ज्यादा प्यार किया। मनुष्य को उस तरह का मस्तिष्क दिया है, जितना कीमती कंप्यूटर दुनिया में आज तक नहीं बना।

रीडर्स मेल

बहुजन आंदोलन को नुकसान

बसपा सुप्रीमो मायावती ने पार्टी के संगठनात्मक ढांचे पर तावड़तोड़ फैसले लेकर पार्टी समर्थकों एवं कार्यकर्ताओं को ही नहीं, बल्कि राजनीतिक विश्लेषकों को भी अंचभे में डाल दिया है। पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन में मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद को राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर एवं अपने उत्तराधिकारी की भूमिका से अलग कर दिया था। इसके बाद आकाश आनंद को पार्टी से ही निष्कासित कर दिया है। बसपा में कभी मजबूत स्तंभ रहे राज्य सभा के पूर्व सांसद अशोक सिद्धार्थ को अनुशासनहीनता के कारण बसपा अध्यक्ष ने पहले ही पार्टी से निष्कासित कर दिया था। यह घटनाक्रम दर्शाता है कि बसपा में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। दलित राजनीति-अस्मिता की लड़ाई लड़ने वालों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

बहुजन आंदोलन का भी बड़ा नुकसान होगा।

वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

पाखंड का बोलबाला

हमारे देश में पाखंड का बोलबाला है। कथित पंडितों द्वारा कुंभ पड़ने की सूचना पर लोगों का हजूम टूट पड़ता है। कथित बीआईपी भीड़ को पीछे छोड़ कर पहले स्नान कर लोगों को क्या संदेश देना चाहते हैं, वही जानें। हां, लोगों में अंधविश्वास की जड़ें जरूर मजबूत करते हैं। देश में मंदिर जगह-जगह फैले हैं जहां लोग पूजा-अर्चना कर अपने को धन्य मानते हैं। चलो, यह भी ठीक है। लेकिन अनेक जगह दर्शन पाने के लिए 'पहले पैसे दो पहले दर्शन पाओ' का चलन है। कहा जाता है कि ईश्वर के दर पर सब बराबर हैं तो यह रिश्वत क्यों। किसी धर्म में भीड़ जुटती है लेकिन लाइन लगने, बीआईपी दर्शन के तामझाम नहीं होते। हिन्दू धर्म में यह लूट साफ देखी जा सकती है।

सीमा गुप्ता, बरेली

संभल जाने का वक्त

'पश्चिमीकरण' एक प्रचलित शब्द है। जब भारतीयों के नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों के पतन की बात होती है, तो अनायास मुख से 'पश्चिमीकरण' शब्द निकल जाता है, लेकिन क्या यह सही है? क्या देशवासियों में नैतिक पतन का एकमात्र कारक पश्चिमीकरण है? भारत का गौरवशाली इतिहास रहा है। वस, दो सौ साल के अंग्रेजी राज के कारण हम अपनी संस्कृति और सभ्यता को छोड़ पश्चिमी देशों की निकृष्ट परंपराओं का अनुकरण करने लगे? देश में बढ़ते अपराध और दुष्कर्मों के लिए पश्चिमीकरण को ही दोष दिया जाता है, जबकि ऐसा नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति, औद्योगिक विकास और नवागत तकनीकों का बढ़ता प्रयोग पश्चिमीकरण की ही देन है। संयुक्त परिवारों का विखंडन औद्योगिक विकास का परिणाम है, यह पश्चिमीकरण नहीं है। न भूलें कि कुरीतियों से मुक्ति दिला कर जाति, धर्म व भाषा से उत्पन्न भेदभावरहित समाज पश्चिमीकरण का ही फल है। देश में दिनचर्या में बदलाव आया है। उनकी प्राथमिकताएं और सोच भी बदली हैं। अधिकांश सामाजिक समस्याएं अंधाधुंध आधुनिकीकरण की देन हैं। हम आप सामाजिक-नैतिक जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ कर दिन-ब-दिन पतन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। आश्चर्य इस बात का भी है कि यहां संभलने की वजाय सारा आरोप हम पश्चिमीकरण पर मढ़ रहे हैं, और बदलाव के लिए कुछ नहीं कर रहे। यह गलत है। आज जरूरत संभलने की है।

संदीप कुमार, मधुपुर, झारखंड
letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
सहारा इण्डिया मास कम्यूनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिन्दा करदी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्यूनिकेशन प्रेस, सी-2,3, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा तथा 1209-1210, बराराम्ह हाउस, 21 के.जी. मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित।
समूह संपादक - डॉ. विजय राय। स्थानीय संपादक - रत्नेश सिंह*।
मुख्यालय - दिल्ली कार्यालय - 23352368, 23352369, 23352371, 23352372, फैक्स - 23352370, मुख्यालय - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750
वर्ष-34, अंक 198
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन तथा कानूनी मामलों के लिए उत्तरदायी

1968 की राष्ट्रीय शिक्षा-नीति में बहुत्तीयार त्रिभाषा-सूत्र प्रस्तुत किया गया था। इसका उद्देश्य देश में भाषाई संतुलन बनाए रखना और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहित करना है।

पीयूष कुमार दुबे
सहायक प्राध्यापक, कालेज आफ वोकेशनल स्टडीज, दिल्ली विश्वविद्यालय

आजकल

विकास की कुंजी है मातृभाषा में शिक्षा

यूनेस्को के वैश्विक शिक्षण निगरानी दल के अनुसार विश्व के 40 प्रतिशत छात्र अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त कर पाने से वंचित हैं। यानी इन 40 प्रतिशत छात्रों को उस भाषा में पढ़ने की सुविधा उपलब्ध नहीं है, जिसे वे अपनी सामान्य बातचीत में प्रयुक्त करते हैं। आज जब विश्व में घरेलू भाषा या मातृभाषा में शिक्षा के महत्व को लेकर समझ तथा जागरूकता बढ़ी है, तब भी इतनी बड़ी आबादी का अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा से वंचित होना न केवल चकित करता है, अपितु चिंतनीय भी है

गत दिनों यूनेस्को के वैश्विक शिक्षण निगरानी दल (जीईएम) द्वारा यह जानकारी दी गई कि विश्व के 40 प्रतिशत छात्र अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त कर पाने से वंचित हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो इन 40 प्रतिशत छात्रों को उस भाषा में पढ़ने की सुविधा उपलब्ध नहीं है, जिसे वे अपनी सामान्य बातचीत में प्रयुक्त करते हैं। आज जब विश्व में घरेलू भाषा/मातृभाषा में शिक्षा के महत्व को लेकर समझ और जागरूकता बढ़ी है, तब भी इतनी बड़ी आबादी का अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा से वंचित होना न केवल चकित करता है, अपितु चिंतनीय भी है।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि मातृभाषा में हमारे सीखने की गति तेज होती है, क्योंकि इस दौरान हमें मानसिक अनुबंद की प्रक्रिया से नहीं गुजरना पड़ता। इसके विपरीत जब हम मातृभाषा के अतिरिक्त अपनी द्वितीयक या तृतीयक भाषा में कुछ पढ़ते या सुनते हैं, तो पहले उसे अपनी मातृभाषा में मन ही मन अनूदित करते हैं, तब उसको ग्रहण कर पाते हैं। यही कारण है कि मातृभाषा में मस्तिष्क की ग्राह्यता सर्वाधिक होती है। मौलिक विचारों का सृजन एवं उनकी उद्भावनाएं मातृभाषा में अधिक होती हैं। अतः मातृभाषा में प्राथमिक या उच्च शिक्षा मिलने पर मस्तिष्क को केवल सृजन पर ही ध्यान केंद्रित करना होगा, उसे किसी और प्रक्रिया से नहीं गुजरना होगा।

इस संदर्भ में भारत की स्थिति पर विचार करें तो राष्ट्रीय शिक्षा-नीति-2020 से पूर्व का परिदृश्य बहुत उत्साहित करने वाला नजर नहीं आता। यहां समझना यह रही कि स्वाधीनता के पश्चात भारतीय भाषाओं के विकास और प्रसार पर नीतिगत रूप से समुचित ध्यान नहीं दिया गया। शिक्षा के माध्यम के रूप में इन्हें बढ़ावा देने का कोई सशक्त प्रयास नहीं किया गया। यही कारण है कि संभावनाएं होते हुए भी अवसर के अभाव में अकादमिक विकास की दृष्टि से भारतीय भाषाएं पिछड़ती चली गईं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के बाद का परिदृश्य एक आशा का संचार अवश्य करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस बिंदु पर दृढ़-संकल्पित है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के बिंदु 4.11 में उल्लिखित है, "छोटे बच्चे अपनी घर की भाषा/मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते हैं। जहां तक संभव हो, कम से कम ग्रेड 5 तक, लेकिन अधिक बेहतर होगा कि यह ग्रेड 8 और उससे आगे तक भी हो, शिक्षा का माध्यम, घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी।" कहने की आवश्यकता नहीं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति की मंशा और उद्देश्य तो भारतीय भाषाओं के भावी परिदृश्य को उज्ज्वल बनाने वाले हैं, किंतु इनके राष्ट्रव्यापी क्रियान्वयन की राह अभी सहज नहीं दिखती। दक्षिण की हिंदी-विरोधी राजनीति इसके मार्ग की बाधा बनी हुई है।

व्यर्थ का विरोध: जब भी भारतीय भाषाओं में शिक्षा के लिए कोई प्रयास या सुगबुगाहट भी होती है, तो इसे हिंदी थोपने का प्रयास कहकर दक्षिण से विरोध के स्वर उठने लगते हैं। इन दिनों भी तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के त्रिभाषा-सूत्र के विरुद्ध वक्तव्य दिए गए हैं। वे इसे हिंदी थोपने का प्रयास कहते-कहते यह तक कह गए कि इसके पीछे संस्कृत थोपने की मंशा है। उन्होंने कहा, "अगर आप नहीं थोपेंगे तो हम विरोध नहीं करेंगे, तमिलनाडु में हिंदी के शब्दों पर कालिख नहीं पोतेंगे। आत्म-सम्मान तमिलों की अन्तर्निहित है और हम किसी को भी इसके साथ खिलवाड़ नहीं करने देंगे।" स्टालिन का ऐसा वक्तव्य कोई नई बात नहीं है। पूर्व में भी वे ऐसे वक्तव्य देते रहे हैं, किंतु तथ्यों को देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि स्टालिन के इस वक्तव्य का कोई तथ्यात्मक आधार नहीं है। यह सत्य है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में त्रिभाषा-सूत्र को लागू करने की बात कही गई है, किंतु इसके द्वारा किसी राज्य पर कोई भाषा थोपने की मंशा तनिक भी नहीं दिखती। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिच्छेद 4.13 में उल्लिखित है, "संवैधानिक प्रविधानों, लोगों, क्षेत्रों और संघ की आकांक्षाओं और बहुभाषावाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने की जरूरत का ध्यान रखते हुए त्रिभाषा फार्मूले को लागू किया जाना जारी रहेगा। हालांकि तीन-भाषा के इस फार्मूले में काफी लचीलापन रखा जाएगा और किसी भी राज्य पर कोई भाषा थोपी नहीं जाएगी। बच्चों द्वारा सीखी जाने वाली तीन भाषाओं के विकल्प राज्यों, क्षेत्रों और निश्चित रूप से छात्रों के स्वयं के होंगे, जिनमें से कम से कम तीन में से दो भाषाएं भारतीय भाषाएं हों।" स्पष्ट है कि भारत के बहुभाषावादी परिदृश्य के दृष्टिगत यह त्रिभाषा-सूत्र एक उत्कृष्ट व्यवस्था है, जिसके आधार पर देश की बहुभाषिकता को बड़े सुनियोजित ढंग से शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाया जा सकेगा। देश के छात्र अपनी इच्छा और समझ के अनुसार विविध भाषाओं का अध्ययन कर सकेंगे।

हिंदी का समन्वयकारी स्वरूप: भारत जिस प्रकार विविधताओं में एकता वाला देश है, इसकी भाषा के रूप में हिंदी भी वैसे ही है। इस देश की अधिकांश भाषाओं की तरह संस्कृत से जन्मी हिंदी ने भारतीय संस्कृति के समन्वयकारी स्वरूप का अनुकरण करते हुए अपने भीतर देसी-विदेशी अनेक भाषाओं-बोलियों के शब्दों का समावेश किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी भाषा और साहित्य के स्वरूप एवं परंपरा को रेखांकित करते हुए लिखा है, 'हमारे व्यावहारिक और भावात्मक जीवन से जिस भाषा का संबंध सद से चला आ रहा है, वह पहले चाहे जो कुछ कही जाती रही हो, अब हिंदी कही जाती है। यह वही भाषा है जिसकी धारा कभी संस्कृत के रूप में बहती थी, फिर प्राकृत और अपभ्रंश के रूप में और इधर हजार वर्ष से इस बर्तमान रूप में जिसे हिंदी कहते हैं, लगातार बहती चली आ रही है। यह वही भाषा है जिसमें सारे उत्तरीय भारत के बीच चंद्र और जगनिक ने वीरता की उमंग उठाई, कबीर, सूर और तुलसी ने भक्ति की धारा बहाई, बिहारी, देव और पद्माकर ने श्रृंगार रस की वर्षा की, भारतेंदु, प्रतापनारायण मिश्र ने आधुनिक युग का आभास दिया और आज आप व्यापक दृष्टि फैलाकर संपूर्ण मानव जगत में मेल लानेवाली भावनाएं भर रहे हैं।'

हिंदी के प्रभाव में स्थानीय बोलियों-भाषाओं का ह्रास हुआ हो, ऐसा उदाहरण नहीं मिलता। अपने-अपने क्षेत्रों में उनका स्वतंत्र अस्तित्व कायम है। हिंदी के जरिये बस इन सबका राष्ट्रीयकरण हुआ है, इन्हें एक राष्ट्रीय पहचान मिली है। आज जो संघर्ष हिंदी अंग्रेजी से कर रही है, हिंदी के न होने की स्थिति में वह संघर्ष इन क्षेत्रीय भाषाओं-बोलियों को करना पड़ता और इस स्थिति में जैसे अतीत में बिरसाय के कारण अंग्रेजों के समक्ष हमारे देसी राजा नष्ट हो गए थे, संभव है उसी तरह अंग्रेजी के सामने ये भाषाएं-बोलियां भी नष्ट हो गई होतीं। अतः हिंदी की छत्रछाया में ये भाषाएं-बोलियां अंग्रेजी के प्रकोप से सुरक्षित हैं, ये बात इनके समर्थकों को समझनी चाहिए।

भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी से खतरा: अंग्रेजी वर्चस्व के चलते भारत समेत दुनिया की अनेक मातृभाषाएं अस्तित्व के संकट से जूझ रही हैं। भारत की स्थिति बेहद चिंताजनक है, क्योंकि यहां कि 196 भाषाएं विलुप्ति के कगार पर हैं। भारत के बाद अमेरिका की स्थिति चिंताजनक है, जहां की 192 भाषाएं दम तोड़ रही हैं। दुनिया में कुल 6,900 भाषाएं बोली जाती हैं, जिनमें से 2,500 भाषाएं विलुप्ति के कगार पर हैं। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषाओं की विश्व इकाई द्वारा दी गई जानकारी में बताया गया है कि बेलगाम अंग्रेजी इसी तरह से पैर पसारती रही तो एक दशक के भीतर लगभग ढाई हजार भाषाएं पूरी तरह समाप्त हो जाएंगी। भारत और अमेरिका के बाद इंडोनेशिया की 147 भाषाओं को जानने वाले खत्म हो जाएंगे। दुनिया भर में 199 भाषाएं ऐसी हैं, जिनके बोलने वालों की संख्या एक दर्जन लोगों से भी कम है। भाषाओं को संरक्षण देने की दृष्टि से ही 21 फरवरी को हर साल अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने की घोषणा की गई थी, लेकिन भाषाओं के बचाने के कोई सार्थक उपाय सामने नहीं आ पाए, जबकि अंग्रेजी का मुख विश्वग्रास के बहाने सुरसा की तरह फैलाता ही जा रहा है। कोई भी भाषा जब मातृभाषा नहीं रह जाती है तो उसके प्रयोग की अनिवार्यता में कमी और उससे मिलने वाले रोजगार मूलक कार्यों में भी कमी आने लगती है। भाषा और बोलियों की विलुप्ति के लिए अंग्रेजी भाषा पर दोषारोपण के बजाय स्टालिन हिंदी और संस्कृत पर भाषाओं को नष्ट करने का दोष मढ़ रहे हैं। यह ठीक नहीं है।

भारत की विविधताओं में एकता लाने का काम कर रही है भारतीय भाषाएं। प्रतीकात्मक

क्या है त्रिभाषा-सूत्र

त्रिभाषा-सूत्र कोई आज की चीज नहीं है। वर्ष 1968 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पहली बार यह सूत्र प्रस्तुत किया गया था। इसका उद्देश्य देश में भाषाई संतुलन बनाए रखना और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहित करना था। फिर 1986 और अब 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी त्रिभाषा-सूत्र के महत्व को स्वीकार करते हुए इसे आगे बढ़ाने की बात कही गई है। त्रिभाषा-सूत्र के अंतर्गत प्रविधान है कि छात्रों को विद्यालय स्तर पर तीन भाषाओं का अध्ययन करना होगा। इनमें से एक भाषा मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी, दूसरी हिंदी और तीसरी अंग्रेजी या कोई अन्य आधुनिक भारतीय भाषा हो सकती है। शिक्षा का माध्यम इन तीनों में से कोई भी भाषा हो सकती है।

स्पष्ट है कि इस नीति में कहीं सभी को उनकी अपनी मातृभाषा पढ़ने की पूरी स्वतंत्रता मिली हुई है तथा साथ में हिंदी और अंग्रेजी पढ़ने का विकल्प भी मिल रहा है। वस्तुतः यह भारत की बहुभाषिकता का शैक्षिक समावेशन करने की एक सुंदर व्यवस्था है। जहां तक हिंदी पढ़ने की बात है, तो यह तथ्य है कि देश की बड़ी आबादी हिंदी भाषी है। अतः राष्ट्रीय स्तर पर संपर्क के लिए हिंदी से उपयुक्त भाषा दूसरी नहीं है। हिंदी का अध्ययन इस दृष्टि से आवश्यक है। त्रिभाषा-सूत्र में हिंदी किसी भी स्थानीय भाषा की जगह नहीं ले रही, बल्कि एक विषय के रूप में पाठ्य में शामिल हो रही है। अतः इसके विरोध का कोई अर्थ नहीं है।

-पीयूष कुमार दुबे

खरी-खरी

मदद करने का हिसाब

डा. प्रदीप मिश्र

एक मोहल्ले में तोप साहब और टैंक साहब नाम के दो आदरणीय रहा करते थे। दोनों समान विचार के थे। दोनों का दिल मोहल्ला निवासी छोटे की एक जमीन पर आया हुआ था, लेकिन तोपजी ने बाजी मार ली और पहल करते हुए जमीन पर कब्जा कर लिया। ऐसी स्थिति में टैंक साहब क्या करते उन्होंने छोटे को मरते दम तक लड़ने का आशीर्वाद दे दिया। बोले, 'बिटवा निश्चिंत रहना। मैं हूं। तोपजी की निपटाना ही तुम्हारा लक्ष्य है। खुद बर्बाद हो जाओ। परिवार उजड़ जाए। तुम्हें अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होना है।' फिर टैंकजी ने छोटे को रुपये-पैसे, लाठी-डंडे, कट्टा- चाकू से मदद करनी शुरू कर दी। जिनकी वजह से बर्बाद होने के बावजूद छोटे ने तोपजी को कड़ी टक्र र देता रहा।

एक दिन टैंकजी ने हिसाब लगाया तो पता चला, छोटे को लड़ाने में उनका कुछ ज्यादा ही खर्च हो गया है। उन्होंने उसे बुलाया और बोले, 'मैंने लड़ाई में तुम पर बहुत खर्च कर दिए हैं।' 'धन्यवाद!' छोटे ने आभार व्यक्त किया तो टैंकजी बोले, 'धन्यवाद से काम नहीं चलेगा, तुम्हें अपनी जमीन हमें देनी पड़ेगी।' 'जमीन कैसे आपके नाम कर सकता हूं? यही तो एक प्रापर्टी है मेरे पास।' 'यह तो लड़ाई में मेरा सहयोग लेते समय सोचना चाहिए था। मैंने तुम पर पैसा खर्च किए। असलहा-बारूद दिए। राशन-पानी दिया...और तुमने मुझे क्या दिया?' 'धन्यवाद!' 'क्या?' टैंक साहब चकराए।

'कहा न कि धन्यवाद। अब क्या मेरी जान लेंगे?' 'देख, मैं मदद न करता तो तू तोपजी के आगे, घंटे भर में ढें बोल जाता। पीछे मैं हूं इसलिए इतने दिनों से तू अड़ा है। धन्यवाद तू अपने पास रख और जमीन मेरे नाम कर। वरना तोपजी से मेरी बात हो गई है। बोल रहे थे कि 'छोटे के चक्कर में आप मुझसे संबंध क्यों बिगाड़ रहे हैं? आप हटिए तो मैं इसे निपटाकर रोज-रोज की किचकिच बंद करूं।' 'आप लड़ाई में रहें या हटें, धन्यवाद के अलावा आपको कुछ नहीं मिलेगा।' टैंकजी स्तब्ध थे। सही भी है शतरंज के खेल में प्यादे जब वजीर में बदलता है, वह सबसे पहले उसे मारता है, जिसके जोर पर वह अब तक टिका हुआ था? (इस कथा का जेलेंस्की-ट्रंप संवाद से कोई संबंध नहीं है।)

पोस्ट

अगर क्रिकेट टीम में खिलाड़ियों का चयन नेता करेंगे तो फिर चुनाव में उम्मीदवारों का टिकट भी खिलाड़ियों को तय करना चाहिए। मानक गुप्ता@manakgupta

खिलाड़ियों के बारे में खेल से जुड़े लोग बोलें तो ही अच्छा लगता है। रोहित की फिटनेस पर सवाल उठाना और उनकी बाडी शेमिंग करना बचकाना है। बेहतर हो कि नेता लोग राजनीति पर ही फोकस करें। अशोक कुमार पांडेय@Ashok_Kashmir

राष्ट्रपति ट्रंप ने यूक्रेन को सभी सैन्य सहायता रोक दी है। ऐसा दबाव यूक्रेन शायद ही झेल पाए। यह यूक्रेन के साथ खड़े यूरोपीय देशों के लिए भी बड़ा झटका है। बिना अमेरिकी सहायता युद्ध जारी रखना उनके लिए भी कठिन है। कादंबिनी शर्मा@SharmaKadambini

मुझे जेलेंस्की के लिए बहुत करुणा महसूस हो रही है, लेकिन युद्धरत देश का राष्ट्रपति होने के नाते उन्हें इसका आकलन जरूर करना चाहिए। कई लोगों ने ऐसे परिदृश्य को लेकर चेताया था। संभव है कि पुतिन के साथ कोई समझौता इससे कम अपमानजनक होता। स्टैनले जोनें@johnstanly

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या अजिंक्य रहाणे को कप्तानी सौंपने का केकेआर का फैसला सही है?

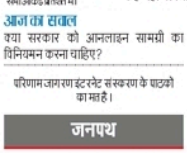

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या सरकार को आनलाइन सामग्री का विनियमन करना चाहिए?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

उसके मन में था भरा कूट-कूट कर ऐब,
कुछ लोगों हित पुण्य है लेकिन औरगजेब।
लेकिन औरगजेब क्रूर था अधम कसाई,
कब्जाया था राजमार कर अपना भाई।
हम भारत के लोग यह धोखी है जिसके,
चुनकर आते आजसदन में दुश्मन उसके।
- ओमप्रकाश तिवारी

विकास धूलिया
स्टेट ब्यूरो चीफ, उत्तराखंड

उत्तराखंड डायरी

अब त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के लिए कसरत

नगर निकाय चुनाव के बाद अब उत्तराखंड में गांवों की सरकार, यानी त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के लिए मैदान सजने लगा है। पंचायत चुनाव पार्टी सिंबल पर नहीं लड़े जाते, इसलिए सफ तौर पर नहीं कहा जा सकता कि किस पार्टी को अपना वर्चस्व कायम करने में सफलता मिलेगी, लेकिन दावों का दौर तो चलता ही है। यह इसलिए भी, क्योंकि चुनाव मैदान में उतरते भी अधिकांश वही लोग हैं, जो सीधे तौर पर विभिन्न दलों से जुड़े होते हैं। अगर दलीय आधार पर मुकाबले की बात की जाए तो लोकसभा, विधानसभा एवं नगर निकाय चुनाव में परचम फहराने वाली भाजपा को पंचायत चुनाव में भी चुनौती मुख्य रूप से कांग्रेस से ही मिलेगी। यद्यपि, मैदानी जिलों में सपा और बसपा से जुड़े लोग भी कुछेक स्थानों पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा सकते हैं। जिस तरह की शासन स्तर पर कसरत चल रही है, उससे तो यही संकेत मिल रहे हैं कि पंचायत चुनाव अप्रैल के अंतिम या मई के पहले हफ्ते में हो सकते हैं। समर्पित आयोग पंचायतों में अन्य पिछड़ा वर्ग आरक्षण के दृष्टिगत शासन को रिपोर्ट सौंप चुका है। अब आरक्षण का निर्धारण होना है। मतदाता सूची के पुनरीक्षण का कार्य भी संपन्न हो गया है।

कुल 13 जिलों वाले उत्तराखंड में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव 12 जिलों में होने हैं। राज्य गठन के समय से ही हरिद्वार जिले में पंचायत चुनाव शेष 12 जिलों के साथ नहीं होते, बल्कि लगभग ढाई वर्ष पहले होते हैं। हरिद्वार में त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव पिछली बार वर्ष 2022 में संपन्न हुए थे और अगले चुनाव वर्ष 2027 में होंगे। राज्य में ग्राम पंचायतों की कुल संख्या 7817 है। इनमें से 318 हरिद्वार जिले में हैं, जिन्हें छोड़कर 7499 ग्राम पंचायतों में चुनाव होंगे। इन 12 जिलों में ग्राम पंचायत प्रधान पद के 7499 पदों के अलावा सदस्य के कुल 55,585 पद हैं। जहां तक क्षेत्र पंचायतों का सवाल है, राज्य में इनकी संख्या कुल 95 है। इनमें से छह हरिद्वार जिले में हैं। यानी अब 89 क्षेत्र पंचायतों के लिए चुनाव होंगे। इनमें 89 क्षेत्र पंचायत प्रमुखों के साथ ही क्षेत्र पंचायत सदस्यों के 2974 पदों के लिए ग्रामीण मतदाता अपने प्रतिनिधि चुनेंगे।

उत्तराखंड का मानचित्र।

अब बात जिला पंचायतों की, तो हरिद्वार को छोड़ दिया जाए तो साफ है कि शेष 12 जिलों में जिला पंचायतों का गठन होना है। इनमें 12 जिला पंचायत अध्यक्ष पदों के अलावा जिला पंचायत सदस्य के 358 पदों के लिए चुनाव होंगे। इन 12 जिलों में त्रिस्तरीय पंचायतों का कार्यकाल गत वर्ष 27 नवंबर को समाप्त हुआ था। दिसंबर 2024 में इन्हें छह माह के लिए प्रशासकों के हवाले किया गया। महत्वपूर्ण यह कि प्रशासकों की भूमिका इस बार निवर्तमान जन प्रतिनिधियों की ही दी गई है। यानी ग्राम पंचायतों में ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायतों में क्षेत्र पंचायत प्रमुख एवं जिला पंचायतों में जिला पंचायत अध्यक्ष ही प्रशासक की भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। पंचायत चुनाव प्रक्रिया के अंतर्गत ग्राम, क्षेत्र एवं जिला पंचायतों के पुनर्गठन के साथ ही निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन भी हो चुका है।

पूर्व में जब राज्य निर्वाचन आयोग ने चुनाव की तैयारियों की अंतिम रूप दिया था उसमें पंचायत चुनाव में किस्मत आजमाने वाले उम्मीदवारों के लिए अधिकतम खर्च सीमा बढ़ाई जा चुकी है। ग्राम प्रधान से लेकर जिला पंचायत अध्यक्ष पदों के प्रत्याशियों को पहले की तुलना में 25 हजार से लेकर 60 हजार अधिक खर्च करने का मौका मिला है। ग्राम प्रधान के लिए जहां खर्च की सीमा 50 हजार से बढ़ाकर 75 हजार रुपये की गई है, तो वहीं प्रमुख क्षेत्र पंचायत के लिए खर्च की सीमा 1.40 लाख से बढ़ाकर दो लाख रुपये की गई है। अध्यक्ष जिला पंचायत के खर्च की सीमा 3.50 लाख से बढ़ाकर चार लाख रुपये की गई है। पंचायत चुनाव में अपराधीकरण को हतोत्साहित करने की दिशा में भी कदम उठाए गए हैं। यह स्पष्ट किया गया है कि किसी भी अपराध अथवा लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम में विहित अपराध के लिए यदि किसी को दोष सिद्ध ठहराया गया है तो वह पंचायत चुनाव नहीं लड़ पाएगा। इसके लिए पंचायत चुनाव लड़ने वाला प्रत्येक व्यक्ति नामांकन पत्र के साथ शपथ पत्र भी दाखिल करेगा, जिसमें वह अपने आपराधिक इतिहास का विवरण देगा। उत्तराखंड के पंचायती राज अधिनियम में यह प्रविधान किया गया है कि 27 सितंबर, 2019 के बाद जिनकी दो से अधिक संतान हैं, वे चुनाव नहीं लड़ पाएंगे। इससे पहले से जिनकी दो से अधिक संतान हैं, वे चुनाव लड़ने के पात्र हैं। बाद में इसमें संशोधन किया गया कि अगर किसी व्यक्ति की दूसरी संतान जुड़वा है तो उसे एक इकाई माना जाएगा और इस स्थिति में वह पंचायत चुनाव लड़ने के योग्य होगा।

त्रिस्तरीय पंचायत हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था का आधार स्तंभ मानी जाती हैं। इस दृष्टिकोण से इनका मजबूत होना बेहद जरूरी है। हालांकि राज्य सरकार पंचायतों को मजबूती दे रही है। यद्यपि, अभी भी इस क्षेत्र में काफी कुछ किया जाना शेष है। उत्तराखंड में बीते छह माह से विकास कार्यों की गति कुछ धीमी हुई है। इसे देखते हुए पंचायत चुनावों का जल्द होना जरूरी है। इसी के दृष्टिगत चुनावों की तैयारियां अब जोरों पर हैं। राज्य में बोर्ड की परीक्षाएं चल रही हैं। माना जा रहा है कि बोर्ड परीक्षाओं के समाप्त होने के बाद पंचायत चुनाव की अधिसूचना जारी कर दी जाएगी। कहा जा सकता है कि होली के बाद राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत चुनाव की तपिश भी महसूस की जाने लगेगी।

मंथन

मर्यादित हो अभिव्यक्ति

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार संविधान द्वारा देश के प्रत्येक नागरिक को दिया गया है, किंतु कुछ लोगों द्वारा आज इसका दुरुपयोग अश्लीलता को परोसने में किया जा रहा है

शिशिर शुक्ला
विभागाध्यक्ष, भौतिकी विभाग, स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय, शाहजहांपुर

पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने इंडिया गाट लैटेंट शो में अभिवावकों के बारे में अश्लील टिप्पणी करने के आरोपित यूट्यूबर रणबीर इलाहाबादिया को शो चलाने की सशर्त इजाजत दे दी। उसे लिखित आश्वासन देना होगा कि शो में शालीनता एवं नैतिकता के मानकों को बनाए रखा जाएगा। साथ ही कोर्ट ने अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर हो रही अभद्रता और अश्लीलता पर अंकुश की जरूरत बताते हुए कहा, अभिव्यक्ति की आजादी के मौलिक अधिकार के साथ कर्तव्य भी जुड़ा है। हम सेंसरशिप नहीं चाहते, पर खुली छूट भी नहीं हो सकती। कोर्ट ने केंद्र सरकार से इसके नियमन के उपाय करने और सभी हितधारकों से परामर्श कर एक प्रस्ताव तैयार करने को कहा है। रणवीर इलाहाबादिया द्वारा की गई अभद्र एवं अश्लील टिप्पणियों को लेकर पूरे देश में भारी आक्रोश व्याप्त हुआ और इसके साथ ही डिजिटल मंचों पर निगरानी एवं नकेल कसने की मांग भी बढ़ गई है। डिजिटल प्लेटफार्म पर अश्लीलता एवं हिंसापूर्ण सामग्री प्रसारित करने के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकार का दुरुपयोग किया जा रहा है, जो कि समाज में घोर चिंता का विषय बना हुआ है। ऐसे कार्यक्रम निश्चित रूप से समाज के प्रत्येक व्यक्ति को यह विचार करने पर विवश कर देते हैं कि आखिरकार हमारे मानवीय एवं सांस्कृतिक मूल्य तथा परंपराएं पतन के किस स्तर तक आ पहुंची हैं।

यह अच्छी बात है कि सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा डिजिटल मंचों पर उपलब्ध अश्लील एवं हानिकारक सामग्री पर कठोर प्रतिबंध लगाने के लिए नए कानूनी ढांचे की आवश्यकता पर विचार किया जा रहा है। सूचना एवं प्रसार मंत्रालय द्वारा ओटीटी (ओवर द टाप) प्लेटफार्मों को आचार संहिता एवं सूचना प्रौद्योगिकी नियम, 2021 का पालन करने की सलाह दी गई है। ये निर्देश भी हैं कि ओटीटी प्लेटफार्म कानून द्वारा निषिद्ध किसी भी तरह की सामग्री का प्रसारण न करें। ये प्लेटफार्म आयु के आधार पर सामग्री का वर्गीकरण करें एवं यह सुनिश्चित करें कि किसी भी दशा में ऐसी सामग्री बच्चों तक न पहुंचे, जो कि उनके मन मस्तिष्क पर हानिकारक प्रभाव डालती हो तथा उनको दिग्भ्रमित करने का प्रयास करती हो।

आज के समय में चाहे इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म हों अथवा ओटीटी प्लेटफार्म, दोनों पर अश्लील सामग्री की भरमार है। एक अन्य खास बात यह है कि पारंपरिक प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया पर अश्लीलता एवं हिंसा फैलाने वाली सामग्री को नियंत्रित करने के लिए विशिष्ट नियम बने हैं, किंतु ओटीटी प्लेटफार्म एवं इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्मों के लिए ऐसा कोई विशेष नियामक ढांचा मौजूद नहीं है। यही कारण है कि इन प्लेटफार्मों पर नकेल कसने के लिए एक मजबूत कानून बनाए जाने की मांग जोरों से उठ रही है। ओटीटी प्लेटफार्म पर दिखाई जाने वाली ज्यादातर वेब सीरीज अश्लीलता, अभद्रता, द्विअर्थी कमेंट, गाली गलौज एवं गंदे दृश्यों से परिपूर्ण होती हैं और ऐसी सामग्री देश के उस युवाबर्ग को विकृत मानसिकता की तरफ ले जाती है, जो भावी कर्णधार के रूप में तैयार हो रहा है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार संविधान द्वारा देश के प्रत्येक नागरिक को दिया गया है, किंतु आज इसका दुरुपयोग अश्लीलता को परोसने में किया जा रहा है। अधिक से अधिक लाइक्स, कमेंट एवं व्यूज पाने के चक्कर में आज नैतिकता, संस्कृति, संस्कार एवं आदर्शों को बहुत पीछे छोड़ा जा चुका है। एक अन्य कटुसत्य यह है कि अश्लीलतापूर्ण सामग्री को ज्ञानवर्धक सामग्री की अपेक्षा कई गुना ज्यादा संख्या में दर्शक उपलब्ध हो जाते हैं। इसके साथ ही उन्हें वाहवाही से भरी हुई असंख्य टिप्पणियों भी बड़ी सहजता के साथ हासिल हो जाती हैं। सवाल यह उठता है कि आज जबकि भारत एक विकसित देश का रूप लेने के लिए बड़ी तेजी से अग्रसर है, इंटरनेट मीडिया एवं ओटीटी प्लेटफार्मों द्वारा उसी विकसित भारत की रीढ़ अर्थात युवाओं के लिए एक ऐसा परिवेश उपलब्ध कराया जा रहा है, जो कि उनके संस्कारों, मूल्यों एवं नैतिकता को बुरी तरह अपनी गिरफ्त में जकड़ कर दूषित करता जा रहा है। प्रश्न यह है कि यदि ऐसा परिवेश स्तत रूप से विद्यमान रहा तो आखिर हमारा विकसित भारत कैसा होगा। क्या यह अपेक्षा की जाए कि वह भारत केवल और केवल तकनीकी क्षेत्र में विकसित होगा जबकि संस्कारों एवं मूल्यों के मामले में वह एकदम निचले पायदान पर आ जाएगा। आज यह एक गंभीर चिंता का विषय बन चुका है। आज महती आवश्यकता है कि डिजिटल प्लेटफार्मों पर ऐसे प्रतिबंध कड़ाई के साथ लगाए जाएं जिससे कि वे किसी भी ऐसी सामग्री का प्रसारण न करने पाएं, जो कि व्यक्ति से लेकर राष्ट्र को बुरी तरह प्रभावित करती है।

डिजिटल मंचों पर निगरानी एवं नकेल कसने की बढ़ती मांग। प्रतीकात्मक

****

हिन्दुस्तान
1936

सावधान अभिव्यक्ति

बीते दो दिनों में सुप्रीम कोर्ट ने अभिव्यक्ति की आजादी व धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने से जुड़े मामलों में जो फैसले किए हैं और इस दौरान जो टिप्पणियां की हैं, उसके निहितार्थों को समझने की आवश्यकता है। मंगलवार को 'मियां-टियां' और 'पाकिस्तानी' शब्दों के इस्तेमाल से जुड़ी याचिका की सुनवाई करते हुए न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने इस मुकदमे के आरोपी को इस आधार पर आरोप-मुक्त कर दिया कि यह आईपीसी की धारा 298 के तहत धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के अपराध के बराबर नहीं है। वैसे, अदालत ने इन शब्दों के प्रयोग को गैर-मुनासिब माना। गौर कीजिए, एक सरकारी कर्मचारी के खिलाफ इस्तेमाल इन शब्दों से जुड़े मुकदमे को निचली अदालत से सर्वोच्च न्यायालय तक का सफर तय करने में लगभग चार साल लगे, मगर दोनों पक्षों ने किसी पड़ाव पर यह समझदारी दिखाने की कोशिश नहीं की कि यह सिर्फ अहं की लड़ाई है। इससे न सिर्फ उनका वक्त और संसाधन जाया हो रहा है, बल्कि हजारों बहुत जरूरी मुकदमों की सुनवाई में भी देरी हो सकती है।

इससे पहले सोमवार को कांग्रेस सांसद इमरान प्रतापगढ़ी द्वारा सोशल मीडिया पर एक कविता पोस्ट करने के खिलाफ गुजरात पुलिस द्वारा दर्ज मामले की सुनवाई करते हुए आला अदालत ने राज्य पुलिस से जो कहा, वह कम मानीखेज नहीं है। अदालत की टिप्पणी थी कि हमारी आजादी के 75 साल बीत गए, अब तक तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की कीमत पुलिस को समझ में आ जानी चाहिए थी। दरअसल, इन दिनों सोशल मीडिया में जिस पैमाने पर विष-वमन हो रहा है, उसने पुलिस की चुनौतियां बढ़ा दी हैं। मगर उसकी कार्रवाइयां इसलिए प्रभावी नहीं होतीं, क्योंकि राज्य-दर-राज्य उनके पीछे के राजनीतिक पक्षपात भी स्पष्ट हो जाते हैं। राज्य पुलिस अक्सर सरकार विरोधी पोस्ट के मामले में तो तत्परता दिखाती है, मगर सत्तारूढ़ दल से जुड़े लोगों की वैसी ही गतिविधियां वह नजरअंदाज कर देती है। ऐसे में, सुप्रीम कोर्ट ने उचित ही गुजरात पुलिस को एहसास कराया है कि उसे असामाजिक तत्वों से निपटते हुए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के बुनियादी लोकतांत्रिक मूल्य की रक्षा भी करनी है।

सुप्रीम कोर्ट ने उचित ही कहा कि अश्लीलता व अभद्रता से निपटते हुए लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की आजादी के बुनियादी मूल्य की भी हमें रक्षा करनी होगी।

सोमवार को ही एक अन्य मामले में यू-ट्यूबर व पॉडकास्टर रणवीर इलाहाबादिया को पॉडकास्ट प्रसारित करने की इजाजत देते हुए शीर्ष अदालत ने अभिव्यक्ति की आजादी और प्रतिभा के उपयोग को लेकर कुछ गंभीर टिप्पणियां कीं। अदालत ने दोटूक शब्दों में कहा कि बोलने की आजादी का यह मतलब कतई नहीं है कि कुछ भी बोला जाए। न्यायमूर्ति सूर्यकांत शर्मा ने उचित ही कहा कि हर समाज में नैतिकता के पैमाने अलग-अलग हो सकते हैं। हमने अपने यहां अभिव्यक्ति की आजादी की जो गारंटी दी है, वह शर्तों के साथ है। कला की आजादी का उपयोग करते हुए कलाकारों के लिए उन सीमाओं का ख्याल रखना जरूरी है। निस्संदेह, रणवीर ने उन मर्यादाओं का उल्लंघन किया था। लेकिन आइंदा ऐसे हालात न बनें, इसके लिए अदालत ने सरकार से सोशल मीडिया व यू-ट्यूब की सामग्रियों के नियमन को लेकर कानून बनाने को भी कहा। मगर ऐसा करते हुए भी अदालत ने सेंसरशिप से बचने की हिदायत नत्थी की है। जाहिर है, उच्छृंखल हुए बिना आजादी के उपयोग में ही नागरिक का भी भला है और समाज का भी। चूंकि सोशल मीडिया अब आमदनी का भी एक महत्वपूर्ण जरिया बन चुका है, इसलिए इसमें वैधानिक जिम्मेदारी तय होनी ही चाहिए।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 04 मार्च, 1950

पाकिस्तानी पत्रों का भंडाफोड़

नई दिल्ली, ३ मार्च। प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने आज रुद्र के नाम रेडियो से एक सन्देश प्रसारित करते हुए कहा कि अब बंगाल की स्थिति की ओर से अधिक काल तक आंखें मूंदना सम्भव नहीं है। उन्होंने कहा कि कुछ दिन पूर्व जब संसद में अपने वक्तव्य में मैंने युद्ध की संभावना की ओर संकेत किया था, तो मेरी आलोचना की गई थी। लेकिन मुझे समझने वाले व्यक्तियों को पता होना चाहिए कि मैं युद्ध तथा उसके समस्त अंगों से घृणा करता हूं और अधिक से अधिक उसे टालने का प्रयत्न करूंगा। लेकिन जब शांति नहीं है और युद्ध से भी बुरी घटना सम्भव है और जनता फिर बर्बरता के युग को वापस जा रही है, तब संतोषपूर्वक शांति की बात करना सचाई की ओर से अपने को अंधेरे में रखना है। अतः हमें इस वास्तविक संकट की प्रत्येक संभावना और तथ्यों पर विचार करना चाहिए तथा उसे टालने की चेष्टा करनी चाहिए।

नेहरूजी ने घोषित किया कि मैं नहीं जानता कि पाकिस्तानी पत्रों (अखबारों) में मिथ्या प्रचार की बाढ़ तथा उन्मत्त प्रलाप से किस प्रकार निपटा जाये। उदाहरणार्थ, मैंने कलकत्ता के उपद्रवों में मरने वालों की संख्या ३१ बताई थी, जिनमें २० मुसलमान और ११ हिन्दू थे। पाकिस्तानी पत्रों ने १०,००० मुसलमानों के मारे जाने का शीर्षक दिया। २० और १०,००० में कुछ अन्तर होता है और वहीं अंतर सचाई तथा पाकिस्तानी पत्रों के ढंग में है, जो वे बंगाल की स्थिति के बारे में शीर्षक देने में बरत रहे हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की जनता भी हमारी ही तरह है और उसमें भी हमारे समान ही अच्छाइयां और बुराइयां हैं। लेकिन मूल कठिनाई यह है कि पाकिस्तान सरकार द्वारा अपनाई जाने वाली एक धार्मिक तथा साम्प्रदायिक नीति से अनिवार्यतः जनता में पूर्ण नागरिकता के अभाव की भावना पैदा होती है और उन्हें सतत संकट बना रहता है, जो बहुसंख्यक जाति के नहीं हैं। उस नीति का परिणाम घृणा और हिंसा है और उससे संघर्ष पैदा होता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले कुछ सप्ताहों में पूर्वी पाकिस्तान से पश्चिमी बंगाल में लगभग ५५,००० शरणार्थी आ चुके हैं। यह एक कठिन समस्या है। हममें से कोई भी व्यक्ति जादू नहीं कर सकता, लेकिन कम से कम हम सद्भावना और दृढ़ता से कार्य कर वास्तविक संकट का सामना कर सकते हैं।

यूक्रेन में अगर युद्ध रोक पाए यूरोप

अमेरिका हो या यूरोप, किसी भी शांति-समझौते पर पहुंचने के लिए उसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। यूक्रेन पर दबाव बनाकर किया गया कोई समझौता सार्थक नहीं होगा।

यहां स्कैन करें

अश्विनी महापात्रा | प्रोफेसर, जेएनयू

ओवल ऑफिस में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ बैठक बेनतीजा रहने के बाद फ्रांस-ब्रिटेन सहित पूरे यूरोप के नेता जिस तरह यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के पक्ष में एकजुट हो गए हैं, उससे कयास लगाया जाने लगा है कि यूक्रेन-संकट का जल्द समाधान निकल सकता है। ब्रिटिश प्रधानमंत्री केर स्टार्मर ने तो यूक्रेन और उसकी सुरक्षा का समर्थन करते हुए युद्ध-समाप्ति के लिए चार चरणों का एक खाका भी पेश कर दिया है। उनकी योजना के मुताबिक, पहले चरण में यूक्रेन को सैन्य सहायता देते हुए रूस पर आर्थिक दबाव बनाया जाएगा। दूसरे चरण में, स्थायी शांति-प्रक्रिया सुनिश्चित की जाएगी, जिसमें यूक्रेन की संप्रभुता और सुरक्षा से कोई समझौता नहीं होगा। उसे भी बातचीत की मेज पर बिठाया जाएगा। तीसरे चरण में, शांति समझौते के बाद यूक्रेन की सुरक्षा क्षमताओं को मजबूत किया जाएगा, ताकि भविष्य के किसी भी आक्रमण के लिए वह तैयार रहे, और चौथे चरण में, यूक्रेन समझौते की रक्षा करने और शांति के हिमायती देशों के साथ गठबंधन किया जाएगा। ये तमाम बातें कागज पर काफी उम्मीद जगाती हैं, मगर यूक्रेन-रूस युद्ध को रोकना और शांति-प्रक्रिया को आगे बढ़ाना क्या इतना आसान है?

आनन-फानन में ब्रिटेन ने यह योजना इसलिए पेश की है, क्योंकि पिछले दिनों अमेरिकी राष्ट्रपति कार्यालय में डोनाल्ड ट्रंप और वोलोदिमीर जेलेंस्की के बीच की तीखी बहस पूरी दुनिया ने देखी। हालांकि, ऊपरी तौर पर यही लग रहा था कि डोनाल्ड ट्रंप शांति के हिमायती ऐसे नेता हैं, जो हर हाल में युद्ध खत्म करवाना चाहते हैं, मगर असलियत में वह उस दिन अपने देश की जनता को यह बताना चाह रहे थे कि पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कितनी गलतियां की हैं। दुनिया भर के मीडिया के सामने जैसी आक्रामकता उस दिन दिखाई गई, वह सब अनायास नहीं था, बल्कि राष्ट्रपति ट्रंप की सोची-समझी रणनीति का हिस्सा था।

दरअसल, ट्रंप चुनाव प्रचार के समय से कहते आ रहे हैं कि फरवरी, 2022 से अब तक अमेरिका इस युद्ध में 65 अरब डॉलर की राशि फूंक चुका है। ट्रंप के मुताबिक, यदि बाइडन यूक्रेन को हथियार, मिसाइल व अन्य युद्ध सामग्री मुहैया नहीं कराते, तो अमेरिकी अर्थव्यवस्था पर बोझ नहीं पड़ता। 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' की अपनी संकल्पना भी वह तभी साकार कर सकते हैं, जब अमेरिकी संसाधनों का पूरा इस्तेमाल अपने देश के हित में हो। यही कारण है कि उन्होंने जेलेंस्की पर दबाव बनाने का भरसक प्रयास किया। मगर यूक्रेन के राष्ट्रपति अड़ गए, जिसके बाद यूरोपीय देश उनका साथ देने के लिए आगे आए हैं।

यूरोपीय देशों का कदम बढ़ाना मुनासिब भी था, फिर चाहे अमेरिका के साथ उसके तनाव क्यों न बढ़ गए हों। वास्तव में, यह यूक्रेन ही था, जिसने यूरोप के कहने पर अपनी परमाणु क्षमताओं से किनारा कर लिया था। अगर यूक्रेन अपनी परमाणु योजना पर आगे बढ़ता रहता, तो आज परमाणु हथियारों के जखीरे के मामले में दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा देश होता। हालांकि, अभी जेलेंस्की इसलिए यूरोपीय देशों का साथ चाहते हैं, क्योंकि वह अकेले रूस से नहीं लड़ सकते। वैसे, यूरोपीय देश अमेरिका को शांति-प्रक्रिया से बाहर रखने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन वाशिंगटन की सहायता के बिना रूस-यूक्रेन युद्ध में समझौता संभव भी नहीं है। यूरोपीय देश लंबे समय तक यूक्रेन की आर्थिक मदद नहीं कर सकते, और यह बात जेलेंस्की भी भली-भांति जानते हैं। इसलिए, वह भले ट्रंप पर उंगली उठाकर लौट आए हों, मगर उनको वापस वाशिंगटन जाना ही पड़ेगा। उन्होंने बाद में अमेरिका के प्रति नरमी दिखाई भी है। हां, अब यह सब कितनी जल्दी होता है, यह देखने वाली बात होगी।

अमेरिका हो या यूरोप, किसी भी शांति-समझौते पर पहुंचने के लिए उसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। सबसे पहले तो यही सुनिश्चित करना होगा कि समझौते का मसौदा ऐसा बने, जो दोनों पक्षों को मंजूर हो। अगर एक धड़ा भी नाराज रहा, तो फिर शांति टिक नहीं सकती। डोनाल्ड ट्रंप को इस बात का खास ख्याल रखना होगा। यदि जेलेंस्की मन मारकर किसी समझौते पर राजी होते हैं या दबाव में टूट जाते हैं, तो आने वाले दिनों में फिर से इस इलाके में तनाव दिख सकता है। मुमकिन है, ऐसा कोई समझौता यूक्रेनियों को पसंद न आए और वे मौका मिलते ही प्रहार करने के मनसूबे बांधने लग जाएं! अमेरिका के मौजूदा रुख से यूक्रेन के असंतुष्ट होने की आशंका ही अधिक है।

बहरहाल, रूस द्वारा कब्जा किए गए क्षेत्रों को वापस यूक्रेन को दिलाना भी संभावित शांति-समझौते की एक बड़ी चुनौती होगी। रूसी राष्ट्रपति का दावा है कि उन्होंने यूक्रेन का करीब 20 फीसदी हिस्सा अपने देश में मिला लिया है। ऐसे में, यूक्रेन के कितने क्षेत्र को रूस वापस देने के लिए तैयार होगा और किस समय-सीमा के भीतर यह प्रक्रिया पूरी होगी- इस पर सहमति बनानी होगी। इसी तरह, साल 2014 से ही क्रीमिया पर रूस का कब्जा बना हुआ है, तो शांति-समझौते का यह भी एक बड़ा मुद्दा हो सकता है।

इन सभी कवायदों में भारत की भूमिका बहुत सीमित होगी। ऐसे में, चुपचाप बदलते घटनाक्रमों पर नजर बनाए रखना ही उचित है। हालांकि, यूक्रेन के बहाने यदि अमेरिका और यूरोप में तनाव बढ़ता है, तो यह भारत के हित में हो सकता है। ऐसी किसी तनातनी में भारत को अपने पाले में करने के लिए यूरोपीय देश यहां अपनी आर्थिक गतिविधि बढ़ा सकते हैं, जिससे कई तरह के नए निवेश भारत आ सकते हैं।

रही बात रूस की, तो इस पूरे मामले में वह सबसे बेहतर स्थिति में दिख रहा है। धीरे-धीरे ही सही, उसने यूक्रेन पर अपनी गिरफ्त मजबूत बना ली है। चूंकि अब यूक्रेन से अमेरिका ने हाथ झटक लिया है और खबर यह भी आ रही है कि अमेरिका ने यूक्रेन को दी जाने वाली सहायता समीक्षा होने तक रोक दी है। उसने कहा है कि राष्ट्रपति ट्रंप का ध्यान शांति पर है और वह अपने लक्ष्य को लेकर प्रतिबद्ध हैं। ऐसे में, रूस के लिए परिस्थिति काफी अनुकूल दिख रही है। लिहाजा, अभी पूरा दबाव वोलोदिमीर जेलेंस्की पर है कि वह किस तरह यूक्रेन-संकट का हल निकाल पाते हैं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

प्रभावशाली यू-ट्यूबर्स में बढ़े जिम्मेदारी का एहसास

यहां स्कैन करें

चार्ल्स असीसी | सह-संस्थापक, फाउंडिंग फ्यूल

सर्वोच्च न्यायालय ने एक जाने-माने यू-ट्यूबर पर दो सप्ताह से लगी रोक को 3 मार्च को हटा लिया। सर्वोच्च न्यायालय ने उस यू-ट्यूबर पर जुर्माना नहीं लगाया या उसे चेतावनी नहीं दी थी; उसे बस कानूनी रूप से वीडियो बनाने से रोक दिया था। भारत के चर्चित यू-ट्यूबर्स में से एक रणवीर इलाहाबादिया ने एक कॉमेडी शो के एपिसोड में अश्लील टिप्पणियां की थीं, जिससे विवाद हो गया था। सुप्रीम कोर्ट ने हस्तक्षेप किया और उसे कंटेंट बनाने से रोक दिया। लगभग उसी समय, सरकार ने दिशा-निर्देश जारी किए, जिसमें सोशल मीडिया और सोशल प्लेटफॉर्म को आईटी नियम 2021 के अनुरूप ए-रेटेड कंटेंट के लिए सख्त एक्सेस कंट्रोल लागू करने के लिए कहा गया।

वास्तव में, यह मामला व्यापक है। भारत में इंटरनेट को लेकर बुनियादी बदलाव हो रहे हैं। सोचकर हैरत होती है कि इंटरनेट की प्रकृति पहले क्या थी, क्या बन गई और कितने बदलाव आ रहे हैं! डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हमारी अभिव्यक्ति की सीमा क्या है?

यह ऐसा सवाल है, जिसका सामना हर किसी को कभी न कभी करना पड़ रहा है। ऑनलाइन अभिव्यक्ति को कौन नियंत्रित करता है- सोशल प्लेटफॉर्म, अदालतें या सरकार? इस गिनती में उपयोगकर्ता कहां आते हैं? जब यू-ट्यूब के तीन सह-संस्थापकों में से एक जावेद करीम अप्रैल 2005 में सैन डिएगो चिड़ियाघर में हाथी के एक बाड़े के सामने खड़े थे, तो उन्हें बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि वह इतिहास रच रहे हैं। 19 सेकंड की एक क्लिप, भी एट द जू, यू-ट्यूब पर अपलोड किया गया पहला वीडियो था। यह वीडियो भले साधारण था, पर उसने एक बहुत बड़ी और महती शुरुआत की।

यू-ट्यूब को शुरू हुए अब बीस साल हो जाएंगे, पर अभी भी यहां हम अभिव्यक्ति की सीमाओं को सुनिश्चित नहीं कर पाए हैं।

यू-ट्यूब की शुरुआत एक ऐसी जगह के रूप में हुई थी, जहां लोग घरेलू वीडियो और ट्यूटोरियल साझा कर सकते थे, अपने जीवन का दस्तावेजीकरण कर सकते थे और जो चाहे प्रसारित कर सकते थे। यू-ट्यूब पर पारंपरिक मीडिया जैसी निगरानी या चौकीदारी नहीं थी। ऐसे में, इसने ऐसी संस्कृति को जन्म दिया, जहां अनजान और मामूली आवाजों को भी दर्शक-श्रोता मिलने लगे।

जल्दी ही यू-ट्यूब प्लेटफॉर्म को भी एहसास हुआ कि लोगों का जुड़ाव ही उनकी कमाई है, तो उन्होंने वायरल होने को पुरस्कृत करना शुरू किया। वायरल होने की रणनीति सरल थी - लोगों को चकित करना, लाभ पहुंचाना और अपमानित करना। एल्गोरिदम ने सुनिश्चित किया कि यू-ट्यूब पर आई सामग्री को उन लोगों तक पहुंचाया जाए, जो सबसे ज्यादा प्रतिक्रिया करते हैं। यहां आक्रोश कोई गलत बात नहीं, बल्कि सिस्टम का हिस्सा है। यही वह इंटरनेट मंच है, जिस पर इलाहाबादिया जैसे लोग काम करते हैं और इसीलिए आज अक्सर विवाद की स्थितियां बन जाती हैं।

यह बदलाव कैसे हुआ? यहां ऐसा लगता है कि माहौल सावधानीपूर्वक विचार-विमर्श के विपरीत आक्रोश से प्रेरित है। ताजा मामले में यह तो साफ हो गया है कि सर्वोच्च न्यायालय भी सेंसरशिप नहीं चाहता है। हालांकि, यहां सब कुछ इतना आसान नहीं है। सरकारें एक व्यवस्था लागू करना चाहती हैं, प्लेटफॉर्म अपने उत्तरदायित्व से बचना चाहते हैं और यू-ट्यूबर बीच में फंस जाते हैं। न्यायालय ने इलाहाबादिया को कंटेंट बनाने की इजाजत देकर जो मिसाल कायम की है, उसे नजरंदाज करना मुश्किल है।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने बाद में एक सलाह जारी की है, जिसमें प्लेटफॉर्म से कंटेंट के आयु-आधारित वर्गीकरण का कड़ाई से लागू करने के लिए कहा गया है। यह डिजिटल कंटेंट पर नियंत्रण को कड़ा करने का संकेत देता है। कुछ हद तक यह अपरिहार्य था। एक वास्तविक जोखिम यह है कि इलाज यहां बीमारी से भी बदतर हो सकता है। जब जरूरत से ज्यादा नियम बन जाते हैं, तो अभिव्यक्ति दब जाती है और जब कम नियम होते हैं, तो आप बुरे लोगों को पनपने देते हैं। सही संतुलन पाने के लिए प्रयास जारी रहने चाहिए।

अंततः कंटेंट बनाने वालों को इस मामले से सबक लेना चाहिए। किसी भी प्लेटफॉर्म से शक्ति आती है और जिम्मेदारी भी। हम ऐसी दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं, जहां इंटरनेट पर सक्रिय रचनाकारों को रचनात्मकता के साथ अनुपालन के बारे में भी सचेत रहना होगा। इससे इंटरनेट ज्यादा साफ-सुथरा और स्व-सेंसर होगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

सच्चे सखा की खोज

एक साधक ने प्रश्न किया है कि संसार में जितने रिश्ते बनते हैं, वे सब मृत्यु के बाद खत्म हो जाते हैं। ऐसे में, किस रिश्ते को सच्चा मानना जाए?

इस संसार में प्रेम का बंधन सबसे प्रबल और संवेदनशील है। जब यह बंधन सच्चे हृदय से जुड़ता है, तो वियोग को सहना असंभव कठिन हो जाता है। यह बंधन इतना मजबूत होता है कि कोई व्यक्ति अपने प्रिय से अलगाव को सहन नहीं कर सकता। मगर क्या यह बंधन वास्तव में शाश्वत होता है? इस संसार में कोई भी व्यक्ति आपके बिना नहीं रह सकता, यह केवल एक भ्रम है। जब कोई व्यक्ति इस दुनिया से जाता है, तो करीबी परिजन खूब विलाप करते हैं, परंतु चंद दिनों में वे सब अपने सामान्य जीवन में लौट आते हैं। धीरे-धीरे वे अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त हो जाते हैं और कुछ दिनों या महीनों के बाद उस व्यक्ति की स्मृति धुंधली पड़ जाती है। जीवन की यह सच्चाई दिखाती है कि कोई भी सांसारिक संबंध सदा के लिए नहीं होता।

सच्चा रिश्ता तो वही है, जिससे जन्म-जन्मांतर का संबंध होता है। जो आपके साथ हर परिस्थिति में रहता है, वह बंधु है, और वह कोई अन्य नहीं, बल्कि परम पुरुष हैं। वही एकमात्र सच्चे बंधु हैं, जो आपसे भूतकाल में भी प्रेम करते थे, वर्तमान में भी करते हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे। बंधु के बाद दूसरा महत्वपूर्ण शब्द है सुहृद। संस्कृत में सुहृद का अर्थ होता है, वह सखा, जिसके साथ कभी कोई मतभेद न हो। सांसारिक जीवन में, चाहे वह पति-पत्नी का संबंध हो, माता-पिता और संतान का संबंध हो या भाई-बहन का, मतभेद होना स्वाभाविक है। परंतु परम पुरुष के साथ कभी कोई मतभेद नहीं होता।

सखा का अर्थ मित्रता के सामान्य अर्थ से कहीं अधिक गहरा है। जब अलग-अलग शरीर होते हुए भी दो लोगों का मानसिक और आत्मिक संबंध एक हो जाता है, तो वे सखा कहलाते हैं। इस रिश्ते में प्रेम इतना गहरा हो जाता है कि दो व्यक्तियों के विचार, भावनाएं और उद्देश्य एक हो जाते हैं। इसलिए केवल परम पुरुष ही आपके सच्चे सखा हो सकते हैं। अर्जुन के जीवन के हरेक संघर्ष और निर्णय में श्रीकृष्ण उनके सखा बनकर साथ रहे, न केवल युद्ध भूमि में, बल्कि जीवन के हर मोड़ पर।

इस रिश्ते में प्रेम इतना गहरा हो जाता है कि दो व्यक्तियों के विचार, भावनाएं और उद्देश्य एक हो जाते हैं। इसलिए केवल परम पुरुष ही आपके सच्चे सखा हो सकते हैं।

इसलिए, परम पुरुष को भूलना सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा को हर समय, हर क्षेत्र में और जीवन के हरेक स्तर पर स्मरण करने को ध्रुव-स्मृति कहा जाता है। इस स्मृति को एक क्षण के लिए भी न खोएं। अपनी साधना और आत्मचिंतन के माध्यम से ध्रुव-स्मृति विकसित करने का प्रयास करें और परम पुरुष के साथ एकाकार होकर अनंत शांति प्राप्त करें।

श्री श्री आनंदमूर्ति

राजनाथ सिंह | केंद्रीय रक्षा मंत्री

आज हम चैन से रह पा रहे हैं, तो इसके पीछे सीमा पर खड़े सैनिक जिम्मेदार हैं। ऐसे में, उनके परिजनों की चिंता करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। यह समाज समर्थ लोगों से कुछ उम्मीद करता है। मुझे विश्वास है, आप उनकी उम्मीद पर खरे उतरेंगे।

पहाड़ों पर भी निर्माण कार्य होने चाहिए

पहाड़ी राज्यों में जब भी कोई हादसा होता है, तो तुरंत निर्माण-कार्यों को निशाने पर लिया जाने लगता है। यह आरोप लगाया जाता है कि विकास-कार्यों से ही पहाड़ कमजोर हो रहे हैं और ये हादसों को न्योता देने लगे हैं। माणा हादसे के बाद भी यही राग गाया जा रहा है। जबकि, हिमस्खलन की वजह प्राकृतिक थी। दो दिन से वहां बर्फबारी हो रही थी, इसलिए निर्माण-कार्य को मौसम के अनुकूल संचालित करना चाहिए था। मगर इस मामले में चूक हो गई, जिसके कारण आठ मजदूरों को अपनी जान गंवानी पड़ गई।

इस राज्य में दरअसल भौगोलिक परिस्थितियां बिल्कुल अलग हैं या यूं कहें कि पहाड़ी राज्यों की परिस्थितियां मैदानी सूबों से अलग होती हैं, इसलिए इनकी इन विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए निर्माण-कार्य चलाए जाते हैं। चूंकि पिछले कुछ निर्माण-कार्यों में संजीदगी नहीं दिखाई गई, इसलिए यहां हिमस्खलन, भूस्खलन या बाढ़ जैसी आपदाएं आईं, जिनको मानव-जनित कहकर कर दिया गया। मगर सवाल यह भी है कि क्या पहाड़ी राज्यों में रहने वाले लोगों को अच्छी सड़कें नहीं मिलनी चाहिए? अगर हम पहाड़ों पर निर्माण-कार्य का विरोध ही करते रहेंगे, तो यहां रहने वाले लोगों तक बुनियादी सुविधाएं भला किस तरह पहुंच सकेंगी? पहाड़ों की तलहटी में बसने वाले परिवार कितनी जटिल परिस्थितियों का सामना करते हैं, इसका एहसास उन्हीं लोगों को है। मैदानी इलाकों के लोग उस एहसास को कभी नहीं समझ सकते। उन्हें तो बस एसी बंद कमरों में विकास-कार्यों का विरोध करना आता है। वे यह कहां समझ सकेंगे कि रात में जब आपात चिकित्सकीय सहायता की जरूरत पड़ती है, तो पहाड़ी लोग किस कदर मुश्किलें झेलते हुए मरीज को अस्पताल लेकर आते हैं? तो, हमें उनकी समस्याओं को गंभीरता से समझना चाहिए। आखिर विकास की रोशनी यहां तक भी जानी ही चाहिए।

वास्तव में, ये हादसे इसलिए होते हैं, क्योंकि निर्माण-कार्यों में उचित तकनीक का इस्तेमाल नहीं किया जाता। इसके लिए जरूरी है कि वैज्ञानिक अध्ययन किए जाएं, स्थानीय लोगों को ज्यादा जोड़ा जाए और आपदा प्रबंधन के बेहतर उपाय किए जाएं। वनों और पहाड़ों का संरक्षण भी आवश्यक है। कहने का मतलब यह है कि उत्तराखंड का विकास निहायत जरूरी है, लेकिन यह पर्यावरण के अनुकूल होना चाहिए। यहां की भौगोलिक परिस्थितियों को समझकर ही हम विकास-कार्यों को आगे बढ़ा सकेंगे। उत्तराखंड को भी एक समृद्ध व सतत विकासशील राज्य बनने का पूरा हक है और इसके लिए जरूरी है कि यहां निर्माण-कार्यों में कमी न की जाए।

रोहित कुमार, टिप्पणीकार

अनुलोम-विलोम

माणा हादसा

ऐसे हादसों के बाद तो संभल जाइए

उत्तराखंड के माणा में हुआ हादसा दुखद है। निश्चित तौर पर देश के जवानों ने मजदूरों को बचाने में अपनी जान की बाजी तक लगा दी, फिर भी हमने आठ जिंदगियां गंवा दीं। उत्तराखंड में आपदाएं स्वाभाविक हैं, लेकिन यह सुखा अब मानव-जनित आपदाओं के लिए जाना जाने लगा है, जिसे दुर्भाग्यपूर्ण ही कहेंगे। अपने नैसर्गिक सौंदर्य, अध्यात्म और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध यह राज्य अपनी भौगोलिक संरचना में बेहद संवेदनशील है, जिसे हम बार-बार भूल जाते हैं। पहाड़ों के दरकने या भूस्खलन जैसी घटनाओं के लिए पहाड़ी राज्यों में होने वाली निरंकुश मानवीय गतिविधियां मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। आर्थिक क्रियाकलाप, पर्यटन और आधुनिक विकास के नाम पर होने वाले ये निर्माण-कार्य कितने खतरनाक हैं, माणा हादसे से भी इसका पता चलता है।

सरकार निश्चय ही आपदा की स्थिति में राहत-कार्य पहुंचाती है, पर आज जरूरत है, समस्या की जड़ को समझकर उसके प्रभावी समाधान के लिए सही रणनीति अपनाने की। ऐसा करके ही पहाड़ों में हो रहे विनाश पर लगाम लगाई जा सकती है। उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदाओं के संकेत करीब चार दशक पहले से ही मिलने लगे थे। भूविज्ञानी पहले ही चेतावनी दे चुके थे कि यहां हिमनदों के पिघलने की दर सामान्य से अधिक है। जाहिर है, जब-जब वे टूटेंगे, कहर ही बरपाएंगे। बढ़ते तापमान और हिमालय के भीतर हो रहे परिवर्तन भी हिमनदों की प्रकृति को तेजी से बदल रहे हैं, जिससे इनके टूटने की घटनाएं तेजी से बढ़ रही हैं। इन खतरों को देखते हुए यहां निर्माण-कार्यों को लेकर अतिरिक्त सतर्कता बरतने की बात कही जाती है, लेकिन ऐसा हो नहीं पा रहा।

पहाड़ों में रहने वाले निवासियों का जीवन बेहद कठिन होता है। मानव-जनित कारण इसे और जोखिम भरा बना देते हैं। ऐसे में, प्राथमिकता यह होनी चाहिए कि आपदाओं के निहाज से जो इलाके संवेदनशील व खतरनाक हैं और जिन इलाकों में आपदाओं के बारे में वैज्ञानिक सचेत करते रहे हैं, वहां निर्माण-कार्यों पर पूरी निगरानी रखी जाए। निस्संदेह, केदारनाथ हादसे से सबक लेकर आपदा प्रबंधन के स्तर पर काफी सुधार देखने को मिला है, लेकिन प्रकृति के साथ संतुलन बनाने की सख्त जरूरत है, न कि उस पर अतिक्रमण करने की। उपभोक्तावादी संस्कृति को प्रोत्साहित करके जिस तरह से वैश्विक तापमान को बढ़ाया गया है, उससे समुद्र और पहाड़ तक अछूते नहीं बचे हैं। इस सोच से अब ऊपर उठना ही होगा कि यहां विकास-कार्य काफी जरूरी हैं, क्योंकि रोजगार की यही जरूरत है। इसकी कीमत आम लोग चुका रहे हैं।

मनोज कुमार अग्रवाल, टिप्पणीकार

दैनिक जागरण

संघर्ष की शक्ति से ही सफलता का संकल्प पूर्ण होता है

भारतीय उद्यमों की क्षमता

सूक्ष्म, लघु और मध्यम श्रेणी के उद्यमों अर्थात एमएसएमई को लेकर एक वेबिनार को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने यह सही कहा कि उद्योगों को अनुसंधान एवं विकास का उपयोग करके ऐसे उत्पादों के निर्माण पर ध्यान देना चाहिए, जिनकी विदेश में मांग है, लेकिन आखिर ऐसा कब होगा? उचित यह होगा कि यह जानने की कोशिश की जाए कि भारतीय उद्योग यह काम क्यों नहीं कर पा रहे हैं? यह जानना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि तमाम अनुकूल परिस्थितियों के साथ देश में सस्ता श्रम भी उपलब्ध है। इस तथ्य को ओझल नहीं किया जाना चाहिए कि मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान के बाद भी चीन विश्व का कारखाना बना हुआ है। हमारे उद्योग चीन का मुकाबला नहीं कर पा रहे हैं। चिंता की बात यह है कि अब कई पूर्वी एशियाई देश विश्व व्यापार में अपनी भागीदारी बढ़ा रहे हैं। एक तरह से अब भारतीय उद्योगों को उनसे मुकाबला करना पड़ रहा है। यह ठीक नहीं। भारतीय उद्योग उस गुणवत्ता के उत्पाद नहीं बना पा रहे हैं, जिनकी विश्व बाजार में मांग हैं। भारतीय उद्योग अपने उत्पादों की गुणवत्ता के मामले में ही नहीं पिछड़ रहे हैं, बल्कि उनकी उत्पादन लागत भी अधिक है।

हमारे उद्योग ऐसे उत्पाद भी नहीं बना पा रहे हैं, जो उच्च तकनीक आधारित हों और जो अपेक्षाकृत महंगे हों। वे अपने उत्पादों को विश्वस्तरीय बना पाने में इसलिए नाकाम हैं, क्योंकि अनुसंधान एवं विकास पर पर्याप्त राशि खर्च नहीं कर रहे हैं। विडंबना यह है कि जो कारोबारी आर्थिक रूप से सक्षम हैं और अनुसंधान एवं विकास पर आसानी से पैसा खर्च कर सकते हैं, वे भी ऐसा करने के लिए आगे नहीं आ पा रहे हैं। चूंकि अधिकांश एमएसएमई अनुसंधान एवं विकास पर अधिक खर्च करने की स्थिति में नहीं, इसलिए सरकार को ऐसा कोई तंत्र बनाना चाहिए, जो एमएसएमई के लिए यह काम करे और उन्हें उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद बनाने में सक्षम बनाए। इससे ही उनके उत्पादों का निर्यात बढ़ेगा और यह कहा जा सकेगा कि भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए वृद्धि इंजन बन गया है। सरकार को ऐसे औद्योगिक क्षेत्र बनाने चाहिए, जहां पर उद्योगों के लिए वह सब कुछ आसानी से उपलब्ध हो, जिसकी उन्हें आवश्यकता है। इस मामले में पूर्वी एशियाई देशों से सीख लेने में संकोच नहीं किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में इसका भी उल्लेख किया कि बजट में सूक्ष्म, लघु और मध्यम श्रेणी के उद्यमों को प्रोत्साहन देने के लिए क्या उपाय किए गए हैं। उन्होंने छह करोड़ से अधिक एमएसएमई के लिए कर्ज वितरण के नए तरीके विकसित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। ऐसा किया ही जाना चाहिए, लेकिन यह समझा जाए तो बेहतर कि इन उद्यमों की समस्या कर्ज लेने में कठिनाई नहीं है।

सपनों की उड़ान

बिहार ने बजट में जिन क्षेत्रों पर फोकस किया है, उनमें से एक है छोटे शहरों से उड़ान को संभव करना। भागलपुर, बाल्मीकिनगर, बीरपुर, मधुबनी, मुंगेर एवं सहरसा में छोटे हवाई जहाज की उड़ान की सुविधा शुरू होने जा रही है। निश्चित तौर पर इससे इन शहरों में विकास का पहिया और तेज गति से दौड़ेगा। स्टार्टअप और उद्योग पनपेंगे। बड़े डाक्टर वहां अपने सेंटर बढ़ाएंगे। महानगरों और विदेश में काम कर रहे लोग अपने बूढ़े मां-बाप से मिलने आ सकेंगे, कम छुट्टियां बाधक नहीं होंगी। इससे पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। क्षमता के बावजूद पर्यटकों की कमी वाले ऐतिहासिक, धार्मिक और खूबसूरत स्थल गुलजार होंगे। इससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा, उनकी आमदनी बढ़ेगी। इसके अलावा पूर्णिया, (अजगैबीनाथ धाम) भागलपुर, राजगीर, रक्सौल में बड़े विमानों के उड़ने लायक हवाई अड्डे बनाने की योजना को भी अमली जामा पहनाया जाना तय हुआ है। अजगैबीनाथ धाम से तो कार्गो उड़ाने की संभावनाएं भी तलाशी जा रही हैं। अगर केंद्र सरकार से इसे हरी झंडी मिल जाती है तो यह न सिर्फ भागलपुर, बल्कि आसपास के जिलों के किसानों के लिए भी वरदान साबित होगा। जर्दालु, कतरनी, मालदीप केला, मखाना को देश-विदेश तक पहुंचाकर किसान अपना मुनाफा बढ़ा पाएंगे। सिल्क की सप्लाई आसान होगी तो बुनकरों के अच्छे दिन आएंगे। अच्छी बात यह है कि गंगा नदी के कारण भागलपुर में जल मार्ग की भी सुविधा है। सड़क, जल मार्ग और एयर कनेक्टिविटी का मेल कृषि, उद्योग समेत सभी क्षेत्रों के विकास में सहायक होगा। इससे राज्य के सर्वांगीण विकास में बड़ी सहायता मिलेगी।

छोटे शहरों से हवाई उड़ान संभव होगी तो विकास की गति और तेज होगी

पश्चिम जाने की ललक के कारण

शंकर शरण

भारत गरीब देश नहीं, लेकिन कुव्यवस्था से बेहाल है। लोग पश्चिमी देश इसलिए जा रहे हैं, क्योंकि वहां समुचित अवसर और सम्मान मिलने की आस रहती है

अव्यक्त राष्ट्रगान

अमेरिका में अवैध रूप से रह रहे या प्रवेश करने वाले भारतीयों को वहां से निकाले जाने पर हमारे देश में तमाम लोगों की भावनाएं आहत हो रही हैं। वहां से लोगों को जिस तरह भेजा जा रहा है, उसका तौर-तरीका चुभने वाला है। इस बीच मूल बिंदु उपेक्षित है कि क्यों भारत से बड़ी संख्या में लोग बाहर जा रहे हैं? आम समझ यही है कि लोग रोजगार के लिए जाते हैं, परंतु संपन्न घरों के युवा भी अमेरिका-यूरोप जाना चाहते हैं। ऐसे लोगों को यहां रोजी-रोटी की खास समस्या नहीं है। वस्तुतः अमेरिका या यूरोप जाने वाले भारतीयों में कम ही लोग वहां कोई नियुक्ति-पत्र लेकर जाते हैं। अधिकांश वहां पढ़ाई के लिए जाते हैं और फिर कोई छोटी-मोटी नौकरी शुरू करते हैं। कई बार यह वहां के नियमों का उल्लंघन करके होता है। कनाडा जाने वाले अधिकांश भारतीयों में तो कोर्स-दाखिला केवल बहाना होता है। वे वहां रह जाने की मंशा से ही जाते हैं। उसी प्रक्रिया का एक रूप यहां देश में भी दिखता है। गांव-गांव में असंख्य माता-पिता बच्चों को पढ़ाते हुए यही चाहते हैं कि वे बाहर निकल कर दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु आदि जगहों पर जाकर काम करें। जबकि दिल्ली-बेंगलुरु में बसे भारतीय अपने बच्चों के लिए यूरोप-अमेरिका जाकर रहने की आकांक्षा रखते हैं और वैसी योजनाएं बनाते हैं। यह पूरी प्रक्रिया पलायन के लिए चयन जैसी है। यह अपने समाज, अपनी व्यवस्था के विरुद्ध सामूहिक अविश्वास का मौन प्रदर्शन है। लोग अपने संसाधन, बुद्धि और परिश्रम लगाकर अपना समाज और देश छोड़कर वहां जाना चाहते हैं, जो अधिक व्यवस्थित और अवसर देने वाला लगता है। यही बिंदु विचारणीय है।

भारत गरीब देश नहीं, मगर कुव्यवस्था से बेहाल है। अन्यथा उच्च मध्यवर्गीय भारतीयों के पास जितना धन है वह कई यूरोपीय देशों में नहीं दिखता, किंतु हमारी व्यवस्थाएं बेहाल हैं, जो हतोत्साहित करती हैं। ये व्यवस्थाएं योग्यता या विवेक का आदर नहीं करतीं। शैक्षिक संस्थाएं या तो खानापूरी या शुद्ध धंधा हैं। सो, प्रतिभाएं रामभरोसे रहती हैं। अन्य क्षेत्रों में भी प्रायः हर अवसर या पद किसी अन्य आधार पर देने-लेने की व्यवस्था स्थापित है। इसीलिए लोग विदेश पलायन कर रहे हैं, जहां समुचित अवसर और सम्मान मिलने की आस हो। स्वतंत्र भारत ने ऐसी व्यवस्था बनाई, जिसमें अपनी कोई कल्पना नहीं है। इसीलिए वह सद्गुण, प्रतिभा और योग्यता से बेपरवाह है। अमेरिका ने ऐसी व्यवस्था बनाई, जो सारी दुनिया से गुण, प्रतिभा और योग्यता का स्वागत करती है। अवसर देती है।

अभी साग आछोश अमेरिका से अवैध भारतीयों को भेजने के तरीके पर दिखाना ऐसा है, मानो उन्हीं भारतीयों की राहत देने के लिए यहां कोई परवाह हो। वस्तुतः हमारा बड़बोलापन और निकम्मापन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिस तेवर से हम शेखी बघरते या दूसरों की निंदा करते हैं, उसी रौ में हर जिम्मेदारी किसी अन्य पर डालकर अपना पल्ला झाड़ते हैं। सुरक्षा से लेकर शिक्षा, चिकित्सा, दैनिक प्रशासन और न्याय व्यवस्था तक हर मामले में पार्टीबाजी, पर-दोषारोपण और लफ्फाजी हमारा प्रमुख विमर्श है। यह भारत में लंबे समय से चल रहा है। दूसरों को दोष देकर अपने को स्वतः पीड़ित, सही या श्रेष्ठ समझना। इसमें आसानी है। इसके लिए किसी ठोस परीक्षण का श्रम नहीं करना पड़ता। इस प्रक्रिया में द्वेष-निंदा-आरामपसंदगी की ऐसी तिहरी माया है कि हम सामने दिखते हाथी जैसा बड़ा सच भी अनदेखा कर देते हैं।

अपने विमर्श में नियमित रूप से हम जो दावा करते हैं, वास्तविक व्यवहार उसके धुर विपरीत दिखाता है। हमारा संपूर्ण जीवन नेताओं से लेकर बुद्धिजीवियों, छात्रों और मैनेजरों तक यानी नीति, उद्योग, शिक्षा, कला, रहन-सहन, भाव-भंगिमा, खेलकूद, मनोरंजन आदि तक मुख्यतः विदेशी विचारों, वस्तुओं, भाषा, शैली, माडल आदि से प्रेरित संचालित है। क्या यह साफ नहीं दिखाता कि हम अमेरिकी-यूरोपीय चीजों, विचारों, उपायों, पुस्तकों, फिल्म, संगीत और खेल आदि को भी श्रेष्ठतर मानते हैं? उसके लिए अपनी हर चीज, ज्ञान, दर्शन, यम-नियम, भाषा-संस्कृति यहां तक कि सद्य के लिए देश छोड़कर अमेरिका-यूरोप में बस भी जाना चाहते हैं? पूरी बुद्धि, परिश्रम और धन लगाकर बच्चों को वहां पहुंचाना और 'सेटल' करना चाहते हैं। यह व्यावहारिक बिंदु है। एक छोटा बच्चा भी सामने उपलब्ध दो चीजों में बेहतर उठाता है। अतः सत्य और व्यवहार की कसौटी बनाना ही उचित है। तब दिखेगा कि अधिकांश भारतीय अमेरिका-यूरोप को अपनाने के लिए तैयार बैठे हैं, क्योंकि हम अपना कुछ भी तुलनीय नहीं बना सके हैं।

प्रश्न है कि यदि हमारे ऊपर भेदभाव, उपेक्षा, उत्पीड़न आदि कोई स्वदेशी करे-तो क्या वह मंजूर है? जबकि कोई विदेशी उसके विपरीत व्यवहार करे तो हमें नामंजूर होगा? इसी का उत्तर हमारे लाखों-लोग अवसर मिलते ही विदेश पलायन को प्राथमिकता के रूप में देते हैं। देश त्याग कर यूरोप, अमेरिका या आस्ट्रेलिया में जा बसने की उत्कट प्रक्रिया यही है। यह उनकी संस्कृति, उनकी शिक्षा, उनका शासन खुशी-खुशी स्वीकार करने के सिवा और क्या है? इसके लिए वे कष्ट भी उठाते हैं। यानी न केवल वह संस्कृति और शासन बेहतर है, बल्कि उसमें प्रजा बनने के लिए लंबी तपस्या करने, वहां नागरिकता-विहीन रहकर भी जीवन लगाने के लिए तमाम भारतीय तैयार हैं। बिना किसी आमंत्रण या दबाव के। इसका कारण मात्र लोभ को बताना उन भारतीयों का अपमान करना है, जिन्हें हम पहले तो उचित अवसर या स्थान नहीं देते, फिर उनकी चाह और परिश्रम का मजाक उड़ाते हैं। तथ्यों और प्रमाणों से बेपरवाह। अपवाद छोड़कर हमारे बुद्धिजीवियों में नीति-निर्माण और सुव्यवस्था की समझ तक नहीं रही है। वे नारेबाजी के भरोसे रहते हैं। तब कौन देश ऐसे लोगों की भीड़ चाहेगा? यह स्वाभाविक है कि अमेरिकी प्रशासन भी केवल सुयोग्य भारतीयों की रखना चाहे और बाकी को कड़ाई से बाहर करे। हमें अपना घर सुधारने की चिंता होनी चाहिए। दूसरों की निंदा करना आत्महीनता है।

(लेखक राजनीतिशास्त्र के प्राध्यापक एवं वरिष्ठ स्तंभकार हैं)

response@jagran.com

आसान नहीं आनलाइन गंदगी से निपटना

राजीव सचान

चूंकि आनलाइन प्लेटफार्मों पर फूहड़-अश्लील सामग्री देखी जा रही है, इसीलिए वह परोसी भी जा रही है

आनलाइन फूहड़ता पर सख्त हुआ सुप्रीम कोर्ट। फाइल

कामेडियन समय रैना के यूट्यूब चैनल पर इंडियाज गाट लेटेंट कार्यक्रम के दौरान एक अन्य यूट्यूबर रणवीर इलाहाबादिया की ओर से की गई बेहद भौंडी टिप्पणी का मामला फिर से सुप्रीम कोर्ट में सुना गया। सुप्रीम कोर्ट ने रणवीर इलाहाबादिया को अपना पोडकास्ट शुरू करने की अनुमति तो दे दी, लेकिन उसने समय रैना को खूब खरी-खोटी सुनाई, क्योंकि न्यायाधीशों को इससे अवगत कराया गया कि रैना ने अपने कनाडा दौरे के समय शीर्ष अदालत की कार्यवाही पर तंज कसा है। इस मामले की जांच मुंबई और गुवाहाटी पुलिस भी कर रही है। कहना कठिन है कि वह किस नतीजे पर पहुंचेगी। यह कहना भी कठिन है कि सुप्रीम कोर्ट इस मामले में क्या करेगा, लेकिन फिलहाल यह दिख रहा है कि उसने सख्त रवैया अपना रखा है। उसने सरकार से फिर कहा कि वह यूट्यूब चैनलों और अन्य आनलाइन प्लेटफार्मों की सामग्री का नियमन करे। वह इस मसले पर कितना गंभीर है, इसका पता इससे चलता है कि उसने सरकार से इसका मसौदा तैयार करने को कहा। यदि सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार सरकार इस दिशा में कोई पहल करती है तो इसके खिलाफ यह कहते हुए शोर उठ सकता है कि इससे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रभावित हो सकती है।

वैसे तो सुप्रीम कोर्ट ने यह कहा है कि नियमन के उपाय सेंसरशिप जैसे नहीं लगने चाहिए, लेकिन इसके भरे-पूरे आसार हैं कि इस दिशा में सरकार की किसी भी पहल पर ऐसे सवाल अवश्य उठेंगे कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को बाधित किया जा रहा है। सब जानते हैं कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता असीमित नहीं होती, लेकिन सीमा का उल्लंघन कब होता है, यह तय करना सदैव मुश्किल हो जाता है। क्या आपत्तिजनक है और क्या नहीं, इसका निर्धारण करना इसलिए आसान नहीं, क्योंकि जो किसी के लिए फूहड़ होता है, वह अन्य के लिए हास्य। जो किसी के लिए आपत्तिजनक या अपमानजनक होता है, वह अन्य के लिए खरी बात। इसी तरह जो किसी के लिए अभद्र-अश्लील होता है, वह अन्य के लिए 'कूल।' यह किसी से छिपा नहीं कि समय रैना, रणवीर इलाहाबादिया और उनके साथियों के खिलाफ कार्रवाई का अनेक लोग विरोध भी कर रहे हैं। उनकी दलील है कि आखिर फूहड़ता के लिए किसी को जेल में कैसे डाला जा सकता है? कुछ यह कह रहे हैं कि इस मामले में पुलिस एवं अदालत अपना समय जाया कर रही हैं और आखिर रैना और इलाहाबादिया ने लोगों को अपना शो देखने के लिए बुलाया तो था नहीं। कुछ लोग यह भी पूछ रहे हैं कि क्या रैना, इलाहाबादिया आदि को जेल भेज देने से गरीबी, बेरोजगारी जैसी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। उनके कहने का यह आशय है कि पुलिस अथवा अदालत को इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहिए। क्या वाकई नहीं पड़ना चाहिए? इसका भी कोई सीधा जवाब नहीं, लेकिन इतना तो तय है कि अनेक कामेडियन, इम्फ्लुएंसर जैसी आनलाइन फूहड़ता अश्लीलता फैला रहे हैं, उसकी अनदेखी करने से भी कोई समस्या सुलझने वाली नहीं। इसका यह भी मतलब नहीं कि रैना, इलाहाबादिया आदि को जेल में डाल देना समस्या का सही समाधान है।

जो लोग यह ठान रहे हैं कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर भौंडी-ओछी आनलाइन सामग्री की अनदेखी कर दी जाए, उनकी तरफदारी करना भी कठिन है, क्योंकि अनेक तथाकथित कामेडियन और इम्फ्लुएंसर आनलाइन प्लेटफार्मों पर जमकर गंदगी परोस रहे हैं। ऐसा करके वे पैसा तो बना ही रहे हैं, बल्कि प्रचार और प्रसिद्धि भी पा रहे हैं। वे टीवी शो में प्रतिभागी अथवा अतिथि के तौर पर बुलाए जाने लगे हैं। समय रैना कुछ समय पहले ही कौन बनेगा करोड़पति में प्रकट हुए थे। कोई भी समझ सकता है कि उन्हें इसीलिए बुलाया गया, ताकि कौन बनेगा करोड़पति के दर्शक बढ़ें। भले ही ऐसे लोग इम्फ्लुएंसर कहे जाते हों, लेकिन यह समझना कठिन है कि वे लोगों को प्रभावित करते हैं या दुष्प्रभावित? यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ट्विटर (एक्स) जैसे प्लेटफार्मों पर फूहड़, अश्लील कंटेट की भरमार है। पोर्नोग्राफी को लेकर हर देश ने भले ही अपने-अपने नियम-कानून बना रखे हों, लेकिन आनलाइन प्लेटफार्मों ने उन्हें बेमानी साबित कर दिया है। यह निरा झूठ है कि आनलाइन प्लेटफार्म फूहड़ता एवं अश्लीलता को लेकर संवेदनशील हैं। वे ऐसा दावा भले करते हों, लेकिन सच यही है कि उनकी कोशिश यही रहती है कि ज्यादा से ज्यादा लोग इस तरह की सामग्री देखें। यह इसीलिए है, क्योंकि इन प्लेटफार्मों ने इसकी खुली छूट दे रखी है। ये प्लेटफार्म यह कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं कि वे तो माध्यम भर हैं यानी उनका काम पोस्टमैन सरीखा है। इसी कारण इन प्लेटफार्मों का इस्तेमाल नफरती और अराजक तत्वों के साथ आतंकी भी करते रहते हैं।

यह कहना गलत नहीं होगा कि आनलाइन प्लेटफार्म बेलगाम हैं और वे किसी नियम-कानून की परवाह नहीं करते। इसी कारण वे फेक न्यूज का सबसे बड़ा जरिया बने हुए हैं। अब जब इसकी प्रतीक्षा की जा रही है कि फूहड़ता फैलाने के मामले में सरकार और सुप्रीम कोर्ट क्या करता है, तब यह भी देखना होगा कि समाज क्या करता है, क्योंकि आनलाइन प्लेटफार्मों पर जैसी सामग्री ज्यादा देखी जाती है, वैसी ही अधिक प्रसारित होती है। चूंकि फूहड़ सामग्री देखी जा रही है, इसीलिए वह परोसी भी जा रही है।

(लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडिटर हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

तृष्णा

जीवन संचालन के लिए कुछ वस्तुओं का उपभोग आवश्यक होता है। हालांकि जब उपभोग का यह स्तर अनियंत्रित होकर मनुष्य को अपना दास बनाने लगे और लालसा का रूप धारण कर ले तब उसे तृष्णा कहते हैं। तृष्णा केवल भौतिक वस्तुओं की इच्छा नहीं होती, बल्कि यह मन की एक अंतहीन भूख होती है, जो कभी तृप्त नहीं होती। यह एक ऐसी अग्नि है, जो जितना ईंधन पाती है, उतनी ही भड़कती जाती है। प्रारंभ में तृष्णा सुखद लगती है। जब मन में कोई लालसा जन्म लेती है, तो वह व्यक्ति को नए सपनों, नए लक्ष्यों और एक अदृभुत ऊर्जा से भर देती है। मनुष्य उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संकल्पबद्ध हो जाता है, परंतु समस्या तब उत्पन्न होती है, जब यह लालसा मर्यादा का अतिक्रमण कर जाती है। तृष्णा की यह अनियंत्रित प्रवृत्ति मनुष्य को आत्मिक शांति से वंचित कर देती है। वह केवल बाह्य सुखों की खोज में भटकता रहता है और अपने अंतर्मन की शुद्धता को खो देता है। जब इच्छाएं बेलगाम हो जाती हैं तो वे लोभ, मोह, क्रोध, ईर्ष्या और द्वेष को जन्म देती हैं। यही विषम-वासनाएं व्यक्ति को अधर्म और अनैतिकता की ओर ले जाती हैं।

प्राचीन ग्रंथों में भी तृष्णा को दुखों का मूल कारण बताया गया है। गौतम बुद्ध ने कहा था, 'तृष्णा ही समस्त दुखों की जड़ है।' दुर्योधन की असीम तृष्णा ने समस्त कुरुवंश का विनाश कर दिया। रावण की तृष्णा ने उसे सर्वशक्तिमान होने के भ्रम में डाल दिया, जिसके कारण उसका अंत हो गया। यदि मनुष्य संतोष का गुण विकसित कर ले तो तृष्णा की ज्वाला को शांत किया जा सकता है। संयम, त्याग और आत्मनियंत्रण से ही मनुष्य वास्तविक सुख और शांति प्राप्त कर सकता है। सत्य, प्रेम और करुणा की राह पर चलकर ही वह अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। अंततः, जो तृष्णा पर विजय प्राप्त कर लेता है, वही वास्तव में मुक्त हो जाता है।

नृपेंद्र अभिषेक नृप

समुद्र में स्थायी पैठ बनाता प्लास्टिक

सुधीर कुमार

समुद्री प्रदूषण में प्लास्टिक कचरे की हिस्सेदारी 80 प्रतिशत तक हो गई है। महासागरों में जमा हो रहा यह प्लास्टिक एक वैश्विक संकट बनता जा रहा है

संयुक्त राष्ट्र ने चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि प्लास्टिक प्रदूषण की मौजूदा स्थिति यथावत बनी रही, तो 2050 तक समुद्र में प्लास्टिक कचरे का भार वहां मौजूद मछलियों से अधिक हो जाएगा। दरअसल हर साल लगभग आठ से 10 मिलियन मीट्रिक टन प्लास्टिक समुद्र में समा जाता है। यह चिंताजनक है कि समुद्री प्रदूषण में प्लास्टिक कचरे की हिस्सेदारी 80 प्रतिशत तक हो गई है।

आज से लगभग डेढ़ सौ साल पहले प्लास्टिक अस्तित्व में भी नहीं था, लेकिन अब यह न केवल भूमि पर सर्वव्यापी हो चुका है, बल्कि समुद्र का स्थायी निवासी भी बन गया है। अगर समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाली पीढ़ियों को प्लास्टिक से भरा समुद्र ही विरासत में मिलेगा, जहां जीवन से अधिक कचरा होगा। महासागरों और समुद्री तटों पर जमा हो रहा प्लास्टिक एक वैश्विक संकट बनता जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण एजेंसी के अनुसार, समुद्र में प्लास्टिक और माइक्रोप्लास्टिक के लगभग 50-75 ट्रिलियन टुकड़े हैं। समुद्र में प्लास्टिक प्रदूषण का समुद्री जीवन, पारिस्थितिकी तंत्र और खाद्य श्रृंखला पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। धरती पर लोगों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला प्लास्टिक और उससे बनी वस्तुओं के उचित निपटान का अभाव समुद्री जीवों के लिए मौत का कारण बनता जा रहा है। समुद्र में पहुंचने वाले प्लास्टिक कचरे को कछुओं, मछलियों और अन्य जलीय जीवों द्वारा गलती से भोजन समझकर निगल लिया जाता है, जिससे उनके उलझने, कटने, संक्रमित होने और दम घुटने का खतरा बढ़ जाता है। चिंताजनक यह है कि समुद्र में प्लास्टिक की उपस्थिति से प्रभावित प्रजातियों में से 17 प्रतिशत प्रजातियां अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ की संकटग्रस्त प्रजातियों की लाल सूची में शामिल हैं। प्लास्टिक समुद्री जीवों के लिए खतरा तो है ही, यह इन जीवों को खाने वाले मनुष्यों तक भी आसानी से पहुंच जा रहा है। विज्ञानियों का कहना है कि मानव उपभोग के लिए पकड़ी जाने वाली हरेक तीन मछलियों में एक में माइक्रोप्लास्टिक की उपस्थिति होती है। जिस प्लास्टिक को हम इस्तेमाल के उपरांत फेंक देते हैं, वह पुनः रक्सन, पेयजल और भोज्य पदार्थों के माध्यम से हमारे शरीर में पहुंच जाता है। दुर्भाग्य से प्लास्टिक इतना टिकाऊ है कि अब तक बनाया गया हर प्लास्टिक का टुकड़ा अभी भी मौजूद है।

प्लास्टिक मानव जीवन के लिए वरदान साबित हुआ, लेकिन यह अब अभिशाप बन चुका है। प्लास्टिक का उत्पादन, विपणन और उपयोग जितना सरल है, उसके पूरी तरह विनष्ट होने की प्रक्रिया उतनी ही जटिल है। एक बार अस्तित्व में आने के बाद प्लास्टिक सैकड़ों वर्ष तक नष्ट नहीं होता है। अतः इसके प्रयोग से दूरी बनाना आवश्यक है।

(लेखक बीएचयू में शोधार्थी हैं)

मेलबाक्स

भारत की भूमिका का हो रहा विस्तार

'बढ़ रहा भारत का अंतरराष्ट्रीय कद' शीर्षक से लिखे आलेख में विवेक ठाकुर ने भारत की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा, कूटनीतिक सफलता, वैश्विक साझेदारी और आत्मनिर्भरता को रेखांकित किया है। इसमें प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में आर्थिक, सामरिक और रणनीतिक क्षेत्रों में देश की भूमिका को प्रमुखता दी गई है। भारत वैदिक संस्कृति का आलोकपुंज, आज विश्वमंच पर अपनी अद्वितीय गरिमा से प्रकाशमान हो रहा है। युगों से ज्ञान-विज्ञान, दर्शन और सहिष्णुता के आदर्शों को संजोए हुए यह राष्ट्र वर्तमान में अपनी नीति-नैतिकता एवं वैश्विक दृष्टिकोण के माध्यम से नवयुग का सूत्रधार कर रहा है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत ने अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में स्वदेशी स्वाभिमान के साथ संतुलन एवं समरसता का परिचय दिया है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सिद्धांत पर आधारित भारत की विदेश नीति ने संपूर्ण विश्व को शांति, सहयोग एवं समृद्धि की राह दिखाने का संकल्प लिया है। ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन, व्यापारिक सहमति और सुरक्षा जैसे विषयों पर भारत की निर्णायक भूमिका उसकी बौद्धिक क्षमता एवं नैतिक प्रतिबद्धता का साक्षात्कार कराती है। वैश्विक मंच पर भारत की प्रतिष्ठा केवल आर्थिक समृद्धि तक सीमित नहीं है, अपितु योग, आयुर्वेद और आध्यात्मिक चिंतन के माध्यम से मानव कल्याण की पथप्रदर्शक भूमिका निभा रही है। स्वदेशी रक्षा उत्पादन, डिजिटल क्रांति और चंद्रयान अभियान जैसे प्रकल्प आत्मनिर्भर भारत के स्वप्न को साकार करने की ओर अग्रसर हैं। भारत और अमेरिका के संबंधों में प्रगाढ़ता, यूरोपीय संघ के साथ ऊर्जा एवं व्यापारिक समझौते तथा वैश्विक दक्षिण देशों के प्रति सहृदय दृष्टिकोण भारत की संतुलित कूटनीति के द्योतक हैं। यह राष्ट्र केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति तक सीमित नहीं, अपितु संपूर्ण मानवता के उत्थान का संवाहक है। आधुनिक भारत का यह उत्कर्ष न केवल आर्थिक एवं तकनीकी प्रगति का परिणाम है, बल्कि सहिष्णुता और धर्मनिष्ठा जैसे सनातन मूल्यों की पुनर्स्थापना है। यह नवजागरण भारत को पुनः विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित करने की ओर अग्रसर है।

awanishg30@gmail.com

संकीर्ण मानसिकता

जब महाकुंभ का पवित्र स्नान हो रहा था, तब वहां से कुछ वीडियो लीक होने की बातें सामने आई थीं। इस मामले से यह भी बात सामने आई कि किस तरह कुछ लोग कानून और तकनीक का दुरुपयोग करते हैं। अगर महाकुंभ में सरकार और प्रशासन ने मोबाइल ले जाने की इजाजत दे ही दी थी, तो इन संकीर्ण मानसिकता वाले लोगों को महिलाओं के वीडियो बनाने की आखिर जरूरत ही क्या थी? ऐसे लोगों ने तकनीक का भी दुरुपयोग किया। ऐसे आयोजनों में सरकार और प्रशासन को ड्रोन से नजर रखनी चाहिए। आजकल इंटरनेट बच्चों, किशोरों या नौजवानों को पथभ्रष्ट कर रहा। आज जिस तरह इंटरनेट पर अश्लीलता, अपराध या अन्य गलत चीजों को बढ़ावा दिया जा रहा है, उसके लिए तो यह जरूरी हो गया है कि मनोरंजन के हर साधन को सेंसर के अधीन लाया जाए। आपत्तिजनक सामग्री को हर हाल में रोका जाना चाहिए।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

विकास का मंत्र

'बढ़ रहा भारत का अंतरराष्ट्रीय कद' शीर्षक से लिखे आलेख में विवेक ठाकुर ने घरेलू और बाह्य मोर्चे पर मोदी सरकार की उपलब्धियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इस कारण भारत का मान बढ़ा है। विश्व के शक्तिशाली देश भी भारत की ओर उम्मीद भरी नजर से देख रहे हैं। केवल उपभोक्ता एवं बाजार के रूप में ही नहीं, अपितु उत्पादक, निर्यातक, वैश्विक व्यवस्था के नियमन में प्रमुख भूमिका के तौर भी भारत को देखना शुरू कर दिया है। एआइ के मामले में हमारे साथ फ्रांस जैसे विकसित देश मिलकर काम करने को तैयार हैं। रक्षा क्षेत्र में भारत अब आयातक नहीं रहा, निर्यातक बन रहा है। हमारी साख बढ़ रही है।

मुकेश कुमार मनन, पटना

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें:
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: response@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व. नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****